भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 9 | **फरवरी-मार्च** 2008 | **अंक** 2-3

सत्यम् शिवम् औ सुन्दरम् का गान पुस्तकें हैं, साहित्य की समझ का अभियान पुस्तकें हैं। संघर्षरत मनुज का यशगान पुस्तकें हैं। अंधे चलन में सूर्य का सन्धान पुस्तकें हैं।

—आचार्य विष्णु विराट चतुर्वेदी
बड़ौदा विश्वविद्यालय, बड़ौदा

किताब

खरीदी किताब
बनाती है अमीर
खरीददार को
क्योंकि
हो जाती है वह
उसकी मिल्कीयत
सजी रहती है वह
उसकी अलमारी में
हटना नहीं पड़ता है
वापस होने को

—डॉ० रमेशकुमार त्रिपाठी, वाराणसी

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की मूंछों में छिपी मुस्कराहट 'शर्बते-दीदार'

आचार्य शुक्ल, लाला भगवानदीन और बाबू रामचन्द्र वर्मा एक बार जेठ महीने की भयंकर गर्मी में लखनऊ के अमीनाबाद पार्क में एक शर्बतवाली की दुकान पर पहुँचे। शर्बत बनाने का काम एक बदसूरत और अधेड़ उम्र की औरत के जिम्मे था। शर्बत का दाम भी उसने ज्यादा माँगा। लालाजी और वर्माजी इतना मूल्य देने में संकोच कर रहे थे।

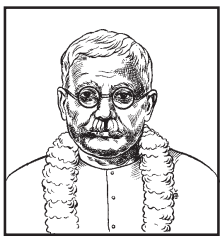

इसपर आचार्य शुक्ल ने मूँछों में मुस्कराते हुए कहा—''दे दीजिये उसे पैसे। इसमें **शर्बते-दीदार** के पैसे भी तो शामिल हैं।''

अनपढ़ औरत तो कुछ समझी नहीं, किन्तु लालाजी और वर्माजी बेतहाशा हँस पड़े।

'साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य'
सम्पा० : प्रो० भवानीलाल भारतीय, से

पाठकों को पुस्तकों से जोड़ने का प्रयास

विश्व पुस्तक मेला विगत 2 फरवरी को दिल्ली के प्रगति मैदान में प्रारम्भ हुआ। 9 दिनों तक चले इस 18वें विश्व पुस्तक मेले में भारत के अलावा कुल 22 देशों के 1300 से अधिक प्रकाशकों ने भाग लिया। यह पाठकों को पुस्तकों से जोड़ने का एक उत्सव था।

17वें विश्व पुस्तक मेले जो कि 27 जनवरी से 4 फरवरी 2006 तक आयोजित किया गया था, में आयोजकों की कुछ भूलों की ओर 'भारतीय वाङ्मय' ने अपने मार्च-अप्रैल 2006 अंक द्वारा ध्यान आकृष्ट किया था, से कुछ भूलों को दोहराया बार पुस्तक मेले की थी किन्तु इस बार मेले की रचना की गयी असुविधा नहीं थी। इसी गणतंत्र दिवस अर्थात् 26 दूर रखने हेतु भी सुझाव आने वाले प्रतिभागियों व न हो। प्रसन्नता है कि इस रखा गया।

सरहद पार भी लोकप्रिय हैं हिन्दी लेखक!

विश्व पुस्तक मेले में आये पाकिस्तान के प्रकाशकों का कहना है—''पाकिस्तान में लोग भले ही हिन्दी पढ़ना नहीं जानते लेकिन हिन्दी के लेखक पाकिस्तान में खूब पढ़े जाते हैं। हिन्दी लेखकों की उर्दू में अनुवादित पुस्तकें वहाँ की नई पीढ़ी चाव से पढ़ती है। किताबों के लिए सरहदें कहाँ होती हैं। पाकिस्तान में कुर्तुल चएन हैदर भी पढ़ी जाती हैं और कृश्न चन्दर भी। मुंशी प्रेमचंद, रघुपति सहाय, फिराक गोरखपुरी, निर्मल वर्मा, पाकिस्तान में वैसे ही पढ़े जा रहे हैं जितनी शिद्दत से भारत में सआदत हसन मन्टो, फैज अहमद फैज, अल्लामा इकबाल, इन्तजार हुसैन नई पीढ़ी के शायर व अफसाना निगार (कथाकार) लोकप्रिय हैं।''

इस 18वें विश्व *विख्यात कन्नड़ लेखक* किया। इस बार 'अतिथि कण्ट्री) का सम्मान रूस पुस्तक मेले में दोस्तोव्स्की आदि उन की कृतियाँ उपलब्ध थीं

प्रसन्नता है कि इस बार उनमें नहीं गया, जैसे—पिछली रचना भूल-भुलैया वाली क्रमबद्ध तरीके से पुस्तक थी जिससे पूर्व मेले वाली प्रकार पुस्तक मेले को जनवरी से पर्याप्त अवधि दिया गया था ताकि बाहर से पाठकों को कोई असुविधा बार इस बिन्दु का भी ध्यान

पुस्तक मेले का उद्घाटन *यू०आर० अनंतमूर्ति* ने देश' (गेस्ट ऑफ ऑनर को दिया गया। फलस्वरूप तालस्तॉय, चेखव, तुर्गनेव, तमाम रूसी साहित्यकारों जिन्हें सत्तर और अस्सी के दशक में हाथों में लेकर घूमना बड़े गौरव की बात समझी जाती थी। इस बार पुस्तक मेले में अलग से एक रूसी मण्डप सजाया गया जिसमें रूस से आये 80 से अधिक प्रकाशकों व 30 से अधिक लेखक/साहित्यकारों ने भाग लिया। मेले की प्रमुख विशेषता राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को केन्द्र में रखते हुए पुस्तक-प्रदर्शनी 'शब्दों में गाँधी' थी। जिसमें विश्व की विभिन्न भाषाओं में अनेकानेक प्रकाशकों की गाँधीजी से सम्बन्धित—गाँधीजी द्वारा और गाँधीजी पर, ढेरों पुस्तकें प्रदर्शित की गयीं। फिल्म डिवीजन के सहयोग से गाँधीजी के 60 दुर्लभ वृत्तचित्रों ने इस प्रदर्शनी को सार्थकता प्रदान की।

विश्व पुस्तक मेले की भव्यता दिनों दिन बढ़ती जा रही है। लेकिन इस 18वें विश्व पुस्तक मेले में अन्तिम दिन की पूर्व संध्या को छोड़ दें तो पुस्तक प्रेमियों की संख्या अपेक्षाकृत कम रही। इसके सम्भवत: दो कारण थे। एक तो कड़ाके की ठंड और मेले में प्रवेश शुल्क में भारी

शेष पृष्ठ 2 पर

विश्वविद्यालय प्रकाशन की प्रस्तुति

विश्व पुस्तक मेला–2008 के अवसर पर

श्री राजनाथ सिंह (भाजपा अध्यक्ष) द्वारा

प्रख्यात विद्वान् एवं राष्ट्रवादी चिंतक श्री हृदयनारायण दीक्षित कृत

'सांस्कृतिक अनुभूति : राजनीतिक प्रतीति' व 'भारतीय समाज : राजनीतिक संक्रमण' पुस्तकों का लोकार्पण

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष **राजनाथ सिंह** ने कहा कि भारत आज तक अपनी सांस्कृतिक ऊर्जा एवं एकता से एक राष्ट्र बना रहा जबकि रूस जैसे देश केवल राजनीति के कारण 15 भागों में बँट गये। केवल जाति, मजहब व क्षेत्र के आधार पर आधारित राजनीति देश की एकता को अखण्डित रखने में सक्षम नहीं है। सांस्कृतिक प्रतिबद्धता के कारण ही भारत पाँच सौ रियासतों के बावजूद एक राष्ट्र बना

रहा। श्री राजनाथ सिंह ने यह विचार प्रख्यात स्तम्भकार, लेखक, विचारक व चिंतक **श्री हृदयनारायण दीक्षित** द्वारा लिखित पुस्तकों '**सांस्कृतिक अनुभूति : राजनीतिक प्रतीति**' व '**भारतीय समाज : राजनीतिक संक्रमण**' का विमोचन करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि पुस्तकों की विषयवस्तु वर्तमान समय की मौजूदा समस्याओं को उजागर करने वाली है। भाजपा अध्यक्ष ने श्री दीक्षितजी के बेलौस लेखन की सराहना करते हुए कहा कि वे राजनीति में होते हुए भी अध्यवसायी बने रहे। वे एक राजनीतिज्ञ होते हुए भी अपनी लेखनी के धनी हैं। कार्ल मार्क्स के अतिरिक्त वेदों का भी उन्होंने गहन अध्ययन किया है। तथ्यपूर्ण लेखों की ये पुस्तकें आज के सच को प्रतिपादित करती हैं। श्री दीक्षित की ये कृतियाँ भिन्न-भिन्न विचारधाराओं की अभिव्यक्ति हैं। उन्हें पढ़कर लगता है कि कहीं वे समाजवादी विचारधारा से प्रभावित हैं तो कहीं वह अर्थशास्त्री होने का अहसास दिलाते हैं। श्री राजनाथ सिंह ने इस अवसर पर कहा कि लेखक गाँव का है तो विमोचनकर्ता भी गाँव का है।

श्री दीक्षितजी ने कहा कि लेखन के बारे में निष्पक्षता की बातें चलती हैं लेकिन वैचारिक प्रतिबद्धता के अभाव में अच्छा लेखन नहीं हो सकता। आज 'हिन्दुत्व', 'अल्पसंख्यकवाद', 'राष्ट्रगीत', 'राष्ट्रीयता' व 'धर्मनिरपेक्षता' आदि शब्द जब विवाद का कारण बने हैं तो ऐसे हालात में राष्ट्रचिंतन अत्यन्त आवश्यक हो गया है। लोकार्पित पुस्तकों में ज्वलन्त राष्ट्रीय प्रश्नों पर निष्पक्ष चर्चा की गई है। राष्ट्रीय अस्मिता को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु वैचारिक यज्ञ में आहुति डालने का प्रयास है यह पुस्तकें! इस अवसर पर कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल **श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी,** प्रसिद्ध प्रकाशक **श्री सुखपाल गुप्त**, भाजपा महासचिव **श्री विनय कटियार**, प्रमुख साहित्यकार, राजनीतिज्ञ एवं भारी संख्या में पत्रकार व मीडियाकर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम का सुव्यवस्थित संचालन राष्ट्रीय सचिव **श्री प्रभात झा जी** ने किया एवं धन्यवाद प्रकाश विश्वविद्यालय प्रकाशन के **पराग मोदी** ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

वृद्धि। वस्तुत: तो प्रवेश नि:शुल्क होना चाहिए था लेकिन हुआ इसके विपरीत। यह कदम पुस्तकों को पाठकों के करीब ले जाने के प्रयास को खण्डित करता है।

मेले में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रोचक प्रस्तुतियाँ भी हुईं और विचार गोष्ठियाँ भी। सद्य: प्रकाशित पुस्तकों का लोकार्पण हुआ और कई ख्यातिलब्ध लेखकों ने सहभागिता भी की। पाठकों का लगातार विस्तार हो रहा है इस पर तो सहमति हुई लेकिन स्तरीय पुस्तकों के पाठक कमतर हो रहे हैं इस पर चिंता भी प्रकट की गई।

मेले में बड़ी संख्या में आए पुस्तक प्रेमियों को विश्व साहित्य से परिचित होने का अवसर मिला। पाठक यह जान सके कि विभिन्न देशों में किस तरह का साहित्य रचा जा रहा है और यह भी कि साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव किस रूप में पड़ रहा है। किस तरह की पुस्तकें ज्यादा प्रकाशित की जा रही हैं। बहुत से प्रकाशकों ने प्रकाशन की नीति बदल दी है। नई पीढ़ी की रुचि में आए बदलाव के मुताबिक पुस्तक-व्यवसाय में भी गुणात्मक परिवर्तन आया है।

पुस्तकों को इलेक्ट्रानिक चैनलों और इण्टरनेट से जबर्दस्त चुनौती मिल रही है। यह समस्या विश्वव्यापी है। इसे कम किया जा सकता है नई पीढ़ी में गम्भीर पुस्तकों के प्रति अधिक से अधिक रुचि जागृत करके। यह तभी सम्भव है जब पुस्तकों को पाठकों और पाठकों को पुस्तकों के करीब ले जाने का सतत अभियान चले। विश्व पुस्तक मेले को इसी अभियान का अंग माना जा सकता है। देश के चार राष्ट्रीय पुस्तकालयों को प्रकाशक अपने प्रकाशन नियमित रूप से भेजते हैं, उनके सहयोग से इस प्रकार की त्रैमासिकी प्रकाशित होनी चाहिए जिससे देश में प्रकाशित पुस्तकों की जानकारी अध्येताओं को होती रहे। इससे पठनीयता बढ़ेगी और देश के बौद्धिक स्तर में भी सुधार होगा। नेशनल बुक ट्रस्ट, जो कि पठनीयता के विकास की दिशा में सतत प्रयासरत है, से इस दिशा में भी महत्त्वपूर्ण पहल एवं प्रयास करने की अपेक्षा है। **—परागकुमार मोदी**

साखी, हिंदी की

दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै

लक्ष्मीधर मालवीय, *क्योतो, जापान*

भारतीय वाङ्मय के चिरंजीव संपादक ने पत्रिका में प्रकाशनार्थ एक उपयोगी लेख भेजने का मुझे आदेश किया है—या कि कौन जाने, सहज भोलेपन में, *आ बैल मुझे मार* का न्योता दे बैठे! उन्हें हिंदी में 'मिशन' दिखलाई देता है और ऐसा क्यों न हो, युवजन तो भरी दोपहर में भी स्वप्न देख लेते हैं! पर मैं जिस मनोदेश में रहता हूँ वहाँ इस कोटि के शब्दों का अस्तित्व ही नहीं! फलत: हिंदी, भाषा हो कि साहित्य, मुझे चम्मच, बॉलपेन, घड़ी जैसी यथार्थ वस्तु लगते हैं, जो मेरे लिए इन्हें दूसरी यथार्थ वस्तुओं से जोड़ते हैं। चम्मच दूध कॉफ़ी में चीनी चलाने को, बॉलपेन बैंक या डाकघर में फ़ार्म भरने के लिए, टिक-टिक करती हुई घड़ी यह चेतावनी देने को कि, **आयुष: क्षण एकोऽपि न लभ्य: स्वर्णकोटिभि:!**, आदि।

यहाँ से हिंदी और हिंदी प्रकाशन की ओर देखने पर पाता हूँ कि इनके अस्तित्व मात्र के लिए घोर घातक हैं, प्रकाशकीय रीति-नीति, हिंदी के लेखक तथा आज तो स्वयं हिंदी भाषा ही!

प्रकाशक व्यवसायी है, ठठेर, बजाज या कुँजड़े की भाँति; ग्राहक के हाथ अपना-अपना माल बेचकर चार पैसे कमाने के लिए ये सब दूकान चलाते हैं। सब यह भी चाहते हैं कि हर खरीदार फिर-फिर उन्हीं की दूकान पर आए। मगर जब हिंदी पुस्तकों का प्रकाशक 12 और 15 खण्डों की ग्रन्थावलियाँ छापता है (छापता है, क्योंकि बिकती है!) तो उसकी निगाह साधारण ग्राहक या पाठक से हटकर केवल बिक्री पर टिकी होती है। सच पूछें तो एक-दो प्रतियाँ खरीदने वाले ग्राहक उसके गणित में कहीं आते ही नहीं। हिंदी छोड़ बंगला, मराठी आदि अन्य भाषाओं में साधारण क्रेता और पाठक प्रकाशक और लेखक दोनों की आय का मुख्य सहारा होता है। वह सहारा इस लिए बनता है कि लेखक-प्रकाशक अपने माल से उसे सन्तुष्ट किए रहते हैं। ताजा सब्जी बेचने वाले कुँजड़े के यहाँ कौन ग्राहक न जाएगा! हिंदी प्रकाशक को पुस्तकें न बिकने का रोना रोने की बजाय पड़ताल करनी चहिए, साधारण पाठक पढ़ना क्या चाहता है। बर्तन विक्रेता अपनी दूकान पर रोलेक्स घड़ी नहीं रखता तो हिंदी पुस्तक विक्रेता की दूकान पर 6 हजार रुपए की 'सकल्ले रचनावली' क्यों? मैं देश से दूर रहता हूँ, चुनिंदा पुस्तकें खरीदता हूँ, दस में एकाध ही पुस्तक ऐसी होगी जिसे पूरा पढ़ना और उसे अपने पास रख छोड़ना चाहूँगा। कोबे निवासी मेरे एक परिचित भारतीय हैं, जब-जब मैं उनके यहाँ जाता हूँ, लौटते समय वह थैला भर हिंदी की पॉकेट बुक पुस्तकें यह कहते हुए मुझे पकड़ा देते हैं कि यहाँ तो फेंक दी जाएँगी!

विश्वविद्यालय प्रकाशन 'वलियो' के खुले फ़रेब से बचा रहा है। यहाँ से उच्च स्तरीय पुस्तकें जितनी अधिक संख्या में प्रकाशित हुई हैं, हिंदी के किसी भी दूसरे प्रकाशक के लिए ईर्ष्या का विषय होगा! किसी जापानी प्रकाशक के यहाँ से ये ही पुस्तकें निकली होतीं तो उसके नाम की धाक सारे देश में जम जाती। **काशी का इतिहास** हो या **जेम्स प्रिंसेप के रेखाचित्र**, ऐसी सुन्दर पुस्तकें निकालने पर भी इस प्रकाशन को वांछित ख्याति क्यों न मिल पाई?

कारण, हिंदी प्रकाशक को व्यापारी होकर भी ठीक से अपना विज्ञापन करना नहीं आता! या कि प्रचार में समय और धन लगाना उसे व्यर्थ मालूम देता है। पुस्तक छाप दी तो खरीददार उसे खरीदेगा ही, ऐसा समझना भारी भूल है। जापान छोड़ें, भारत ही में अंग्रेज़ी पुस्तकों के प्रकाशक पहले और बाद में पुस्तक का जिस जोर-शोर से प्रचार करते हैं, यह हिंदी प्रकाशकों के लिए ध्यान देने योग्य है। पेंगुइन इंडिया ने एक भारतीय लेखिका की अँग्रेज़ी पुस्तक निकालने के साथ दिल्ली के श्रीराम सेंटर में जो गोष्ठी आयोजित की, उस पर डेढ़ दो लाख रुपए जरूर खर्च हुए होंगे। उसी पेंगुइन इंडिया के सहकार में एक हिंदी प्रकाशक ने मेरी पुस्तक, 600 पृष्ठों की दो जिल्दों में, प्रकाशित की। इस पर सभा गोष्ठी तो बहुत दूर, पुस्तक की समीक्षा भी कहीं निकल पाई है या नहीं, स्वयं प्रकाशक को इसकी सही-सही जानकारी नहीं।

हिंदी लेखकों को भी अपने गरेबाँ में झाँकना चाहिए। आप अभिनव बाणभट्ट हों या हिंदी के हेमिंग्वे, पाठक आपकी पुस्तक की ओर दृष्टिपात् भी नहीं करता तो इसका मुख्य कारण आप स्वयं हैं। ''काल के ये रूप-चक्राकार रेखीय निरपेक्ष न होकर सापेक्ष हैं,''—इसका अर्थ स्वयं लेखक के पत्नी-बच्चे ही जब नहीं समझ सकते तो दूसरों को पागल कुत्ते ने नहीं काट खाया है जो वह ऐसी हिंदी के पास भी फटकेगा! हाँ, अच्छा लेखक पाठकों की रुचि का परिष्कार भी करता है। ''पुराने ठेठ हिंदी के शब्दों को कोई अच्छी तरह सोच विचारकर लिखने वाला फिर से जिलाकर समाज में प्रचलित कर सकता है। अपनी निज की भाषा में कामकाजी शब्दों को मर जाने या मृतक प्राय हो जाने से बचाना अच्छे लेखक का काम है।'' (*हिंदी प्रदीप, 1885*) मगर जब पाठक का मन बाँध रखने ही की शक्ति लेखक में न हो तो रुचि को संस्कार देने की बात भी क्या! घटिया से घटिया हिंदी फ़िल्म भी फूहड़ मुहावरों जुमलों का चलन चलाती है तो कोई वजह नहीं कि हिंदी लेखक सटीक संगत मुहावरे का चलन न चला सके। **चंद्रकान्ता** पढ़ने के लिए हिंदी क्षेत्र से बाहर के कितने ही व्यक्तियों ने हिंदी सीखी थी। सोचना चाहिए कि क्यों हिंदी लेखक की नियति प्रेमचंद से तीन चौथाई सदी बाद अब भी वही है, ''केऊ मास्टर रहलेन!''

हाल में दिल्ली के एक युवक श्री तनेजा क्योतो में मेरे घर आकर ठहरे थे। बी०काम० पास, वहाँ की एक कम्पनी में जापानी भाषा के अनुवादक हैं। मैंने हिंदी की परख करने के इरादे से उन्हें पाँच पुस्तकें पढ़ने को दीं—जिल्दों पर बेठन चढ़ाकर। यह सावधानी व्यर्थ थी क्योंकि हिंदी की एक भी पुस्तक उन्होंने इससे पहले पढ़ी न थी! पहली, एक कविता पढ़ते हुए वह बोले, ''ये कहना क्या चाहते हैं, मेरी समझ में नहीं आता।'' दूसरा था उपन्यास, लगा, मन उनका रम रहा है, उन्होंने कहा, ''जिन्दगी की रियैलिटी उतरी हुई है इसमें—जैसी टी०वी० पर भी दिखाई जाती है—इंसान की लाइफ़—जो हम फ़िल्म में.....'' यह उपन्यास था उदय प्रकाश का। अगली, एक हिंदी कहानी में आए कई शब्दों के अर्थ तनेजा को मालूम न थे, एक शब्द 'मादरज़ाद' के लिए उन्होंने कहा, ''गंदी गाली है।'' 'नंबर वन' लगी उन्हें विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ० जयंत विष्णु नार्लीकर के मराठी उपन्यास का उन्हीं के द्वारा किया गया हिंदी अनुवाद **वाइरस**। रात सोने जा रहे थे तो पढ़ने के लिए उन्होंने मुझसे यह उपन्यास माँगा।

लेखक-प्रकाशक मंडल को पूरा एक जाँच कमीशन बैठाकर उससे इस बात की जाँच करवानी चाहिए कि क्या कारण है कि कविता इस शिक्षित हिंदी भाषी युवक की समझ में न आई, उदय प्रकाश के उपन्यास में 'इंसान की लाइफ़' उतरी हुई दिखलाई दी और सर्वोपरि, मराठी लेखक द्वारा हिंदी में अनूदित उपन्यास ऐसा किस कारण लगा कि उसने इसे दोबारा माँगा? इसकी जाँच उस स्तर पर होनी चाहिए जिस रूप में अल्ज़हाइमर रोग का उपचार खोजने के लिए अनेक देशों के वैज्ञानिक DNA के सूक्ष्म विश्लेषण में जुटे हुए हैं! मुझमें जाँच कमीशन के स्तर पर पता करने का माद्दा नहीं, फिर भी मैंने उदय प्रकाश की रचनाओं के माध्यम से आज की हिंदी की नस पकड़ने की कोशिश करते हुए एक लेख लिखा था। लेख इस लेखक तथा कुछ और व्यक्तियों को भेजा मगर यह देखकर कि मुद्दई सुस्त है तो गवाह का चुस्त होना मूर्खता

है, चुप बैठ गया। लेखक की सुस्ती अकारण नहीं है—जब लेखक लिख लेता है तो प्रकाशक उसे छाप देता है, फिर इसके आगे सिर मारने की ज़रूरत क्या!

मुझे तो हैज़ा और डेंगू जैसे तमाम संक्रामक रोगों के कीटाणु हिंदी भाषा में, वाक्यांशों के बीच, कहीं कई शब्दों के ऊपर-नीचे तो कहीं वाक्य के शीर्ष पर कलमलाते नज़र आते हैं! ''राज्य की अबाध्य कृपा से हमारी हिंदी कुत्ते खसी में पड़ी दुर्गत सह रही है।'' (*हिंदी प्रदीप 1905*)

सोचिए तो, गुरदा क्या काम करता है? गुरदा रक्त का कल्मश अलग कर रक्त को शुद्ध करता है और उसे शरीर की शिराओं में पुनः दौड़ाता है। ऐसा न करे तो शरीर का ठीक वही हाल होगा, जो आज हिंदी के साथ-साथ हिंदी भाषी प्रदेश का है। भाषा अथवा हिंदी क्या करती है, गुरदे के समान, इसकी पहचान भूले हमें एक हज़ार बरस से ऊपर हो चुके हैं! यह सोचना कि भाषा दूसरे के प्रति सम्प्रेषण का माध्यम है, बड़ी भारी भूल है। गोबरैला भटककर रेंगता हुआ हरी दूब पर चला जाए मगर उसके लिए कोमल हरी दूब भी गीला सड़ा गोबर ही है! ऐसे मनुष्य के लिए, जो मानसिक रूप से विक्षिप्त हो जाने से 'हाथ', 'कान' जैसे शब्दों को उनके सन्दर्भित अर्थ के साथ खो बैठा है; एक हाथ गँड़ासे से काट लिए जाने पर रोए-चीखे वह चाहे कितना ही, उसे इसका ज्ञान कदापि न होगा कि यह पीड़ा मेरा हाथ कट जाने से हो रही है। दैहिक पीड़ा का भान होने के लिए उसे 'हाथ' से लेकर 'गँड़ासा' तक भाषा (यहाँ हिंदी भाषा) जोड़ती है। यह हथियार machete दिखलाए जाने पर हिंदी भाषी के लिए उसकी पहचान अब 'गँड़ासा' नहीं, 'खाँड़ा' कराएगा! कई वर्ष होते हैं, ओसाका में एक शराबी अकारण मुझसे उलझ पड़ा तो उसे अच्छी तरह 'हुर कर' मैं यहाँ से टर रहा—'हुरने' का जापानी प्रतिशब्द आज तक मुझे नहीं आता!

हरी दूब, गँड़ासे अथवा खाँड़ा और हाथ के समान पहचान कराने वाला शब्द न होने के सबब 'अल्लावदीननृप' की पहचान कविराज विश्वनाथ को न हो सकी; घनानंद से नादिरशाह न पहचाना गया; (मगर लंडन की ब्रिटिश लाइब्रेरी में एक फ़ारसी हस्तलिखित पोथी है, **हालात-ए-नादिरशाह** जिसमें उमर ने दिल्ली की लूट का बयान किया है।) श्रीपति मिश्र के **काव्य सरोज** में इस बात का जिक्र तक नहीं कि उनके आश्रयदाता कालपी के सूबेदार अब्दुल्ला खाँ ने आगरा से पटना तक रास्ते के दोनों ओर कई लाख कटे हुए सिरों की बंदनवार बँधवाई थी! धूर्त क्लाइव का असली चेहरा पहचान ही न पाए, भारतेंदु पूर्वज अमीचंद, नतीजतन मरने के दिन तक पागल, कलकत्ता की सड़कों पर नंगे फिरते रहे!

जी हाँ, पतंजलि महाभाष्य के प्रथम शब्द, 'कः शब्द!' शब्द क्या है?—शब्द वह है जो पहचान कराता है, अमुक अमुक गुणों से युक्त पदार्थ का! तभी तो भाषा का सीधा-सीधा वास्ता उसे बोलने वाले जन समुदाय, भू प्रदेश, नदी, फैक्टरी, खेत, पर्वत आदि की भौतिक अवस्था अर्थात् आर्थिक स्तर, शासन व्यवस्था, स्वास्थ्य आदि से होता है। गऊ पट्टी के नाम से बहु विख्यात प्रदेश के उपरोक्त तत्त्वों से हिंदी भाषा का उतना ही सीधा सम्बन्ध है, जितना कि नाक का गंध से। कैसे?

मई-जून की झुलसाती धूप में चलकर घर आने पर मन में जो पहली इच्छा होती है, उसको कौन शब्द, मौन अथवा मुखरित रूप में, व्यक्त करता है, 'पानी', 'जोल' कि मिजु—भाषा तै करती है यह। 42 वर्ष जापान में रहकर भी 'मिजु' मेरे मन में भी नहीं उठता! दिल्ली के फुटपाथ पर बैठकर गाहक की टूटी चप्पल की मरम्मत कर रहा मोची खड़ी बोली हिंदी में नहीं बल्कि, हो सकता है, हरियाणवी में स्वयं से मौन बोल रहा होता है, 'इधर कनारे-कनारे थोड़ा और सिल।' पुणे में डॉ० नार्लीकर खगोल शास्त्र पर एक अमरीकी पत्रिका के निमित्त लेख अँग्रेज़ी में लिख रहे हैं (उनके लिए अँग्रेज़ी भाषा वैसे ही अर्जित हुनर है, जैसे कि उस मोची के लिए जूते की मरम्मत करना!) मगर खगोल शास्त्र की पूरी की पूरी गुत्थी उन्होंने महाराष्ट्री में नहीं, बल्कि उस आंचलिक बोली में हल की है, जो उनकी मातृभाषा है!

भ्रष्ट हिंदी कैसे बोलियों को गंदी करती है, मैं केवल एक उदाहरण दूँगा, 'दुपहर क खाना तुम केतने बजे लेबो?' यह उल्था है भद्दी खड़ी बोली का अवधी में। यह व्यक्ति काहिल तो है ही, पर्याप्त जाहिल भी है! इसके दिमाग़ से 'भोजन' शब्द सदा के लिए मिट गया है! 'लेबो' का इस प्रसंग में कोई अर्थ ही नहीं! यह तो हिंदी में रेंग आया तेलचट्टा है, 'take!' कोई बात नहीं, जीवित भाषा खटमल, मच्छर कोटि के पराए शब्दों को भी तितली का सा आकर्षक रूप रंग दे देती है! मगर इतना याद रहे कि 'take' को (केवल ऊपर ही के से प्रसंग में!) तमाम मुहावरों में लक्षणा और व्यंजना पर घिस-घिस कर हिंदी का प्रयोग बनाने में 3-4 सौ वर्ष लग जाएँगे, या इससे भी अधिक! और उस दिन तक यह मृत शब्द जोंक-सा दिमाग़ पर चिपका हुआ अन्य सिद्ध शब्दों का लहू चूसता रहेगा! ज़रा पता तो करें, 'मुँह काला करना' मुहावरा कितना पुराना है, और यह आया किधर से है?

मातृभाषा में 'लेबो' जैसे मुर्दा शब्दों का ढेर जितना बढ़ता जाएगा, प्रयोक्ता के लिए सटीक शब्द से यथार्थ की ठीक पहचान उतनी ही दूर से दूरतर होती जाएगी। सड़क किनारे चलते हुए अचानक धड़ाम से गिर पड़ने, फिर उठने के बाद प्रायः सब कोई गिरने के कारण (केले का छिलका!) की ओर देखता है पर शायद ही कोई व्यक्ति उसे लात मारकर किनारे करता होगा! क्योंकि शत्रु (वह पीले रंग का टुकड़ा या कि 'अल्लावदीननृप'!) को देखने के बाद भी 'केले का छिलका गिरने का सबब' इस तार्किक पहचान तक पहुँच ही नहीं पाता वह!

क्या किसी ने विचार किया है—विशेषतः काशीवासियों में से किसी ने—कि मुहम्मद गोरी हो कि औरंगज़ेब, सीधे काशी ही पर वह क्यों चढ़ दौड़ता था? क्या कारण है कि 2500 वर्ष पहले बुद्ध ने धर्म प्रवर्तन बोधि वृक्ष के नीचे न कर काशी इसिपत्तन (सारनाथ) में आकर किया? माँगने पर हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए भूमि दरभंगा में भी मिल जाती पर संस्थापक ने काशी ही को क्यों चुना? क्योंकि एक काशी ही के पांडित्य में वह फक्कड़ मस्ती है, जो शब्द को औजार और हथियार में बदल देती है—'एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः संप्रयुक्तः'! उसी काशी पर इससे अधिक क्रूर व्यंग्य और क्या होगा कि पाणिनि के सूत्रों पर किए गए जिन संशोधनों को 'काशिका' कहा जाता था, अब वही 'काशिका' बनारस में होटल का नाम है! (*क्रमशः*)

शेष अगले अंक में.....

शीघ्र प्रकाश्य

एक थी रुचि

बच्चन सिंह

एक प्रयोगधर्मी उपन्यास है—'एक थी रुचि'। स्त्री-विमर्श पर केन्द्रित है और नारी-स्वतंत्रता की वकालत करता है। पति और पत्नी के बीच के सम्बन्धों को नया अर्थ-विस्तार इतना कि अंततः पत्नी की यौन स्वतंत्रता के समक्ष पति घुटने टेक देता है और उसके गर्भ में पल रहे दूसरे पुरुष के बच्चे को अपना नाम देना स्वीकार कर लेता है लेकिन पत्नी को अस्वीकार नहीं कर पाता।

दरअसल यह उपन्यास आज के बदलते सामाजिक और पारिवारिक रिश्ते का मुकम्मल दस्तावेज तो है भविष्य के बदलाव की ओर भी संकेत करता है। अब स्त्री पति की उपेक्षा और उदासीनता के कारण घुट-घुट कर जीने की बजाय विकल्प तलाश लेने में यकीन करती है और उससे वैवाहिक सम्बन्ध तोड़ लेने में जरा भी नहीं हिचकती। उपन्यास की नायिका इसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है।

वरिष्ठ पत्रकार-साहित्यकार बच्चन सिंह ने इस नवीनतम उपन्यास में कहीं-कहीं प्रतीकों के माध्यम से अपनी बात कही है। इसके बावजूद उपन्यास आदि से अंत तक रुचिकर है और पाठक को बाँधे रखने में पूरी तरह सफल है।

एक केन्द्रीय व्यक्ति का अभाव

—डॉ० विवेकी राय

गत आठ दिसम्बर दो हजार सात को विश्वविद्यालय प्रकाशन में जाने का मौका मिला। बहुत भारी मन से जा रहा था। सीढ़ियों से उतरते ही एक धक्का जैसा लगा। मन और भारी हो गया। यहाँ के केन्द्रीय व्यक्ति की खाली कुर्सी भीतर उचाट जैसा भरने लगी थी। मगर यह स्थिति देर तक नहीं रही। भीतर विशाल ग्रन्थागार में सारा कार्य पूर्ववत् अपने ढंग से चल रहा था। अनुरागकुमार मोदी पूर्ववत् अग्रिम मोर्चे पर डटे मिले। उनके इर्द-गिर्द ग्राहकों अथवा कुछ जानकारी चाहने या कुछ देने-लेने के लिए आये लोगों की भीड़ थी। वे उससे धैर्यपूर्वक निपट रहे थे। यह भीड़ सायं तक ऐसे ही बनी रहती है। इस विशाल ग्रन्थागार और प्रकाशन कार्य में नियुक्त कर्मचारियों के नियन्त्रण की उनमें अपार क्षमता है। कहीं कोई अन्तर नहीं दिखा। एक चुस्त-दुरुस्त व्यवस्था के अन्तर्गत सब कुछ यथावत् चल रहा था। खाली कुर्सी की आत्म-ऊर्जा सर्वत्र सक्रिय थी। ऐसा नहीं लगता था कि कर्मवीर पुरुषोत्तमदास मोदी का यहाँ अभाव है। उनका भाव पराग कुमार मोदी और अनुराग कुमार मोदी सहित समस्त कर्मचारियों में व्याप्त जैसा लगा। वे स्मृति शेष होकर भी विश्वविद्यालय प्रकाशन की सम्पूर्णता में शेष मिले। इतने पर भी उस खाली कुर्सी के सामने वाली टेबुल के आगे पड़ी कुर्सी पर बैठकर उस केन्द्रीय व्यक्ति के साथ जो साहित्यिक चर्चा होती थी और बहुत ताजगी की अनुभूति होती थी, व्यावहारिक यथार्थ के धरातल पर इसका अभाव तो अब सदा-सदा के लिए हो ही गया था। यह कसर भीतर कचोटती रही।

कुछ क्षण बाद ही पराग कुमार मोदी बगल से आ गये। उनके सामने बैठ जाने पर अच्छा लगा तथा और भी अच्छा लगा उनके साथ बातचीत के क्रम में। उनकी बातों में गम्भीरता और उत्तरदायित्व-बोध की झलक थी। यही अपेक्षित था। स्मृति शेष मोदीजी ने विश्वविद्यालय प्रकाशन को जिस ऊँचाई पर पहुँचा दिया है उसे उस स्थान पर बने रहना चाहिए अथवा नयी पीढ़ी की नयी सूझबूझ के साथ उसमें और चमक तथा बढ़ोत्तरी आनी चाहिए। यह आकांक्षा हिन्दी-साहित्य-जगत और प्रकाशन-जगत की है। इसी के अन्तर्गत काशी का एक गौरव भी सम्मिलित है। वह बना रहना चाहिए। विश्वविद्यालय प्रकाशन के रूप में जो प्रकाशन-व्यवसाय और साहित्य-सेवा के समन्वय का आदर्श निखर गया है, वह बरबस ध्यान आकर्षित करता है। उसकी एक पृथक पहचान है। पराग कुमार से उस दिन अगले कार्यक्रमों के बारे में विस्तार पूर्वक बातें हुईं। उन्होंने बताया कि पिताजी ने जिन-जिन पुस्तकों की पांडुलिपियों को अपने जीवन-काल में प्रकाशनार्थ स्वीकृति दी थी, उन्हें प्राथमिकता के आधार पर प्रकाशित किया जायगा। यह सुनकर अच्छा लगा और पुन: अच्छा यह भी लगा कि इस टेबुल की परम्परायें अभी सुरक्षित हैं। बैठने के कुछ ही देर बाद जल आ गया और फिर चाय भी। मेरी दो पुस्तकों—'काव्य समग्र' और 'कहानी समग्र' को पराग कुमार ने उपयोगी और आकर्षक बनाने के विषय में जो अपना सुझाव दिया वह मुझे भी जँच रहा था। मैंने जाना इस सम्बन्ध में आपका सार्थक अनुभव है। वास्तव में दीर्घकाल तक पिता के साथ काम करते-करते दोनों भाई परिपक्व हो गये हैं।

'भारतीय वाङ्मय' के प्रकाशन के बारे में भी बातचीत हुई। पुरुषोत्तमदास मोदी ने अपनी सम्पादन-रुचि-चारुता से इसे चमत्कारिक ढंग से सँवार-निखार दिया था। उसके शुद्ध साहित्यिक स्वाद-गंध में पुरानी पीढ़ी की स्वच्छन्द मुक्त मनता मिलने लगी थी। उस छोटे से पत्र का वैविध्यपूर्ण क्षितिज-विस्तार बरबस आकर्षित कर लेता। उसका वह स्वरूप बना रहा तो हिन्दी-जगत की एक बहुत बड़ी आकांक्षा की पूर्ति होगी। इसके साथ ही विश्वविद्यालय प्रकाशन की गरिमा भी सुरक्षित रहेगी। प्रसन्नता हुई यह देख कर कि परागकुमार मोदी अपने प्रकाशन सहित 'भारतीय वाङ्मय' के प्रति गम्भीर हैं। उस केन्द्रीय व्यक्ति की खाली कुर्सी की माँग की इसी रूप में पूर्ति होगी।

मोदीजी की स्मृति साहित्यिक धरोहर है

—डॉ० मंगलमूर्त्ति

लगभग चार माह बीत चुके हैं मोदीजी का महाप्रयाण हुए। काल के इसी चक्र में वह नियत तिथि आई थी जब मोदीजी की लेखनी ने 'इति' शब्द अंकित किया; और वही चिरंतन गतिमान कालचक्र इंगित कर रहा है—''काल और समय-ज्वार कभी रुकते नहीं।'' सागर की लहरों की तरह इशारे से वह जताता रहता है कि लहरें सागर-तट पर आकर बिखरती तो हैं, लेकिन उन्हें देखकर उनके टूटने या समाप्त होने का जो बोध होता है वह एक भ्रम होता है, क्योंकि उनकी शृंखला कभी टूटती नहीं, वह निरन्तर प्रवहमान होती है। मृत्यु भी कुछ वैसा ही भ्रम है जो जीवन के इस संशयजाल का एक ताना-बाना है। मृत्यु हमें रुलाती या शोकाकुल करती है और यह भी उस भ्रम-नाट्य का ही एक दृश्य होता है। विडम्बना है कि हम रोते हैं उस बात पर जो जीवन का एक चिरंतन सत्य है; और जो हमें उस चिरंतन सत्य का साक्षात्कार कराता हो, कुछ समय के लिए ही सही—जो सर्वशक्तिमान ईश्वरीय सत्ता की हमें एक ज्योतित झलक दिखाता हो, उससे रूबरू होकर तो हमें आध्यात्मिक चेतना की पराकाष्ठा का बोध होना चाहिए, जैसा अर्जुन को भगवान कृष्ण के विराट-रूप-दर्शन से हुआ था।

मोदीजी के महाप्रयाण के बाद, जब समय की रेत पर कालचक्र के कुछ और पदचिह्न अंकित हो चुके हैं, और चित्त थोड़ा स्थिर हो चुका है, तब कुछ ऐसे ही भाव मेरे मन में उठ रहे हैं। मोदीजी ने अपनी जीवन-यात्रा कर्मठता, संघर्ष और सफलता के साथ पूरी की—उन्होंने अपना स्थूल शरीर त्यागकर समयानुसार अपने यश: शरीर में प्रवेश पाया है, यह एक गौरव-प्रसंग है; शोक के तात्कालिक प्रसंग का अंत हो चुका है। जिस व्यक्ति की स्मृति एक सुदीर्घ एवं सफल जीवन-यात्रा के बाद इतनी श्रद्धांजलियों के पुष्पभार से सुवासित हो रही हो उसके लिए क्षणिक शोक-प्रकाश के बाद अब उसके कीर्त्ति विस्तार का अवसर है। मोदीजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि उनके जीवनादर्शों का अनुसरण करना होगा। वे एक सतत चिंतनशील, रचनाशील, कर्मयोगी थे और उन्होंने अपने जीवन को अपने आदर्शों के साथ एकीकृत किया था। यही हमारे लिए उनके जीवन का संदेश है।

मोदीजी से मेरा परिचय कराया था (सम्भवत: जुलाई-अगस्त, 2000 में) स्व० धीरेन्द्रनाथ सिंह ने—जिनकी स्मृति को भी मैं यहाँ साथ ही श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूँ। धीरेन्द्रजी के पिता श्री पारसनाथ सिंहजी मेरे पिता (स्व० शिवपूजन सहाय) के समकालीन प्रियभाजन रहे हैं। मोदीजी के यहाँ इन लोगों के साथ मेरी कई बार लम्बी बैठकें हुईं। एकाध बार विशालाक्षी भवन में भी जाकर उनसे मिला। 'भारतीय वाङ्मय' के अंक वे नियमित रूप से भिजवाते रहे। एक अंक में प्रेमचंद-सम्बन्धी मेरी एक योजना का संक्षिप्त प्रारूप भी उन्होंने छापा था। इधर पिछले वर्षों में उन्होंने 'हंस' के 'काशी अंक' को पुनर्मुद्रित करने की इच्छा जताई थी तब मैंने अपने पिता की स्मृति में स्थापित न्यास से अनुमति लेकर वह अंक उनको उपलब्ध करा दिया, और वे उसी के प्रकाशन की तैयारी में लगे थे। मैंने मूल अंक के सभी पृष्ठों की फोटो-प्रतियाँ भी उन्हें दे दी थीं, ताकि मूल अंक की जिल्दबंदी न तोड़नी पड़े। फिर उन्होंने मूल अंक मुझे वापस कर दिया। वे 'हंस' के 'आत्मकथांक' का भी पुनर्मुद्रण करने वाले थे। कई और दुर्लभ बहुमूल्य ग्रन्थों के पुनर्मुद्रण की उनकी बड़ी योजना थी। यह सारा काम अब उनके सुयोग्य पुत्रद्वय—अनुरागजी और परागजी को करना है।

पीढ़ियों का यह दायित्व होता है कि वे वंश-परम्परा और उसके रिक्त का संवर्द्धन करें। मोदीजी के सभी मित्रों-प्रशंसकों का भी यही कर्त्तव्य है कि वे उस भव्य भवन को पूरा करने में हर संभव सहयोग दें जिससे उनका सच्चा स्मारक पूरा हो!

अत्र-तत्र-सर्वत्र

सुनील गंगोपाध्याय
'साहित्य अकादमी' के अध्यक्ष

बंगला के प्रख्यात उपन्यासकार एवं कवि सुनील गंगोपाध्याय साहित्य अकादमी के नए अध्यक्ष चुने गए हैं। पंजाबी के जाने माने आलोचक संतिदर सिंह नूर निर्विरोध उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। अकादमी के वर्तमान उपाध्यक्ष सुनील गंगोपाध्याय ने ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता और मलयालम के मशहूर लेखक एम टी वासुदेवन नायर को पाँच मतों से हराया। निवर्तमान अध्यक्ष गोपीचंद नारंग पहले ही चुनाव मैदान से हट गए थे।

इस अवसर पर हिन्दी के वयोवृद्ध लेखक एवं स्वतन्त्रता सेनानी अमरकांत को उनकी अनुपस्थिति में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। जिसे उनके पुत्र अरुण वर्द्धन ने ग्रहण किया। उर्दू के आलोचक वहाब अशरफी, मैथिली के लेखक प्रदीप बिहारी और पंजाबी के जसवंत दीद समेत 24 अन्य भारतीय भाषाओं के लेखकों को वर्ष 2007 के अकादमी पुरस्कार प्रदान किए गए। अकादमी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुनील गंगोपाध्याय ने पुरस्कृत लेखकों को 50-50 हजार रुपये की राशि, प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिह्न प्रदान किया तथा उन्हें शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

तसलीमा के हक में
फिर लामबंद हुए लेखक

बंगलादेश की विवादास्पद लेखिका तसलीमा नसरीन को नजरबंदी से मुक्त कराने के लिए लेखक एक बार फिर लामबंद हुए हैं। देश भर के 100 से अधिक लेखकों ने हस्ताक्षर अभियान चला कर इसके लिए सरकार पर दबाव बनाने की कोशिश की है। साहित्य अकादमी की पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' के सम्पादक गिरधर राठी ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर लेखकों के इस प्रयास के बारे में जानकारी दी। साहित्य अकादमी पुरस्कार समारोह के मौके पर जाने-माने लेखकों ने हस्ताक्षर अभियान चलाकर सरकार से तसलीमा को भारत की नागरिकता प्रदान करने और उन्हें स्वतन्त्र होकर रहने देने की माँग की।

अरुंधति और रुश्दी
'द बेस्ट ऑफ द बुकर' की दौड़ में

सलमान रुश्दी, किरन देसाई और अरुंधति राय 'द बेस्ट आफ द बुकर' पुरस्कार की दौड़ में शामिल हैं। केवल एक बार दिया जाने वाला यह पुरस्कार प्रतिष्ठित साहित्यिक बुकर पुरस्कार की 40वीं वर्षगाँठ पर प्रदान किया जाएगा। आयोजकों के अनुसार 'द बेस्ट आफ द बुकर' 22 अप्रैल 1969 से अब तक बुकर पुरस्कार जीतने वाले किसी बेहतरीन उपन्यास को दिया जाएगा। इस पुरस्कार की होड़ में कुल 41 उपन्यास हैं जिनमें सलमान रुश्दी का उपन्यास 'मिडनाइट चिल्ड्रेन', अरुंधति राय का 'गॉड ऑफ स्माल थिंग्स', और किरण देसाई का 'दि इनहेरिटेंस ऑफ लॉस' शामिल है। यह दूसरा अवसर है जब बुकर पुरस्कार के आयोजकों ने विशेष अवसर पर अवॉर्ड देने की घोषणा की है। पुरस्कार विजेता चुनने में मदद के लिए पहली बार जनता की भागीदारी की गई है। उपन्यासकार, समालोचक विक्टोरिया ग्लेंडिनिंग की अध्यक्षता वाला निर्णायक मंडल अन्तिम रूप से चुने गए छह उपन्यासों में से सर्वश्रेष्ठ का चुनाव करेगा।

'बुकर' को टक्कर देने आया
'ब्लुकर' पुरस्कार!

इंटरनेट से कागज पर उतर आई पुस्तकों के लिए एक नया पुरस्कार!

बुकर पुरस्कार तो आप बखूबी जानते हैं लेकिन ब्लुकर पुरस्कार? जी हाँ, ब्लुकर पुरस्कार। नए जमाने में नए माध्यम आ गए। तो उन माध्यमों के लिए नए पुरस्कार भी तो आएँगे। सो 'बुक्स' के लिए अगर 'बुकर' पुरस्कार दिए जाते हैं तो नए जमाने के साहित्य 'ब्लॉग्स' के लिए 'ब्लुकर' पुरस्कार क्यों नहीं हो सकता?

वैसे यह शुद्ध रूप से ब्लॉग लेखन के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार नहीं है, बल्कि 'ब्लुक' लेखन के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार है। अब यह 'ब्लुक' क्या बला है। दरअसल यह ब्लॉग को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने पर आपके हाथ में आने वाली 'बुक' है, जिसे नया नाम दिया गया है 'ब्लुक'।

ब्लुकर पुरस्कार प्रदान करने का बीड़ा उठाया है अमेरिका की एक प्रिंट ऑन डिमांड कम्पनी 'लुलू' ने। स्वघोषित लेखक बे-लाग-लपेट इंटरनेट पर अपने जो विचार व्यक्त करते हैं (ब्लॉग्स) उन्हें यह कम्पनी, आदेश मिलने पर एक निश्चित फीस के बदले में, पुस्तक रूप में छाप देती है। इस कम्पनी के करोड़पति मालिक बॉब यंग का दावा है कि पाँच साल बाद हो सकता है कि उनका ब्लुकर पुरस्कार बुकर से भी ज्यादा प्रसिद्ध हो जाए!

खैर, पिछले दिनों प्रथम ब्लुकर पुरस्कार की घोषणा की गई और यह मिला है 32 वर्षीय जूली पॉवेल को, उनकी पुस्तक 'जूली एंड जूलिया' के लिए। यदि आप सोच रहे हैं कि यह कोई उपन्यास अथवा आत्मकथा है, तो क्षमा कीजिए, आपका अंदाजा गलत निकला। जूली के हाथ फ्रेंच पकवान बनाने की विधियों वाली एक पुस्तक लगी थी, जिसे क्लासिक का दर्जा प्राप्त है। उन्होंने इस पुस्तक में शामिल सभी 524 पकवान एक साल के अन्दर पकाकर देखने की ठानी। इन्हें पकाते समय के अपने अनुभवों को वे ब्लॉग के रूप में लिखती गईं। उनके इन्हीं पाक शास्त्रीय अनुभवों का पुस्तक रूप है 'जूली एण्ड जूलिया'। जब इस इंटरनेटिया पुस्तक को कागज पर छापकर ब्लुक का रूप दिया गया तो इसकी एक लाख प्रतियाँ बिक गईं!

अब उनकी पुस्तक पर एक फिल्म बनाने की भी तैयारियाँ चल रही हैं।

ब्लुकर पुरस्कार के लिए कुल 14 पुस्तकें चुनी गईं थीं। इनमें 'जूली एंड जूलिया' को सबसे कड़ी टक्कर दी 'बैले दु ज्यो' ने, जो कि एक वेश्या की व्यथा-कथा है। ब्लुकर पुरस्कार की निर्णायक समिति की अध्यक्ष कोरी डॉक्टरोव (जो कि विश्व के सबसे बड़े ग्रुप ब्लॉग 'बोइंगबोइंग' की सम्पादक भी हैं) कहती हैं, ''जो लोग यह सोचते हैं कि ब्लाग लेखन केवल अपने गुनाहों की स्वीकृति अथवा अपनी नौकरी को लेकर शिकायत करने तक सीमित है, वे गलत हैं। वे समझ नहीं पा रहे हैं कि ब्लॉग लेखन की विविध शैलियाँ कितनी दिलचस्प हो सकती हैं।''

ब्लॉगिंग के आलोचक भले ही आलोचना करते रहें, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि ब्लुकर पुरस्कार की स्थापना के साथ ही अभिव्यक्ति की इस नई विधा को अतिरिक्त बल मिला है। हाँ, फिलहाल भावी ब्लुकर विजेताओं के रातों रात मालामाल होने के ख्वाब देखने का वक्त नहीं आया क्योंकि पुरस्कार राशि है मात्र 2000 डॉलर!

मैग्नाकार्टा की नीलामी दो करोड़ डालर में

न्यूयार्क। मानवाधिकारों की इतिहास में पहली बार व्याख्या करने वाली ऐतिहासिक आठ सौ साल पुरानी मैग्नाकार्टा की 17 उपलब्ध पांडुलिपियों में से एक की नीलामी सूदबी ने करीब दो करोड़ दस लाख डालर में की। यह अब तक का सबसे महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है जिसकी नीलामी की गयी है। एक बोलीदाता ने टेलीफोन के जरिए बोली लगायी और यह दो करोड़ में बिकी। नीलामी पूर्व इसकी बिक्री दो से तीन करोड़ में होने का अंदाजा लगाया गया था। इंग्लिश रायल चार्टर मैग्नाकार्टा 1297 में प्रकाशित और इस पर ब्रिटेन के महाराज एडवर्ड प्रथम की मोहर लगी है। अंग्रेजी कानून में लोगों के अधिकारों की व्याख्या करने वाली यह पांडुलिपि अमेरिका की आजादी के घोषणापत्र के समान ऐतिहासिक और महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। सूदबी के उपाध्यक्ष तथा नीलामाकर्ता डेविड रिडेन ने इस पांडुलिपि को दुनिया का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज करार दिया है।

कहानियों पर बनेगी टेलीफिल्म

दिल्ली। केन्द्रीय संस्कृति मंत्री श्रीमती अम्बिका सोनी ने कहा है कि मुंशी प्रेमचंद की

कहानियों पर टेलीफिल्म बनाकर प्रसारित की जायेगी, ताकि उन्हें घर-घर तक पहुँचाया जा सके और युवा पीढ़ी इन कहानियों से प्रेरणा हासिल कर सके। उन्होंने प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती पर आयोजित समारोह में ये बात कही। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने की। समारोह में श्री राजेन्द्र यादव, डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी, ओमप्रकाश वाल्मीकि, शिवकुमार मिश्र, प्रभा खेतान आदि ने भी अपने विचार रखे।

फरवरी तक आयेगी बेनजीर की आखिरी किताब

पाकिस्तान की पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो की आखिरी किताब फरवरी तक बाजार में आ जाएगी। इस किताब को पाकिस्तान की राजनीति का झरोखा भी बताया जा रहा है और देश की पहली महिला प्रधानमंत्री का संस्मरण भी।

पिछले दिनों रावलपिंडी में एक चुनावी रैली में बेनजीर की हत्या कर दी गयी थी। हत्या से एक हफ्ते पहले ही उन्होंने अपनी किताब पूरी की थी। हार्पर कॉलिन्स के कार्यकारी सम्पादक टिम डग्गन के अनुसार, 'रीकन्सीलिएशन : इस्लाम, डेमोक्रेसी एंड द वेस्ट' नामक यह किताब इस्लामी दुनिया में बढ़ती राजनीतिक और सांस्कृतिक दूरी को मिटाने से सम्बन्धित भुट्टो के दृष्टिकोण को सामने लाती है।

अब होगा ऐसा अखबार जिसकी खबरें बदलती रहेंगी

हो सकता है कि आज से कुछ साल बाद आप दैनिक समाचार अखबार के एक ऐसे स्वरूप पर पढ़ रहें हों जिसे अगले दिन आपको रद्दी में फेंकने की जरूरत न पड़े। भविष्य में आप एक ऐसा अखबार पढ़ा करेंगे जिसकी खबरें पल-पल बदलती रहेंगी और जिसे आराम से मोड़कर जेब में रखा जा सकेगा। फिर दिन भर में जब भी ताजा खबरों पर एक निगाह मारनी हो तो इसे जेब से निकालिए और दुनिया भर का ताजा हाल आपकी आँखों के सामने होगा। सिर्फ अखबार ही नहीं, बल्कि कम्प्यूटर और फोन जैसे कई इलेक्ट्रानिक उपकरणों की तस्वीर भविष्य में कुछ ऐसी ही होने वाली है। इस दिशा में हाल ही में भारतीय मूल के एक अमेरिकी प्रोफेसर और उनके साथियों ने एक उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। इन वैज्ञानिकों ने ऐसी नैनो स्किन्स बनाने में सफलता हासिल की है जिनका इस्तेमाल बहुत ही लचीले इलेक्ट्रानिक उपकरण बनाने में किया जा सकेगा। इन उपकरणों में ई-पेपर, ई-डिसप्ले जैसी चीजें शामिल हैं। गौरतलब है कि नैनो स्किन्स का तात्पर्य त्वचा जैसे आकार में अत्यधिक छोटे एक पदार्थ से है। नैनो शब्द को आप कुछ इस तरह भी समझ सकते हैं कि मीटर का एक अरबवाँ हिस्सा एक नैनोमीटर कहलाता है और इतने छोटे आकार के स्तर पर काम करने वाली तकनीक नैनो टेक्नोलॉजी।

अब हिन्दी में अंग्रेजी की रूमानियत

रूमानियत अगर भाषाओं के बंधन से परे है, तो प्रेम की चाशनी में भीगा किशोर साहित्य भी क्यों जबान की हद माने। तरुणाई में कदम रख चुकी बेटी हो या उसकी माँ, पेपरबैक रोमांस पढ़ने में उनकी पसंद बहुत कुछ एक है—मिल्स एंड बून। समस्या अंग्रेजी जानने की थी, जो अब बहुत दिन नहीं रहने वाली। वैसे तो अंग्रेजी में तंग पाठक भी इनका रसास्वादन कर लेते हैं, फिर भी प्रकाशक इन लोकप्रिय किताबों को हिन्दी में लाने की तैयारी में हैं।

भारत में इन प्रेम कथाओं के पाठकों की बड़ी संख्या ने प्रकाशकों को इन्हें हिन्दी में छापने के लिए प्रेरित किया है। बहस इस बात पर है कि इनका हिन्दी में सीधा अनुवाद हो या पात्रों का भी भारतीयकरण कर दिया जाए। अंग्रेजी के अलावा 26 भाषाओं में इन किताबों का प्रकाशन हो रहा है, ऐसे में इनका हिन्दी में छपना बस वक्त की बात है। युवतियों और महिलाओं में ये किताबें सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। लोकप्रियता का आलम यह कि इस शृंखला की प्रति सेकेंड 4.4 किताबें बिकती हैं। 2006-07 में इसकी 13 करोड़ 10 लाख किताबें बिकीं। भारत में ये किताबें अभी तक पाऊंड में बिकती थीं और भारतीय मुद्रा में इनकी कीमत लगभग 200 रुपये बैठती थी। दिल्ली के हालिया पुस्तक मेले में इनके मूल्य का भी भारतीयकरण कर दिया गया।

इतिहास सौ साल का—मिल्स एंड बून शृंखला की शुरुआत ब्रिटेन के जेरल्ड मिल्स और चार्ल्स बून ने ठीक 100 साल पूर्व 1908 में की थी।

दक्षिण में त्रिलोचन का स्मरण

हैदराबाद, 29 जनवरी। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के विश्वविद्यालय विभाग, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान द्वारा सभा के खैरताबाद परिसर में '**प्रगतिशील कवि त्रिलोचन**' पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अध्यक्षता प्रगतिशील साहित्य समीक्षक और कवि **डॉ० रणजीत** ने की।

उन्होंने कहा कि यदि प्रगतिशील कवित्रयी में नागार्जुन ऊष्मा के कवि और केदारनाथ अग्रवाल सौन्दर्यबोध के कवि हैं तो त्रिलोचन वैयक्तिक संस्पर्श से युक्त सहजता के कवि हैं।

प्रमुख नवगीतकार और पत्रकार **डॉ० रामजी सिंह उदयन** मुख्य अतिथि थे। संस्थान के आचार्य एवं अध्यक्ष **डॉ० ऋषभदेव शर्मा** ने कहा कि कवि त्रिलोचन शास्त्री ने अपने रचनाकर्म द्वारा विलक्षणता और साधरणता के सामंजस्य का उदाहरण प्रस्तुत किया है। त्रिलोचन की कविता उद्यमशीलता और जीवट के कारण अपनी साधारणता में भी सबसे अलग दीखती है और यह प्रमाणित करती है कि सच्ची प्रगतिशीलता लोकतत्त्व और जीवन की धड़कन में रच बसकर ही प्राप्त की जा सकती है। **डॉ० मृत्युंजय सिंह** ने कहा कि त्रिलोचन ने निराला की काव्य-परम्परा का सही अर्थों में विकास किया, परन्तु आलोचकों ने उनके योगदान की घोर उपेक्षा की।

डॉ० जी० नीरजा ने 'जन-जन के कवि, जनपद के कवि' शीर्षक आलेख में यह स्पष्ट किया कि त्रिलोचन जी समय के ताप से तपे सच्चे कवि थे, न कि शर्तों के। वे मानवीय मूल्यों के ऐसे चितेरे थे, जिसके पास अनुपम मानवीय दृष्टि थी। अपने विश्वासों एवं संवेदनाओं से सच्चे अर्थों में जनवादी थे। उन्होंने कभी भी जीवन से समझौता नहीं किया।

फार्म 4

(नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	वाराणसी
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक हैं ?)	जी हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	
पता	चौक, वाराणसी
4. प्रकाशक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक है ?)	जी हाँ
5. सम्पादक का नाम	परागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक हैं ?)	जी हाँ
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी

मैं अनुरागकुमार मोदी एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(दिनांक १ मार्च, २००८)

प्रकाशक के हस्ताक्षर
(अनुरागकुमार मोदी)

सम्मान-पुरस्कार

वरिष्ठ आलोचक डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव को 'भारत भारती सम्मान'

लखनऊ, वरिष्ठ आलोचक **डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव** को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के सर्वोच्च सम्मान '**भारत भारती**' से सम्मानित किये जाने की घोषणा की गई है। गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग को वर्षों तक अपनी सेवाओं से समृद्ध करने वाले, *विमला देवी फाउण्डेशन* के **द्विजदेव सम्मान** एवं *के०के० बिड़ला फाउण्डेशन* के **व्यास सम्मान** से सम्मानित और 'आलोचना' पत्रिका के सम्पादक रह चुके साहित्य जगत के सशक्त हस्ताक्षर, अनेकों महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के रचयिता 10 फरवरी 1935 को भवाजीतपुर, गोला, गोरखपुर में जन्मे 73 वर्षीय डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव को इस सम्मान के अन्तर्गत 2.51 लाख रुपये की सम्मान राशि प्रदान की जायेगी।

इसके साथ ही *दो लाख रुपये* पुरस्कार राशि वाले सम्मानों में '**लोहिया साहित्य सम्मान**' **डॉ० श्याम सिंह शशि** को, '**हिन्दी गौरव सम्मान**' **डॉ० कुँवर बेचैन** को, '**महात्मा गाँधी साहित्य सम्मान**' **डॉ० वेदप्रताप वैदिक** को, '**पं० दीनदयाल उपाध्याय सम्मान**' **डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय** को एवं '**अवंतीबाई सम्मान**' **डॉ० (श्रीमती) गिरीश रस्तोगी** को देने की घोषणा हुई है।

एक लाख रुपये का '**साहित्य भूषण**' सम्मान *दस साहित्यकारों* को दिया गया है। इनमें **डॉ० शेर जंग गर्ग, डॉ० छैलबिहारी लाल गुप्त उर्फ राकेश गुप्त, उमेश जोशी, आशा श्रीवास्तव, धनंजय अवस्थी, डॉ० गिरिराज शरण अग्रवाल, डॉ० किशोरीशरण शर्मा, कौशलेन्द्र पाण्डेय, देवकीनंदन शांत** और **ओमप्रकाश वाल्मीकि** शामिल हैं। उक्त पुरस्कारों के साथ-साथ *एक-एक लाख रुपये* का '**लोक भूषण सम्मान**' **डॉ० विद्या विन्दु सिंह**, '**कला भूषण सम्मान**' **डॉ० उर्मिल कुमार थपलियाल**, '**विद्याभूषण सम्मान**' **डॉ० सत्यदेव मिश्र**, '**विज्ञान भूषण सम्मान**' **डॉ० सैयद आसिफ हुसैन आबिदी**, '**पत्रकारिता भूषण सम्मान**' **मधुसूदन आनंद**, '**प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण सम्मान**' **गंगारत्न पाण्डेय**, '**बाल साहित्य भारती सम्मान**' **नरेशचंद्र सक्सेना** को दिया गया है। इसके अलावा *एक लाख एक हजार रुपये* के '**सौहार्द सम्मान**' *नौ साहित्यकारों* को दिए गए हैं। इनमें **डॉ० कालीचरण चौधरी** (उड़िया), **डॉ० जमील अहसन** (उर्दू), **डॉ० भूषण लाल कौल** (डोगरी/कश्मीरी), **डॉ० पी०के० बालसुब्रह्मण्यम** (तमिल) **डॉ० वी०डी० हेगड़े** (कन्नड़), **डॉ० रामचंद्र राय** (बांग्ला), **सिम्मी हर्षिता** (पंजाबी), **डॉ० दामोदर खड़से** (मराठी) और **सुश्री बी० आम्बा 'माधवी'** (तेलुगु) शामिल हैं। *पच्चीस हजार रुपये* का '**हिन्दी विदेश प्रसार सम्मान**' **डॉ० पी० जयरामन** को दिया गया है। वर्ष 2007 के लिए '**विश्वविद्यालय स्तरीय सम्मान**' **डॉ० उषा सिन्हा** व **डॉ० कमला शंकर त्रिपाठी** को तथा *एक लाख रुपये* का '**मधुलिमये स्मृति पुरस्कार**' **कैलाश चन्द्र मिश्र** को दिया गया है। वर्ष 2006 में प्रकाशित महिला रचनाकार की कथा कृति 'अपने-अपने मरुस्थल' पर *आठ हजार रुपये* का '**पं० बद्री प्रसाद शिंगलू स्मृति पुरस्कार**' **विनीता शुक्ला** को दिया गया है।

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के पुरस्कार घोषित

लखनऊ। भाषा संस्थान ने साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए दिए जाने वाले सम्मान पुरस्कारों को पाने वाले साहित्यकारों के नाम की घोषणा गुरुवार 28 फरवरी को की। आगामी 15 मार्च को वितरित किये जाने वाले इन पुरस्कारों में पंजाबी भाषा साहित्य लेखन के लिए *ढाई लाख* का पहला '**मा० कांशीराम स्वाभिमान सम्मान पुरस्कार**' साहित्यकार **जसवंत सिंह कंवल** को दिया जाएगा जबकि मराठी भाषा में उत्कृष्ट लेखन के लिए *दो लाख रुपये* का '**रमाबाई महिला साहित्य सम्मान पुरस्कार**' **डॉ० विजया राजाध्यक्ष** को मिलेगा। *डेढ़-डेढ़ लाख* धनराशि वाले हिन्दी भाषा के चार पुरस्कारों के अन्तर्गत तकनीकी एवं वैज्ञानिक लेखन का '**संत कबीर सम्मान**' **डॉ० गुणाकर मुले** को, उत्कृष्ट मीडिया लेखन के लिए '**संत रविदास सम्मान**' **मधुसूदन आनंद** को, निबंध, डायरी, आलोचना, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा लेखन के लिए '**संत नामदेव सम्मान**' **बिशन टण्डन** को तथा अनुवाद कार्य के लिए '**संत रामदास सम्मान पुरस्कार**' **अमर गोस्वामी** को दिया जायेगा।

पंजाब के मोंगा जिले के छोटे से गाँव में रहने वाले जसवंत सिंह के 15 उपन्यास एवं कहानियाँ अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं, जबकि मुम्बई निवासी डॉ० विजया राजाध्यक्ष मराठी महिला लेखकों में विशिष्ट स्थान रखती हैं। भारतीय ज्ञानपीठ एवं के०के० बिड़ला संस्थान से जुड़े रहे बिशन टंडन का आलोचना, आत्मकथा, जीवनी आदि विधाओं में महत्त्वपूर्ण योगदान है। जबकि 60 से अधिक पुस्तकों का बंगला से हिन्दी में अनुवाद कर चुके अमर गोस्वामी हिन्दी एवं बंगला साहित्य के क्षेत्र में एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। भाषा संस्थान ने पुरस्कारों के लिए एक सलाहकार चयन समिति का गठन किया था, जिसमें हिन्दी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो० सूर्य प्रसाद दीक्षित, प्राचीन भारतीय इतिहास के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो० शैलेन्द्रनाथ कपूर तथा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष गोपाल चतुर्वेदी शामिल थे। भाषा चयन के बाद प्राप्त संस्तुतियों में से पंजाबी भाषा सलाहकार समिति, मराठी भाषा सलाहकार समिति तथा हिन्दी भाषा सलाहकार समिति द्वारा तीन-तीन नाम पुरस्कार चयन समिति को दिए गए। जिन पर कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, साहित्यकार डॉ० कन्हैयालाल नंदन तथा जामियामिलिया के हिन्दी भाषा के विभागाध्यक्ष डॉ० असग़र वजाहत की पुरस्कार चयन समिति ने विजेताओं के नाम पर अन्तिम मुहर लगाई।

नैयर मसूद को 'सरस्वती' तथा कृष्णा सोबती को 'व्यास' सम्मान

नई दिल्ली। के०के० बिरला फाउंडेशन ने वर्ष 2007 के सम्मानों की घोषणा कर दी है। जिसके अन्तर्गत '**सरस्वती सम्मान**' हेतु **डॉ० नैयर मसूद** के उर्दू कहानी संग्रह 'ताऊस चमन की मैना' का चयन किया है। *पाँच लाख रुपये* पुरस्कार राशि का यह सम्मान पाने वाले डॉ० मसूद सत्रहवें साहित्यकार हैं।

साथ ही फाउण्डेशन द्वारा प्रतिष्ठित '**व्यास सम्मान**' हिन्दी की सुप्रसिद्ध लेखिका **कृष्णा सोबती** को दिए जाने की घोषणा की गई है। 83 वर्षीय कृष्णा सोबती को यह सम्मान उनके चर्चित उपन्यास 'समय सरगम' पर दिया जाएगा। पुरस्कार में *ढाई लाख रुपये* की राशि, प्रशस्ति-पत्र तथा एक स्मृति चिह्न शामिल है।

'व्यास सम्मान' गत 16 वर्षों से दिया जा रहा है। यह सत्रहवाँ सम्मान है। 1991 में पहला 'व्यास सम्मान' हिन्दी के प्रख्यात मार्क्सवादी आलोचक *डॉ० रामविलास शर्मा* को दिया गया था। अब तक यह सम्मान *डॉ० गिरिजा कुमार माथुर, धर्मवीर भारती, कुँवरनारायण, श्रीलाल शुक्ल* तथा *केदारनाथ सिंह* जैसे लेखकों को मिल चुका है। *श्रीमती सोबती* को 'साहित्य अकादमी' तथा दिल्ली हिन्दी अकादमी का 'शलाका सम्मान' भी मिल चुका है।

डेढ़ लाख रुपये राशि का '**शंकर पुरस्कार**' **प्रो० रामशंकर त्रिपाठी** को उनकी पुस्तक 'बौद्ध दर्शन प्रस्थान' हेतु दिया जाएगा।

सोलहवाँ *एक लाख रुपये* राशि का '**वाचस्पति पुरस्कार**' **स्वामी श्रीरामभद्राचार्य** को उनके महाकाव्य 'श्रीभार्गवराघवीयम्' के लिए दिया जायेगा।

एक लाख रुपये राशि का '**बिहारी पुरस्कार**' **यशवंत व्यास** को उनके उपन्यास 'कामरेड गोडसे' के लिए दिया जायेगा।

फाउण्डेशन ने वैज्ञानिक अनुसंधान हेतु *डेढ़ लाख रुपये* राशि का सत्रहवाँ '**घनश्यामदास बिड़ला पुरस्कार**' बैंगलूर स्थित, भारतीय विज्ञान संस्थान के जैव रसायन शास्त्र विभाग के **प्रो० शान्तनु भट्टाचार्य** को देने की घोषणा की है।

फाउण्डेशन ने भारतीय ज्ञानपीठ के पूर्व निदेशक **डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय** को 2007-08 के लिए शोधवृत्ति देने की घोषणा की है। श्रोत्रिय के

शोध का विषय है—'महाभारत : रचनाओं की उत्स-कृति/दृष्टांत : भारतीय साहित्य'।

अयोध्या के कवि यतीन्द्र मिश्र को 'रजा' पुरस्कार

रजा फाउंडेशन, नई दिल्ली ने अयोध्या के युवा कवि व रचनाकार **यतीन्द्र मिश्र** समेत *दस कलाकारों* को प्रतिष्ठित '**रजा पुरस्कार**' देने की घोषणा की।

'**रजा पुरस्कार**'—(प्रत्येक 1 लाख रुपये राशि का) *कला* हेतु *चार चित्रकार*—**एस० हर्षवर्धन** (दिल्ली), **शीतल गातानी** (मुम्बई), **वनिता गुप्ता** (मुम्बई), **अवधेश यादव** (दिल्ली) को, *ओडिसी नृत्य हेतु* **सुरूपा सेन** (नृत्याग्राम), *मणिपुरी नृत्य हेतु* **प्रीती पटेल** (कोलकाता), *रुद्रवीणा वादन हेतु* **वहाउद्दीन डागर** (मुम्बई) और *गायन हेतु* **उदय मालवलकर** (पुणे) को चुना गया है। कविता के क्षेत्र में हिन्दी से **यतीन्द्र मिश्र** (वर्ष 2007) तथा अंग्रेजी से वर्ष 2006 के लिए **रंजीत होसकोटे** (मुम्बई) का चयन ट्रस्ट ने किया है। पुरस्कार की चयन समिति में न्यास के सदस्य एस एच रजा, अशोक वाजपेयी, अरुण बढ़ेरा और अखिलेश शामिल थे।

डॉ० बच्चन सिंह को मिला 'साहित्य अकादमी' सम्मान

वाराणसी। प्रसिद्ध आलोचक **डॉ० बच्चन सिंह** को 2007 का '**साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार**' उन्हें विख्यात बांग्ला लेखक **बुद्धदेव बसु** की चर्चित 'महाभारतेर कथा' (महाभारत की कथा) के हिन्दी में विलक्षण अनुवाद के लिए दिया जायेगा। यह भी एक संयोग ही है कि साहित्य अकादमी को इस बुजुर्ग साहित्यकार की याद तब आई जब उनकी अवस्था 85 साल की हो चुकी है और वह इन दिनों पक्षाघात से पीड़ित हैं। अकादमी की ओर से सितम्बर 2008 में आयोजित विशेष कार्यक्रम में डॉ० सिंह को *20 हजार रुपये* नकद व ताम्र फलक देकर सम्मानित किया जाएगा।

मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के पुरस्कारों की घोषणा

भोपाल। राज्य की साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् की पुरस्कार-योजना (वर्ष 2003-2005) के अन्तर्गत *पाँच अखिल भारतीय* और *दस प्रादेशिक पुरस्कारों* की घोषणा की गई है। घोषित पुरस्कार इस प्रकार हैं—

अखिल भारतीय पुरस्कार (प्रत्येक 25 हजार रुपये का) के अन्तर्गत **डॉ० पुष्पारानी गर्ग** को उनकी कृति 'शिल्पी है जल' हेतु '**माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार**' (निबन्ध), **डॉ० सत्येन कुमार** को 'तेंदुआ' हेतु '**गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार**' (कहानी), **श्री मिथिलेश्वर** को 'सुरंग में सुबह' हेतु '**वीरसिंह देव पुरस्कार**' (उपन्यास), **डॉ० सन्तोष कुमार तिवारी** को 'अज्ञेय से अरुण कमल' हेतु '**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार**' (आलोचना) और **श्री बलवीर सिंह 'करुण'** को 'मैं द्रोणाचार्य बोलता हूँ' हेतु '**पं० भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार**' (कविता) तथा ***प्रादेशिक पुरस्कार*** (प्रत्येक 21 हजार रुपये का) के अन्तर्गत **सुश्री निर्मला भुराड़िया** को 'ऑब्जेक्शन मी लॉर्ड' हेतु '**पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार** (उपन्यास), **श्री मनोहर काज़ल** को 'इनकिलाब जिंदाबाद' हेतु **सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार** (कहानी), **डॉ० कृष्ण गोपाल मिश्र** को 'महाबली छत्रसाल' हेतु '**श्रीकृष्ण सरल पुरस्कार**' (कविता), '**डॉ० श्यामसुन्दर दुबे**' को 'संस्कृति, समाज और संवेदना' हेतु **आचार्य नंददुलारे वाजपेयी पुरस्कार** (आलोचना), **डॉ० सुरेश शुक्ल 'चन्द्र'** को 'अर्द्धनारीश्वर' हेतु '**हरिकृष्ण प्रेमी पुरस्कार**' (नाटक/एकांकी), **श्री प्रतापराव कदम** को 'यह बाजार काल' हेतु '**शरद जोशी पुरस्कार**' (व्यंग्य, ललित निबंध, आत्मकथा, संस्मरण आदि), **श्री श्रीराम मिश्रा** को 'श्यामला हिल्स' हेतु '**दुष्यंत कुमार पुरस्कार**' (प्रदेश के लेखक की पहली कृति), **डॉ० धर्मेन्द्र पारे** को 'निमाड़ी गाथा रायसल' हेतु '**ईसुरी पुरस्कार**' (लोकभाषा विषयक), **डॉ० रामवल्लभ आचार्य** को 'गाते गुनगुनाते' हेतु '**जहूर बख्श पुरस्कार**' (बाल साहित्य) और **डॉ० अनिल गजभिये** को 'मध्यप्रदेशीय मराठी साहित्यांचा परामर्श' हेतु '**ताम्बे पुरस्कार**' (मराठी साहित्य की सम्पूर्ण सर्जनात्मक विधाएँ) दिये जायेंगे।

अम्बिकाप्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार

भोपाल। शीर्ष ऐतिहासिक उपन्यासकार, कवि, लेखक एवं चित्रकार स्व० अम्बिकाप्रसाद दिव्य की स्मृति में विगत ग्यारह वर्षों से दिये जा रहे प्रतिष्ठा पुस्कारों की घोषणा 13 जनवरी 2008 को भोपाल में हुई। दिव्य पुरस्कारों के संयोजक **श्री जगदीश किंजल्क** ने बताया कि वर्ष 2007 हेतु '**ग्यारहवाँ अम्बिकाप्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार**' *5000/- रुपए* राशि का **डॉ० शिवदास पाण्डेय** (मुजफ्फरपुर) को उनके उपन्यास 'द्रोणाचार्य' के लिए तथा प्रत्येक *2100/- रुपए* राशि का **श्रीमती चमेली जुगरान** (दिल्ली) को उनके कथा संग्रह 'उत्तर सूनामी' के लिए, **श्री राम मेश्राम** (भोपाल) को उनके ग़ज़ल संग्रह 'शोलों के फूल' के लिए, **डॉ० सुरेश निर्मल** (गाजियाबाद) को उनके निबन्ध संग्रह 'हिन्दू धर्म, प्रतीक और मिथक' के लिए, **श्री साबिर हुसैन** (खीरी) को उनके बाल कथा संग्रह 'नूपुर नक्षत्र' के लिए दिया जायेगा।

पुरस्कारों की घोषणा श्री विजय वाते ने की। सर्वश्री कृष्णानन्द (पटना), डॉ० श्याम सखा 'श्याम' (रोहतक), श्री राम तैलंग (भोपाल), श्री राजेन्द्र नागदेव (दिल्ली), श्री मुकुन्द कौशल (दुर्ग), श्री योगेश त्रिपाठी (रीवा), श्री महावीर रवांल्टा (धरपा), श्रीराम ठाकुर दादा एवं श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव (जबलपुर), श्री शम्भूशरण शुक्ल 'अमीत' (पीलीभीत), श्री रमेशचन्द्र पन्त (अल्मोड़ा), श्री जाकिर अली रजनीश (लखनऊ), डॉ० रमेश चन्द्र खरे (दमोह), श्री प्रबोधकुमार गोविल (वनस्थली), श्री सुखदेव नारायण (सुपौल) एवं श्री कमलकान्त सक्सेना (भोपाल) को उनकी कृतियों के लिये **दिव्य-रजत-अलंकरण** देने की भी घोषणा की गई।

डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी सम्मानित

रायपुर। 1978 से नियमित रूप से प्रकाशित देश की चर्चित साहित्यिक पत्रिका 'दस्तावेज' (गोरखपुर) के सम्पादक हिन्दी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष, 1940 में कुशीनगर जनपद में जन्मे **डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी** को '**पं० बृजलाल द्विवेदी स्मृति पत्रकारिता सम्मान**' प्रदान करने की घोषणा की गयी है।

सम्मान समिति की संयोजक **भूमिका द्विवेदी** के अनुसार इस राष्ट्रीय सम्मान के अन्तर्गत किसी साहित्यिक पत्रिका का श्रेष्ठ सम्पादन करनेवाले सम्पादक को *11 हजार रुपए*, शाल, श्रीफल, सम्मान पत्र एवं प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया जाता है। गत वर्ष यह सम्मान वीणा (इंदौर) के सम्पादक रहे **डॉ० श्यामसुन्दर व्यास** को दिया गया था।

प्रो० शर्मा को मिला 'नरेश मेहता वाङ्मय पुरस्कार'

कबीर नगर, वाराणसी निवासी व डॉ० हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्य प्रदेश) के दर्शन विभाग के **प्रो० अम्बिकादत्त शर्मा** को मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा स्थापित '**नरेश मेहता वाङ्मय पुरस्कार**' से सम्मानित किया गया है। प्रो० शर्मा को पुरस्कार के तहत *31 हजार रुपये* की राशि, सम्मान पत्र, अंगवस्त्रम् व श्रीफल भेंट किया गया।

बलिया के 'अनारी' को 'राहुल सांकृत्यायन' पुरस्कार

भोजपुरी गीतों के प्रख्यात गीतकार **बृजमोहन प्रसाद 'अनारी'** को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने वर्ष 2004 में प्रकाशित उनके काव्य 'आसरा के दियता' के लिए 14 फरवरी को '**राहुल सांकृत्यायन नामित पुस्कार**' देने की घोषणा की है। भोजपुरी साहित्य के इस सर्वोच्च पुरस्कार के अन्तर्गत उन्हें *बीस हजार* की धनराशि के साथ प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जायेगा। इसके पूर्व 2003 में प्रकाशित उनके भोजपुरी काव्य 'जिनगी के थाती' पर भी संस्थान द्वारा उन्हें 'भिखारी ठाकुर सर्जना पुरस्कार' प्रदान किया गया था।

सत्यनारायण को 'आचार्य निरंजननाथ' सम्मान

राजसमंद (राजस्थान)। मुख्य अतिथि प्रख्यात हिन्दी कवि प्रो० नंद चतुर्वेदी के सान्निध्य एवं वरिष्ठ कथाकार डॉ० हेतु भारद्वाज की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में विगत 24 फरवरी 2008 को 9वाँ '**आचार्य निरंजननाथ सम्मान**' (वार्षिक) हिन्दी के प्रतिष्ठित कथाकार **सत्यनारायण** को उनके कथा संग्रह 'सितम्बर में रात' हेतु दिया गया। निर्णयक मण्डल के सदस्यों में विद्वान आलोचक डॉ० दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, सुप्रसिद्ध कथाकार स्वयं प्रकाश एवं युवा कवि एवं आलोचक नरेन्द्र निर्मल थे।

सम्मान के अन्तर्गत प्रशस्ति पत्र के अतिरिक्त *15000/-* रु० की नकद राशि, शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिह्न भेंट किया जाता है।

के डी सिंह को पुरस्कार

वाराणसी। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने जनपद में नियुक्त एआरटीओ (प्रशासन) **के डी सिंह** का उनकी पुस्तक 'शेष अगले पृष्ठ पर' हेतु '**मोहन राकेश स्मृति युवा लेखन पुरस्कार**' के लिए चयन किया है। पुरस्कार के रूप में उन्हें *20 हजार रुपये* की राशि दी जाएगी।

श्याम बेनेगल को 'हकीम खां सूर' पुरस्कार

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउंडेशन के इस वर्ष होने वाले वार्षिक अलंकरण समारोह में '**कर्नल जेम्स टॉड पुरस्कार**' लेखक **विलियम डेलरिंपल** को, '**हल्दी घाटी पुरस्कार**', पत्रकार **तवलीन सिंह** को '**हकीम खां सूर पुरस्कार**', फिल्मकार एवं राज्यसभा सदस्य **श्याम बेनेगल** को, समाजसेवी **जगत मेहता** को, '**महाराणा उदय सिंह पुरस्कार**', वैज्ञानिक एवं राज्यसभा सदस्य **डॉ० कृष्णा स्वामी कस्तूरीरंगन** को और '**पन्नाधाय पुरस्कार**' **अरुणा राय** को प्रदान किया जायेगा।

'मलखान सिंह सिसौदिया कविता' पुरस्कार

अलीगढ़। गत दिनों हिन्दी मासिक पत्रिका 'वर्तमान साहित्य' के तत्त्वाधान में प्रथम मलखान सिंह सिसौदिया पुरस्कार समारोह, अलीगढ़ में हुआ। प्रसिद्ध कवि केदारनाथ सिंह की अध्यक्षता में युवा कवियों को सम्मानित करने के लिए स्थापित '**मलखान सिंह सिसौदिया कविता पुरस्कार**' युवा कवि **श्री अशोक तिवारी** के कविता संग्रह 'सुनो अदीब' को दिया गया। कवि केदारनाथ ने कहा कि 'कविता अब अपने परम्परागत केन्द्रों से निकलकर छोटे शहरों और ग्रामीण अंचलों में भी जगह बना रही है।

'मिथिला रत्न' सम्मान

कोलकाता। चौथे अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन में विभिन्न भाषाओं के साहित्यकारों को '**मिथिला रत्न सम्मान**' से सम्मानित किया गया, 2003 में 22 दिसम्बर को मैथिली संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल हुई थी। उसी ऐतिहासिक दिवस के उपलक्ष्य में हर वर्ष अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन का आयोजन होता है। **मुखोपाध्याय** सहित साहित्य अकादमी के पूर्व सचिव **इंद्रनाथ चौधरी**, *तमिल* के **डॉ० आर० रामचंद्रन**, **केके कोचुकेसी** (मलयालम), **जी कुमारप्पा** (कन्नड़), **रामचंद्र मूर्मू** (संथाली) आदि को विभिन्न भाषा एवं अन्य क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए '**मिथिला रत्न**' सम्मान दिया गया।

डॉ० अमरसिंह वधान को 'विद्या वाचस्पति' व 'राष्ट्रीय सारस्वत' सम्मान

साहित्यिक-सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश) एवं हिन्दी भाषा सम्मेलन, पटियाला द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित राष्ट्रीय अलंकरण समारोह में हिन्दी लेखक **डॉ० अमरसिंह वधान** को '**विद्या वाचस्पति**' और केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनंतपुरम द्वारा आयोजित साहित्य सम्मेलन में *दस हजार रुपये* राशि के '**राष्ट्रीय सारस्वत सम्मान**' से विभूषित किया गया। इस अवसर पर अकादमी के अध्यक्ष **प्रोफेसर एन० चन्द्रशेखरन नायर** ने डॉ० वधान की नव प्रकाशित पुस्तक 'गुरु ग्रन्थ साहिब में भक्तों की वाणी' का लोकार्पण किया।

डॉ० हरिप्रसाद दुबे को चित्रकूट में 'सारस्वत' सम्मान

प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा चित्रकूट में आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में साहित्य सेवी और वरिष्ठ स्तम्भकार **डॉ० हरिप्रसाद दुबे** को मुख्य अतिथि प्रो० ज्ञानेन्द्र सिंह, कुलपति, ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट ने '**सारस्वत सम्मान**' से विभूषित किया। रामायण मेला के लोहिया प्रेक्षागृह में डॉ० सिंह ने प्रशस्ति पत्र अंग वस्त्रम्, मूर्ति-प्रतीक चिह्न प्रदान किया।

डॉ० उदय पुरस्कृत

सारनाथ (हरनारायण विहार) निवासी पीजी कालेज, भुड़कुड़ा (गाजीपुर) में हिन्दी विभागाध्यक्ष **डॉ० उदयप्रताप सिंह** को उनकी पुस्तक 'आलोचना की अपनी परम्परा' के लिए '**सारस्वत पुरस्कार**' से सम्मानित किया गया है। पिछले दिनों अखिल भारतीय साहित्य परिषद के नई दिल्ली में आयोजित 12वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री **डॉ० मुरली मनोहर जोशी** ने पुरस्कार प्रदान किया।

अशोक चक्रधर को 'उपलब्धि-2007' सम्मान

लखनऊ। अखिल भारतीय मंचीय कवि पीठ के तत्वावधान में कवि कैलाश गौतम की स्मृति में गाँधी प्रेक्षागृह में शनिवार 23 फरवरी को आयोजित समारोह में मशहूर हास्य कवि **प्रो० अशोक चक्रधर** को '**उपलब्धि-2007**' सम्मान से सम्मानित किया गया। साथ ही समारोह में साहित्यसृजन करने वाले हास्य व्यंग्य की धारा में विशेष योगदान देने वाले साहित्य सेवियों को भी सम्मानित किया गया।

डॉ० अम्बिकादत्त शर्मा और पंखुरी सिन्हा सम्मानित

19 जनवरी को भोपाल के हिन्दी भवन में मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और हिन्दी भवन न्यास द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य विद्वान महामहोपाध्याय **डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी** ने *31,000 रुपये* की पुरस्कार राशि, शॉल, श्रीफल और स्मृतिचिह्न से डॉ० हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र के प्रवाचक **डॉ० अम्बिकादत्त शर्मा** को प्रो० गोविन्दचन्द्र पाण्डे की अध्यक्षता में गठित चयन समिति द्वारा चयनित हिन्दी वाङ्मय को समृद्ध करने वाली उनकी तीन महत्त्वपूर्ण कृतियों 'समेकित दार्शनिक विमर्श', 'समेकित अद्वैत विमर्श' व 'भारतीय दर्शन के पचास वर्ष' पर वर्ष 2007 के '**श्री नरेश मेहता-स्मृति-वाङ्मय-सम्मान**' से तथा मुजफ्फरपुर (बिहार) की युवा-कथा लेखिका **पंखुरी सिन्हा** को विख्यात कथा लेखिका श्रीमती चित्रा मुद्गल की अध्यक्षता में सम्पन्न निर्णायक समिति की बैठक में चयनित उनके प्रथम कहानी संग्रह 'कोई भी दिन' के लिए वर्ष 2007 के '**श्री शैलेश मटियानी-स्मृति-कथा-सम्मान**' के रूप में *11,000 रुपये* की पुरस्कार राशि, शॉल, श्रीफल और स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

डॉ० त्रिवेदी को 'मानस संगम विशिष्ट' तथा 'प्राइड ऑफ उत्तराखण्ड' सम्मान

कानपुर। मानस संगम के 39वें समारोह में उत्तराखण्डवर्ती देहरादून के निवासी प्रख्यात साहित्यकार **डॉ० गिरिजा शंकर त्रिवेदी** को उनकी नव प्रकाशित कृति 'तुलसी के मंगल दल' की निर्णीत उत्कृष्टता के लिए '**मानस संगम विशिष्ट सम्मान 2007**' प्रदान किया गया और देहरादून की एक उच्च स्तरीय जन संस्था 'दून सिटीजन्स कौंसिल' द्वारा गत 06 जनवरी 2008 को उन्हें '**प्राइड ऑफ उत्तराखण्ड**' के सम्मान से विभूषित किया गया। यह सम्मान अंगवस्त्र, स्मृति चिह्न और प्रशस्ति पत्र के रूप में प्रदेश के राज्यपाल श्री बी०एल० जोशी द्वारा प्रदान किया गया।

विष्णु नागर को 'व्यंग्यश्री' सम्मान

नई दिल्ली। हिन्दी भवन द्वारा बारहवाँ-'**व्यंग्यश्री सम्मान**' 13 फरवरी को जाने-माने कवि,

लेखक, पत्रकार एवं व्यंग्य लेखक, हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह की पत्रिका 'कादम्बिनी' के कार्यकारी सम्पादक **विष्णु नागर** को उनके सतत् और उत्कृष्ट व्यंग्य-लेखन के लिए हिन्दी भवन न्यास समिति के अध्यक्ष त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी एवं मुख्य अतिथि वरिष्ठ रचनाकार कुँवर नारायण के सान्निध्य में दिया गया। सम्मान के तहत 31 हजार रुपये, प्रशस्ति पत्र, रजत श्रीफल, वाग्देवी की प्रतिमा, शाल और पुष्पहार भेंट किया गया।

यह पुरस्कार हास्य-व्यंग्य विनोद के यशस्वी रचनाकार पण्डित गोपाल प्रसाद व्यास की जयन्ती के अवसर पर 1997 से प्रतिवर्ष दिया जा रहा है।

सक्सेना को 'संगीत नाटक अकादमी रत्न' अवार्ड

नई दिल्ली। राष्ट्रपति **प्रतिभा पाटिल** ने मंगलवार, 26 फरवरी को 2007 के लिए **प्रो० एस०के० सक्सेना** को **'संगीत नाटक अकादमी रत्न'** (फैलोशिप) और 33 व्यक्तियों को **'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार'** से सम्मानित किया।

उदयभानु हंस को 'सारस्वत सम्मान'

इंदौर में 10 दिवसीय साहित्य महाकुम्भ के अवसर पर हरियाणा के राज्य कवि **श्री उदयभानु हंस** को हिन्दी साहित्य जगत् की विशिष्ट विभूति के रूप में **'सारस्वत सम्मान'** से अलंकृत किया गया। जिसके अन्तर्गत अपार जनसमूह के मध्य उन्हें श्रीफल, शॉल तथा चाँदी की एक बड़ी मुद्रा सहित 11 हजार की राशि भेंट की गयी।

कृष्णा सोबती ने 'व्यास सम्मान' ठुकराया

वरिष्ठ साहित्यकार कृष्णा सोबती ने बिड़ला फाउण्डेशन का व्यास सम्मान लेने से इनकार कर दिया है। सोबती ने फाउण्डेशन के निदेशक निर्मल भट्टाचार्य के नाम भेजे गए महज एक वाक्य के खत में निर्णायक मण्डल के प्रति कृतज्ञता जाहिर करने के साथ इस सम्मान को स्वीकार करने में अपनी असमर्थता जताई। इस बारे में नवभारत टाइम्स से बातचीत में इस वयोवृद्ध साहित्यकार ने कहा कि मैं जब लगभग सफर पूरा कर चुकी हूँ तो इस उम्र में अवार्ड का कोई अर्थ नहीं है। मुझसे उम्र में छोटी कई पीढ़ियाँ हैं जिन्हें अवॉर्ड दिए जाने चाहिए।

उन्होंने कहा कि संस्थानों में हिन्दी संसार को अपने कामकाज में बदलाव लाना चाहिए और रचनाकार से किसी पुरस्कार की घोषणा से पहले स्वीकृति ली जानी चाहिए। यह नहीं समझा जाना चाहिए कि लेखक कभी भी किसी पुरस्कार की घोषणा से खुश हो जाता है।

काशी के सशक्त हस्ताक्षर

विद्वान लेखक एवं प्राध्यापक : एक रूपरेखा

डॉ० बदरीनाथ कपूर

एम०ए०, पी०-एचडी०

[*अकालगढ़, गुजरानवाला (पाकिस्तान) में 16 सितम्बर 1932 को जन्म*]

अकादमिक गतिविधियाँ : सहायक सम्पादक के रूप में 'मानक हिन्दी कोश' का 1957 से 1965 तक सम्पादन कार्य, अतिथि प्रोफेसर के रूप में 1983 से 1986 तक अध्यापन टोक्यो विश्वविद्यालय में।

प्रकाशित रचनाएँ : (क) मौलिक (भाषा-विज्ञान, कोश एवं व्याकरण)—बेसिक हिन्दी, हिन्दी पर्यायों का भाषागत अध्ययन, वैज्ञानिक परिभाषा कोश, आज-कल की हिन्दी, राजकमल अंग्रेजी-हिन्दी पर्यायवाची कोश, शब्द-परिवार कोश, हिन्दी अक्षरी, लोकभारती मुहावरा कोश, परिष्कृत हिन्दी व्याकरण, सहज हिन्दी व्याकरण, लिपि, वर्तनी और भाषा, नूतन पर्यायवाची कोश, हिन्दी व्याकरण की सरल पद्धति, आधुनिक हिन्दी प्रयोग कोश, बृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश, व्यावहारिक अंग्रेजी-हिन्दी कोश, हिन्दी मुहावरे और लोकोक्ति कोश, हिन्दी प्रयोग कोश, व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी कोश, नवशती हिन्दी व्याकरण **(ख) जीवनियाँ**—जो पीर पराई जाने रे, नीब करौरी के बाबा, धन्य-धन्य माँ तरेसा **(ग) सहसम्पादन**—मीनाक्षी हिन्दी-अंग्रेजी कोश, मीनाक्षी अंग्रेजी-हिन्दी कोश, कोश विज्ञान। **(घ) अनुवाद**—लोहगढ़ (श्री हरनाम दास सहराई) पंजाबी से, नरभक्षी बाघों का शिकार (श्री बी०एन० सिंह) अंग्रेजी से, शैक्षणिक विचारधारा (डॉ० सैयदैन), भारतीय मुसलमान (डॉ० रामगोपाल), रामायण (स्वामी चिद्भवानंद), महाभारत (स्वामी चिद्भवानंद), योग वासिष्ठ (स्वामी वेंकटेसानंद)

(ङ) संशोधन, परिवर्धन और पुनर्सम्पादन—आचार्य रामचंद्र वर्मा का वैचारिक कोश, उर्दू हिन्दी कोश, हिन्दी प्रयोग, कोशकला

पुरस्कार/सम्मान : उत्तर प्रदेश शासन से वैज्ञानिक परिभाषा कोश (1966), आज-कल की हिन्दी (1967)।

सौहार्द सम्मान (1997), अन्नपूर्णानन्द अलंकरण (1997), काशी रत्न (1998), मदनमोहन मालवीय सम्मान (1999), विद्याभूषण सम्मान (2000), सेवक सम्मान (2004), निगारे बनारस (2004), कोशकार सम्मान (2005), श्रेष्ठ कोशकार सम्मान (2005)

क्या खोया/क्या पाया : आपा खोया बुढ़ापा पाया।

आगामी योजनाएँ : 'वाक्य संरचना और विश्लेषण' पर कार्य प्रगति पर।

महत्त्वपूर्ण संदेश : जितनी उन्नत, समृद्ध और महिमामंडित हमारी भाषा होगी उतना ही उन्नत, समृद्ध और महिमामंडित हमारा राष्ट्र भी होगा।

सम्पर्क : 'शब्दलोक', 47 लाजपतनगर, वाराणसी फोन : (मोबाइल) 9305288321

अस्सी की अड़ी पर 70 के हुए डॉ० काशीनाथ

चंदौली के जीयनपुर गाँव में जन्मे कथाकार डॉ० काशीनाथ 70 साल पहले आज ही के दिन चंदौली जिले के जीयनपुर गाँव में जन्मे थे। मगर बीते दशक से उनका जन्मदिन हर साल वाराणसी के अस्सी चौराहे पर बलदेव, पप्पू, हजारी से होते हुए अब पोई चाय वाले की दुकान में खांटी बनारसी अंदाज में मनता है।

पोई इनके कई उपन्यासों का पात्र है और पाठक भी। लिहाजा उसकी दुकान नये साल की पहली शाम को साहित्यकारों, लेखकों, कवियों से भर गयी। किसी ने गुब्बारा टांगा तो किसी ने डाक्टर साहब की उक्तियों का पोस्टर बनाया। चौराहे पर लगे असहज जाम के शोरगुल के चलते माइक-भोंपू भी आ गया। और माइक का तार ऐसा कि कोई चौराहे से भी बोलना चाहे तो माइक उसके हाथ में जाने को तैयार। डॉ० चौथीराम की अध्यक्षता में हुए समारोह में ताजा मुद्दा यह था कि वह शतायु हों और इसी तरह से धुँआधार लिखते रहें। बाकी शिल्प, गद्य, एस्थेटिक्स, विषयवस्तु वगैरह बाद में देखा जाएगा। समालोचक कृष्णकुमार से लगायत डॉ० वाचस्पति, शिवकुमार पराग, डॉ० विनोद तिवारी, आशीष राय, दीनबंधु तिवारी, कौशिक रवीन्द्र उपाध्याय, सलीम शिवालवी, जयनारायन मिश्रा, एडवोकेट वीरेन्द्र श्रीवास्तव तक ने यही कहा कि अस्सी और काशी एक दूसरे के पर्यायवाची हैं लिहाजा साहित्य की संवेदना और मारक क्षमता पर बात होनी चाहिए और इसका संकट फिलहाल डाक्टर काशीनाथ के लेखन में तो नहीं दिखता। संयोजक डॉ० गया सिंह के सुझाव पर एक प्रस्ताव पारित हुआ कि अगले साल से इस मौके पर साल के चर्चित नवोदित रचनाकारों की रचनाओं का पाठ और उस पर चर्चा भी होगी।

संगोष्ठी/लोकार्पण

'सूचना के चेक को मीडिया व कोर्ट रूपी बैंक में भुनाना जरूरी'

सूचना का अधिकार (आरटीआई) वह अस्त्र है जिसके माध्यम से लोकतंत्र को और सुदृढ़ व प्रभावी बनाया जा सकता है। इसका प्रयोग करके महज सूचनाएँ हासिल करना बड़ी बात नहीं है बल्कि सूचना रूपी चेक को सम्बन्धित बैंकों में भुनाना जरूरी है। दो ही बैंक हैं जहाँ प्राप्त सूचना रूपी चेक भुनाया जा सकता है—एक है न्यायालय और दूसरा मीडिया। बेहतर भारत के निर्माण में लोगों का संजीदापन और आरटीआई का सही इस्तेमाल कारगर साबित हो गया है। यह विचार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में केन्द्रीय सूचना आयुक्त डॉ० ओ पी केजरीवाल ने व्यक्त किये। पत्रकारिता के छात्रों के बीच 'मीडियाकर्मियों के लिए आरटीआई का महत्त्व' विषयक विशेष व्याख्यान में डॉ० केजरीवाल ने कहा कि किसी भी मुद्दे की जानकारी के लिए यह बेहतरीन स्रोत है। इस अधिनियम का सही प्रयोग करके न केवल समाज में फैली विकृतियों पर अंकुश लगाया जा सकता है बल्कि एक बेहतर सामाजिक प्राणी का जज्बा भी निभाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि पिछले पाँच दशक में जितना विकास सूचनाक्रांति के क्षेत्र में आया है उतना 5 लाख सालों में भी नहीं हुआ। बाँस पर एरियल टाँगकर रेडियो सिलोन सुना था आज पाकिट में अनेक केन्द्रों से गीत बजते हैं। इस विकास का कुछ दुष्प्रभाव भी पड़ा है। सबसे अधिक दुष्प्रभाव मीडिया के क्षेत्र में देखने को मिल रहा है। **देखा जाए तो पत्रकार महज खबर पहुँचाने में लग गये हैं। अध्ययन व पुस्तकों के मनन से इनका नाता टूट गया है।** लिहाजा खबरों में गम्भीरता का लोप हो रहा है। माहौल में हास्यपुट जोड़ते हुए बोले, ऐश्वर्या ने किस कलर की साड़ी पहनी, शाहरूख ने क्या खाया इसके माध्यम से टीआरपी बढ़ाने का खेल चल रहा है जबकि गम्भीर मुद्दों को महज कुछ क्षण की खबर बनाकर कोरम पूरा हो रहा है।

लोक-साहित्य पत्रिका 'मड़ई' का विमोचन

बिलासपुर। प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी वार्षिक लोक साहित्य पत्रिका 'मड़ई' 2007 का विमोचन छत्तीसगढ़ की संस्कारधानी बिलासपुर में परम्परानुरुप आयोजित 30वें रावत नाच महोत्सव में किया गया।

पिछले दो दशकों से अधिक समय से लोक के रेखांकन में सक्रिय 'मड़ई' का यह इक्कीसवाँ अंक समकालीन लोक चिंतन के महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों की श्रृंखला की नवीनतम कड़ी है। इस अंक में प्रकाशित 61 आलेखों में लोक के विज्ञान व दर्शन की समकालीन पृष्ठभूमि में विवेचना की गयी है। 'मड़ई' में प्रकाशित हिमालय से लेकर सुदूर सागर तटों तक फैले भारत के लोकांचलों के लोक साहित्य, लोककला, लोकरंग, लोकजीवन आदि पर देश के मान्य विद्वानों के लेख/चिंतन भारतीय लोक को सर्वथा नूतन वैज्ञानिक दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं। आज 'मड़ई' लोक संस्कृति को आधुनिक विवेक सम्मत वैज्ञानिक दिशा की ओर ले जाने का प्रयास तो है ही साथ ही उत्तर आधुनिक बाजारवाद द्वारा संचालित सांस्कृतिक प्रदूषण के प्रतिरोध एवं प्रतिपक्ष हेतु एक वैचारिक मंच भी है। लगभग 300 पृष्ठों की यह वार्षिक पत्रिका नि:शुल्क वितरण के लिए है।

हिन्दी के लिए वैचारिक स्वराज आवश्यक

संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य विद्वान महामहोपाध्याय **डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी** ने कहा है कि हिन्दी की प्रगति के लिए भारत सरकार और राज्य सरकार द्वारा काफी अधिक बजट रखा जाने के पश्चात् भी हिन्दी की अभी अपेक्षित प्रगति नहीं हुई है। वे मानते हैं कि हिन्दी देश के अतीत से जुड़कर ही सही दिशा में प्रगति कर सकती है। डॉ० द्विवेदी 19 जनवरी को भोपाल के हिन्दी भवन में मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और हिन्दी भवन न्यास द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित पाँचवीं शरद व्याख्यानमाला में मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित कर रहे थे। संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान डॉ० द्विवेदी ने अपने विचारोत्तेजक व्याख्यान में कहा कि हर विश्वविद्यालय में हिन्दी का विभाग है। इसके बावजूद हिन्दी की तेजी से प्रगति न होने का मुख्य कारण यह रहा है कि हिन्दी के पुरोधाओं ने उसको अपने अतीत से काट दिया है। ऐसी स्थिति निर्मित कर दी गई है कि हिन्दी को आज न तो अपने अतीत की आवश्यकता रह गई है और न वर्तमान की। यह काफी दु:खद स्थिति है। हिन्दी के लिए प्रबल आन्दोलन चलाने की आवश्यकता है। बजट रख देने मात्र से हिन्दी आगे नहीं बढ़ेगी। पूरे विश्व का साहित्य, चाहे वह किसी भी भाषा का हो, एक है। आपने 'भारतीय साहित्य में उपनिषद् चेतना' विषय पर शास्त्रों के उद्धरण देते हुए विद्वतापूर्ण व्याख्यान दिया। इसी सन्दर्भ में आपने कहा कि भारत को संस्कारों की स्वतंत्रता अभी प्राप्त करनी बाकी है। इसके लिए हमें अपने शास्त्रों में जो मार्ग दिखाए गए हैं उनकी ओर लौट कर अपनी मानसिकता को सही दिशा देनी होगी।

व्याख्यानमाला में '*वैचारिक स्वराज का भाषाई राजपथ*' विषय पर व्याख्यान देते हुए श्री नरेश मेहता वाङ्मय सम्मान से सम्मानित हुए दर्शन शास्त्र के विद्वान **डॉ० अम्बिकादत्त शर्मा** ने कहा कि हमने स्वतंत्रता के बाद स्वतंत्र्योत्तर दासता स्वेच्छा से ओढ़ ली है। वैचारिक स्वराज को प्राप्त करने के लिए पश्चिम से जो विचार हम लगातार ग्रहण कर अपने मानसिक विकास को गलत दिशा देने में लगे हैं उससे हमें मुक्त होना पड़ेगा। हिन्दी को अर्थवान और सक्षम भाषा बनाकर ही हम भाषाई राजपथ पर आगे बढ़ सकते हैं। इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि हिन्दी अपनी कमियों को दूर करके वैचारिक स्वराज की स्थापना का माध्यम बन सकती है। आयातित विचारों से वैचारिक स्वराज की स्थापना की कल्पना दिवास्वप्न के अलावा कुछ नहीं है। आपने इस बात को रेखांकित किया कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के पीछे भारत की आत्मा को प्रतिष्ठापित करने का उद्देश्य था।

राजभाषा घोषित किये जाने के पश्चात् भी हिन्दी की उपेक्षा और अंग्रेजी को बढ़ावा देने की स्थिति पर गहरी चिन्ता प्रगट करते हुए डॉ० शर्मा ने कहा कि हिन्दी की जिसमें भारत की पुरानी सांस्कृतिक विरासत विद्यमान है, उसकी उपेक्षा करने के कारण ही स्वतंत्र भारत का बौद्धिक वर्ग अपने अतीत से कट गया है। खेद की बात है कि देश के बुद्धिजीवी अतीत के भारत को विस्मृत करने के लिए पश्चिम के ज्ञान को अधिक महत्व दे रहे हैं। आपने विश्वास व्यक्त किया कि आज भी संकल्पबद्ध होकर काम करें तो वैचारिक स्वराज का संकल्प प्राप्त हो सकता है। अभी ज्यादा विलम्ब नहीं हुआ है।

व्याख्यानमाला की विशिष्ट वक्ता **डॉ० विजयलक्ष्मी त्रिवेदी** ने 'नारी-मुक्ति आन्दोलन' विषय पर कहा कि भारत का नारी-मुक्ति आन्दोलन पुरुष वर्ग के विरोध में बिल्कुल नहीं है। इस बारे में जो भ्रम है वह मिटना ही चाहिए। आपने शास्त्रों का हवाला देते हुए कहा कि हमारे यहाँ स्त्री को कभी भी पुरुष से किसी प्रकार से भिन्न नहीं माना गया है। दोनों में कोई आधारभूत भिन्नता कभी देखी नहीं गई। आपने आह्वान किया कि स्त्री-पुरुष में भेदभाव बरतने वाली मानसिकता को बदलने का प्रभावशाली ढंग से प्रयास होना चाहिए। पश्चिम के नारी-मुक्ति आन्दोलन में अहम का संघर्ष है। पुरुष के बराबर बनने के चक्कर में हमारे देश की महिलाएँ भी अपनी क्षमताओं को गलत दिशाएँ दे रही हैं। पुरुष के विरुद्ध खड़े होने की बात भारतीय चिंतन में स्वीकृत नहीं है। दोनों एक-दूसरे के संपूरक रहे हैं। पुरुष के उन्नयन में जिस तरह स्त्री का योगदान रहता है उसी तरह स्त्री के उन्नयन में भी पुरुष के योगदान को कम करके नहीं आंका जा सकता। आज स्त्रियाँ विभिन्न क्षेत्रों में जो उन्नति कर रही हैं उसके पीछे उनके पिता, भाइयों और पति की निश्चित ही मदद रहती है।

विद्यानिवास ने लोक से साहित्य को जोड़ा

मीरजापुर। प्रख्यात साहित्यकार डॉ० विद्यानिवास मिश्र की जयंती पर के०बी०पी०जी० कॉलेज में हिन्दी विभाग की ओर से एक संगोष्ठी आयोजित की गयी। हिन्दी विभागाध्यक्ष **डॉ० सुधाकर उपाध्याय** ने कहा कि हिन्दी साहित्य में आचार्य की उपाधि आधे दर्जन से भी कम लोगों को दी गयी है। विद्यानिवास जी ने कभी किसी पद, उपाधि, यश और धन की लिप्सा नहीं रखी। न ही उन्होंने सिद्धान्तों और विचारों से समझौता किया। वे शास्त्रीय परम्परा के उन्हीं पक्षों के हिमायती थे, जिनकी बुनियाद ठोस और शाश्वत रही। लेकिन इसका आशय यह नहीं है कि वे समकालीन जीवन से पृथक थे। उनके निबन्धों, संस्मरणों, समीक्षाओं और भाषा सम्बन्धी रचनाओं में लोक पक्ष सदैव मुखर रहा।

अध्यक्षता करते हुए पूर्व प्राचार्य **डॉ० राम हरीश्वर सिंह** ने आचार्य मिश्र से जुड़े संस्मरण सुनाते हुए कहा कि वे जीवनगत शुचिताओं की तरह वैचारिक पवित्रता के भी हिमायती थे। हिन्दी विभाग के ही **डॉ० ज्योतीश्वर मिश्र** ने कहा कि आचार्य मिश्र ने शास्त्रों का नवनीत तो चखा ही था, लोक संस्कृति में भी काफी गहरे डूबे थे। आचार्यजी का स्पष्ट मत था कि शास्त्र यदि लोक हित नहीं करता तो वह बोझ मात्र बनकर रह जाता है। वे पाश्चात्य भाषाओं और संस्कृतियों से गहराई तक परिचित होने के बाद भी संस्कृत को सर्वाधिक उपयुक्त मानते थे। संचालन करते हुए डॉ० रमाशंकर शुक्ल ने कहा कि आचार्य मिश्र के अनुभव का संसार बहु आयामी था। वे एक साथ अध्यापक, सर्जक, पत्रकार, सम्पादक, प्रशासक, राजनेता और साहित्यकार थे। इसके अलावा वे एक गम्भीर अध्येता थे। उन्होंने जो खोजा, भोगा और पढ़ा उसे अपने साहित्य में आत्मसात करते हुए लिपिबद्ध कर दिया। के०बी० के ही हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ० अंबुज पाण्डेय ने कहा कि आचार्यजी की लालित्य योजना अद्वितीय रही है। आचार्य मिश्र मानते थे कि परम्परा बंधन नहीं है, बल्कि मार्गदर्शक है। **डॉ० शिशिर चन्द उपाध्याय** ने आचार्य मिश्र को काव्य की श्रद्धांजलि अर्पित की—'हिन्दी साहित्य के देदिप्यमान नक्षत्र/ लोक साहित्य के अनश्वर अक्षर पत्र।'

डॉ० देवेन्द्र पाण्डेय ने कहा 'मेरे राम का मुकुट भींग रहा है' निबन्ध में उन्होंने कौशल्या के माध्यम से राम, लक्ष्मण और सीता से अधिक उनके मुकुट, अंगवस्त्र और सिंदूर के भींगने पर चिंता जताई। क्योंकि मुकुट राजा का, अंगवस्त्र सेवक का और सिंदूर पत्नी के सुहाग का प्रतीक है। इस मौके पर आचार्य मिश्र के भतीजे और संस्कृत विभागाध्यक्ष **डॉ० अरविंद मिश्र** ने कहा कि 'मेरा गांव' निबन्ध में दलित महिला शिवधनी देवी के वैधव्य की शोकपूर्ण विवेचना से साफ होता है कि आचार्यजी रूढ़िवादी परम्पराओं में कतई विश्वास नहीं रखते थे और मानवता पर कुठाराघात उन्हें रंचमात्र भी बर्दाश्त नहीं था। धन्यवाद ज्ञापन प्राचार्य सी०बी० राय ने किया। संगोष्ठी में बिन्नानी महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० सच्चिदानन्द त्रिपाठी, राजशेखर शुक्ल ने भी विचार व्यक्त किये।

'नवनीत' के 56वें वर्ष में प्रवेश पर विशेषांक का लोकार्पण

'नवनीत' के भारतीय साहित्य विशेषांक के विमोचन समारोह में बायें से : श्री विश्वनाथ सचदेव, श्रीमती पुष्पा भारती, डॉ० रामजी तिवारी, श्री कन्हैयालाल नंदन, श्री नंदकिशोर नौटियाल

भले ही भारतीय साहित्य विभिन्न भाषाओं में रचा जा रहा है, लेकिन अनेकता में एकता का दर्शन यदि कहीं उजागर हो रहा है तो वह भारतीय साहित्य ही है। भारत की विभिन्न भाषाओं में रचा साहित्य मूल्यों-आदर्शों के स्तर पर सनातन परम्परा का प्रतीक है। 'नवनीत' ने इन भाषाओं के रचनाकारों को एक मंच पर लाकर इस परम्परा की महत्ता को रेखांकित किया है।

मुम्बई के भारतीय विद्या भवन में आयोजित समारोह में विभिन्न वक्ताओं ने इस आशय के विचार व्यक्त करते हुए 'नवनीत' पत्रिका को 56वें वर्ष में प्रवेश पर बधाई दी। इस उपलक्ष्य में पत्रिका ने जनवरी माह के अंक को विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया है। इस अंक में तेरह भारतीय भाषाओं के ज्ञानपीठ पुरस्कार द्वारा सम्मानित रचनाकारों की श्रेष्ठ रचनाओं के साथ-साथ उन्हीं भाषाओं के युवा रचनाकारों की रचनाएँ भी दी गयी हैं। विद्वान डॉ० रामजी तिवारी ने इस परिकल्पना को सार्थक पत्रकारिता का उदाहरण बताया। वरिष्ठ पत्रकार **डॉ० कन्हैयालाल नन्दन** ने कहा कि आज का 'नवनीत' बीते हुए कल के 'धर्मयुग' की याद दिलाता है। उन्होंने इस परम्परा को पत्रकारिता का आदर्श बताते हुए भारतीय विद्या भवन को ऐसी पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाइयाँ दीं। वरिष्ठ लेखिका **पुष्पा भारती** ने 'नवनीत' के इस विशेषांक को 'अद्‌भुत' बताते हुए भारतीय भाषाओं को साथ लाने के इस प्रयास की सराहना की। महाराष्ट्र हिन्दी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष **नन्दकिशोर नौटियाल** ने इस प्रयास को समय की ज़रूरत बताया। 'नवनीत' के सम्पादक **विश्वनाथ सचदेव** ने अतिथियों का स्वागत किया।

तुष्टिकरण की नीति संस्कृति-घातक

अखिल भारतीय साहित्य परिषद का 12वां राष्ट्रीय अधिवेशन विगत 28, 29 और 30 दिसम्बर को दिल्ली में हुआ। इसमें देशभर से 286 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। चार प्रवासी साहित्यकार अधिवेशन में विशेष रूप से शामिल हुए। अधिवेशन का सभारम्भ वरिष्ठ तमिल साहित्यकार **डॉ० बालशौरी रेड्डी** ने किया। मुख्य अतिथि थे पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री **डॉ० मुरली मनोहर जोशी**। अध्यक्षता परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष **डॉ० बलवन्त जानी** ने की।

डॉ० जोशी ने कहा कि अपनी परम्पराओं का पालन व संस्कृति और सभ्यता का सम्मान करनेवाले ही प्रगति करते हैं। परन्तु पश्चिमी सभ्यता व अंग्रेजियत के बढ़ते प्रभाव ने भारतीय परिवारों के आचार, विचार. शिष्टाचार और रिश्तों की परम्परा तक को नुकसान पहुँचाया है। इस प्रकार की परिस्थिति से निपटने में साहित्यकार महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। डॉ० जोशी ने प्रतिष्ठित साहित्यकारों को सम्मानित किया एवं 'साहित्य-परिक्रमा' के विशेषांक का लोकार्पण किया।

अधिवेशन के दूसरे दिन साहित्य कला परिषद्, दिल्ली के कलाकारों द्वारा प्रसिद्ध साहित्यकार जयशंकर प्रसाद की कृति 'कामायनी' पर आधारित नृत्यनाटिका का मंचन किया गया। मुख्य अतिथि **डॉ० सुब्रह्मण्यम स्वामी** ने कहा कि तुष्टीकरण की नीतियों व आतंकवाद के बढ़ते प्रभाव के कारण भारत को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए राष्ट्रहित में साहित्यकार तुष्टीकरण व आतंकवाद के खिलाफ अपनी कलम की धार को और तेज करें।

अधिवेशन में विभिन्न विषयों पर चर्चा सत्र हुए। वे थे—राष्ट्रीय जीवन की चुनौतियाँ : स्वरूप और समाधान, समकालीन लेखन और सांस्कृतिक अवमूल्यन की चुनौती, स्त्री विमर्श के निहितार्थ और उसका सामाजिक-पारिवारिक सन्दर्भ, साहित्य में आतंकवाद की उपेक्षा के निहितार्थ और भारतीय भाषाओं का विकृतिकरण और हमारा रचना समय।

वरिष्ठ साहित्यकार **डॉ० नरेन्द्र कोहली** ने कहा कि राष्ट्र व समाज के नवनिर्माण में साहित्यकारों का बहुत बड़ा योगदान होता है। इसलिए उन्हें कभी मूल्यों से समझौता नहीं करना चाहिए। समापन सत्र में मुख्य अतिथि थे प्रसिद्ध चिंतक श्री मनमोहन वैद्य। संगठन मंत्री **श्री सूर्यकृष्ण** ने अपने विशेष उद्‌बोधन में कहा कि साहित्यकार विशाल वटवृक्ष की तरह होता है। उसके हृदय में सम्मान पाने की ललक नहीं होती। उसकी प्रखर लेखनी से स्वत: ही उसकी ख्याति बढ़ जाती है। रचनाकारों को समाज को इतिहास का दर्पण दिखाना चाहिए।

'विश्व हिन्दी दिवस' समारोह का आयोजन

अहमदाबाद। गुजरात विद्यापीठ में महादेवभाई देसाई समाज सेवा महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा 'विश्व हिन्दी दिवस' समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के अध्यक्ष **डॉ० शैलेन्द्रकुमार शर्मा** ने कहा कि आज दुनिया का हर तीसरा व्यक्ति किसी न किसी भारतीय भाग का उपयोग कर रहा है एवं दुनिया का हर पाँचवाँ व्यक्ति हिन्दी भाषा का उपयोग करता है। उन्होंने कहा कि हमें किसी भाषा से डरने की जरूरत नहीं है, हमें जरूरत है मात्र अपनी आत्मशक्ति को जाग्रत करने की। हिन्दी विभाग की अध्यक्षा **डॉ० मालतीबेन दुबे** ने कहा कि पूरे विश्व में आज का दिन 'विश्व हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जा रहा है। विश्व हिन्दी सम्मेलन की शुरुआत 1975 में नागपुर में हुई, उसके बाद दिल्ली, मॉरिशस, लंदन, सूरीनाम और न्यूयॉर्क। इस प्रकार अभी तक कुल आठ 'विश्व हिन्दी सम्मेलनों' का आयोजन किया गया है। उन्होंने कहा कि आज के शुभ दिन पर हमें हिन्दी भाषा के उपयोग का व्रत लेना चाहिए।

'कहत कबीर' पुस्तक का विमोचन

अहमदाबाद। अहमदाबाद के तपोवन सोसायटी में गत दिनों श्री चन्द्रकान्त उपाध्याय लिखित 'कहत कबीर' पुस्तक का विमोचन प्रख्यात साहित्यकार डॉ० अम्बाशंकर नागर ने किया। डॉ० उपाध्याय गुजरात विद्यापीठ के कुमार विनय मन्दिर के प्राचार्य पद पर कार्यरत थे।

पुस्तक की समीक्षा करते हुए गुजरात विद्यापीठ के महादेव देसाई समाजसेवा महाविद्यालय की संयोजक डॉ० मालती दुबे ने कहा कि संत कबीर एक सच्चे समाज सुधारक थे। उन्होंने धर्म के आडम्बर की कड़ी आलोचना की। उन्होंने हिन्दू एवं मुसलमान दोनों को समान रूप से लताड़ा। उनके विचार आज अधिक प्रासंगिक हैं।

'समकालीन साहित्य एवं दलित-विमर्श' पर संगोष्ठी सम्पन्न

दिनांक 02 एवं 03 फरवरी को महाराजा हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरादाबाद में '*समकालीन साहित्य एवं दलित-विमर्श*' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संपोषित इस संगोष्ठी की अध्यक्षता लब्धप्रतिष्ठ कथाकार **नरेन्द्र कोहली** ने की। विशिष्ट वक्ता डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित (लखनऊ), डॉ० जयप्रकाश (चण्डीगढ़), डॉ० नरेश मिश्र (रोहतक), डॉ० श्यौराज सिंह 'बेचैन' (शिमला) थे। गोष्ठी में डॉ० मुकेश चन्द्र गुप्त (संयोजक), डॉ० प्रणव शर्मा 'शास्त्री' (पीलीभीत), डॉ० राजेश पाण्डेय (उरई), डॉ० शिवकुमार शर्मा (ग्वालियर), डॉ० हितेन्द्र मिश्र (गाज़ीपुर), डॉ० राकेश शुक्ल (कानपुर), डॉ० निरंजन राय (राय बरेली), डॉ० राखी सिंह (जबलपुर) सहित पचास प्रतिभागियों ने अपना शोधपत्र पढ़ा।

'अक्षरा' पत्रिका का रजत जयंती अंक

द्वैमासिक साहित्यिक पत्रिका 'अक्षरा' के रजत जयंती वर्ष पर 93वें अंक का लोकार्पण

भोपाल। हिन्दी भवन में मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा जनसम्पर्क आयुक्त श्री मनोज श्रीवास्तव की अध्यक्षता में आयोजित विशेष लोकार्पण समारोह में पूर्व मुख्य सचिव श्री कृपाशंकर शर्मा और बरकतुल्ला विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० भूपाल सिंह द्वारा साहित्यिक पत्रिका 'अक्षरा' के रजत जयन्ती वर्ष अंक, वरिष्ठ चिंतक श्री कैलाशचन्द्र पन्त की पुस्तक 'शब्द का विचार पक्ष' तथा 'मालवी की उपबोलियाँ और उनका सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य' नामक पुस्तक का संयुक्त रूप से लोकार्पण किया गया।

मुख्य अतिथि **श्री कृपाशंकर शर्मा** ने कहा कि ऐसे समय में जबकि बड़े प्रतिष्ठानों की बड़ी-बड़ी पत्रिकाएँ भी बन्द हो रही हैं, 'अक्षरा' का 25 वर्ष तक निरन्तर प्रकाशन बहुत बड़ी बात है। बाजारवाद के इस दौर में साहित्यकारों को अकेले चलने की धारणा अपनानी चाहिए। ऐसा करके ही वे वर्तमान चुनौतियों के सामने टिक सकते हैं।

विशिष्ट अतिथि **डॉ० भूपाल सिंह** ने हिन्दी और हिन्दी की पत्रिकाओं की वर्तमान स्थिति पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इन दिनों हिन्दी पत्रिकाएँ ही नहीं अपितु हिन्दी भाषा भी चिंता का विषय है। वे ऐसा मानते हैं कि अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में हिन्दी नेतृत्व करने वालों की भाषा नहीं है। बाजार के इस ज़माने में हिन्दी के प्रति जो उपेक्षा भाव है उस पर गम्भीरता से विचार होना चाहिए। आपने कहा कि बाजार हिन्दी को आगे बढ़ायेगा। हिन्दी को चाहिये कि वह बाजार के साथ आगे बढ़कर ताकतवर बने।

'ये सूरत बदलनी चाहिए'

भोपाल। विगत दिनों दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय के तत्त्वावधान में दुष्यन्त कुमार की पुण्यतिथि एवं संग्रहालय के स्थापना दिवस के अवसर पर विशेष व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता प्रख्यात लेखक चिंतक सी०वी० रमन विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलाधिपति **श्री संतोष चौबे** थे। उन्होंने कहा कि 'ये सूरत बदलनी चाहिए' को हम कई दृष्टिकोण से देख सकते हैं। समाज में इस तरह के बदलाव की आवश्यकता शिक्षा, तकनीकी, साहित्य, संस्कृति और कृषि, विज्ञान उद्योग और सूचना प्रसारण आदि में महसूस की जा रही है। ये सभी समाज में उन्नति का सही मार्ग प्रशस्त करने में सहायक हैं। मनुष्य में बदलाव की मूल प्रवृत्ति होती है। इसमें एक ज्ञानात्मक मानचित्र के साथ ही संतुलन की आवश्यकता भी है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति **श्री सच्चिदानंद जोशी** ने की।

दुष्यन्त कुमार के बहुचर्चित शेर 'सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं, मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए' को आधार बनाकर व्याख्यानमाला में सुविख्यात फिल्मकार एवं गीतकार गुलजार, फिल्म समीक्षक जयप्रकाश चौकसे, हॉकी खिलाड़ी मीर रंजन नेगी (चक दे इंडिया के आधार व्यक्तित्व) जैसे विभिन्न क्षेत्रों के प्रसिद्ध विद्वानों और वक्ताओं को इसमें आमंत्रित किया जायेगा।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में संग्रहालय की प्रवर परिषद के उपाध्यक्ष **डॉ० महेन्द्र सिंह चौहान** ने इस वर्ष के दुष्यन्त अलंकरण और अन्य सम्मानों की घोषणा की। जिसमें इस वर्ष का '**दुष्यन्त अलंकरण**' प्रख्यात फिल्मी गीतकार **श्री निदा फाजली** को दिया जायेगा। '**सुदीर्घ साहित्य साधना सम्मान**' हरदा के **डॉ० प्रेमशंकर रघुवंशी** और रायपुर के **श्री लक्ष्मण मस्तूरिया** को '**आंचलिक रचनाकार सम्मान**' आगामी मार्च में दिया जायेगा। इस अवसर पर दुष्यन्त कुमार के पुत्र श्री आलोक त्यागी भी उपस्थित थे।

सेठिया के काव्य पर संगोष्ठी

जयपुर। श्री कन्हैयालाल सेठिया राजस्थानी चेतना के युगकवि हैं। वे राजस्थान के रवीन्द्र के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने हिन्दी, राजस्थानी एवं उर्दू में उच्चकोटि के दार्शनिक प्रकृति के एवं लोकसाहित्य का सृजन कर सरस्वती के भण्डार को सम्पुष्ट किया है, साथ ही समाज-सेवा की भी मिसाल कायम की है। राजस्थान के इस कवि पर तीन दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 18, 19, 20 जनवरी को जयपुर में हुआ।

स्मृति-शेष

'वो कागज की कश्ती' को शब्द देने वाले फाकिर का निधन

जालंधर। 'ये दौलत भी ले लो ये शोहरत भी ले लो, भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी, मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन, वो कागज की कश्ती वो बारिश का पानी....' इस मशहूर गजल के लेखक सुदर्शन फाकिर अब इस दुनिया में नहीं रहे। शब्दों को गजल में पिरोने वाले फाकिर की कमी लेखन व शायरी की दुनिया में हमेशा खलती रहेगी। 18 फरवरी को लम्बे अरसे से कैंसर से पीड़ित फाकिर ने आखिरी साँस ली।

72 वर्षीय सुदर्शन ने कई गजलें व नज्में लिखीं। इनमें से कुछेक आज भी बच्चों, युवाओं व बूढ़ों की जुबान पर रहती हैं। जगजीत सिंह की आवाज में सुरों में ढाला गया प्रसिद्ध भजन 'हे राम....' के शब्दों को भी फाकिर ने ही कलमबद्ध किया था। आल इंडिया रेडियो से अपना कैरियर शुरू करने वाले फाकिर ने मुंबई तक का लम्बा सफर तय किया।

वैदिक साहित्य के मूर्धन्य विद्वान डॉ० फतहसिंह जी का परलोक गमन

वैदिक साहित्य के मूर्धन्य विद्वान, सिन्धु-लिपि के प्रारम्भिक अध्येता और सुप्रसिद्ध चिन्तक डॉ० फतहसिंह का दिनांक 5 फरवरी 2008 की रात्रि में पीलीभीत (उत्तराखण्ड) में निधन हो गया।

आपने विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन के साथ-साथ प्राचार्य पद को सुशोभित किया। तदुपरान्त, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में निदेशक के रूप में आपने लम्बे समय तक कार्य किया। उद्भट सारस्वत प्रतिभा के धनी डॉ० फतहसिंह ने साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में लगभग 70 छोटे-बड़े ग्रन्थों का प्रणयन किया।

आचार्य केदारनाथ त्रिपाठी का निधन

वाराणसी। काशी विद्वत परिषद के अध्यक्ष तथा संस्कृत के ख्यातिलब्ध विद्वान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व दर्शन विभागाध्यक्ष व राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित 92 वर्षीय आचार्य केदारनाथ त्रिपाठी का शनिवार 23 फरवरी 2008 को उनके जानकीनगर ककरमत्ता स्थित आवास पर निधन हो गया। अखिल भारतीय विद्वत परिषद, काशी विद्वत परिषद की अलग-अलग हुई बैठकों में आचार्य त्रिपाठी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

डॉ० किशोरीलाल गुप्त नहीं रहे!

'श्यामा' जैसे अनेक बहुचर्चित काव्य ग्रन्थों की रचना करने वाले, प्राचीन सुकवियों के 36 से अधिक ग्रन्थों का शोधपूर्ण भूमिका के साथ सम्पादन करने वाले, अनेक ग्रन्थों के रचयिता, विख्यात साहित्य मर्मज्ञ, साहित्य वाचस्पति, साहित्य भूषण, विन्ध्य गौरव डॉ० किशोरीलाल गुप्त का निधन गत 12 फरवरी को 92 वर्ष की आयु में उनके पैतृक निवास 'अमरावती सदन' ग्राम सुधवै में हो गया। आपके निधन से साहित्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। 'भारतीय वाङ्मय' परिवार की ओर से अश्रुपूरित श्रद्धांजलि!

सुरेन्द्र भार्गव दिवंगत

प्रसिद्ध भार्गव डिक्शनरी के प्रकाशक व भार्गव भूषण प्रेस के अधिष्ठाता 65 वर्षीय सुरेन्द्र भार्गव (लाला भाई) का निधन 18 फरवरी को दिल्ली स्थित अपोलो अस्पातल में हो गया। उनका पार्थिव शरीर नई दिल्ली से विमान द्वारा वाराणसी लाया गया और गायघाट स्थित उनके आवास पर कुछ देर के लिए रखा गया जहाँ शहर के तमाम विशिष्टजनों ने श्रद्धांजलि दी। देर शाम मणिकर्णिका घाट पर अंत्येष्टि की गई। मुखाग्नि ज्येष्ठ पुत्र सर्वेश भार्गव ने दी।

श्री भार्गव प्रतिष्ठित व्यवसायी होने के साथ ही समाज सेवा में भी अग्रणी थे। वह बिरला अस्पताल के न्यास मण्डल के सक्रिय सदस्य तथा काशी सुधार संघ के अध्यक्ष होने के साथ-साथ अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े थे। श्री भार्गव के निधन से समाजसेवा के क्षेत्र में जो क्षति हुई है, उसका भरना मुश्किल है।

विख्यात पत्रकार 'ब्लिट्ज' के मालिक आर०के० करंजिया का निधन

67 साल पहले एक फरवरी (1941) को ही भारतीय पत्रकारिता जगत में एक स्वर्णिम इतिहास की शुरुआत हुई थी, इतिहास रचा था 15 सितम्बर 1912 को जन्मे रूसी खुरशेदजी करंजिया ने, जो स्वयं भारतीय पत्रकारिता जगत के लिए एक संस्थान की तरह थे। करंजिया के नेतृत्व में एक फरवरी 1941 को 'ब्लिट्ज' का पहला अंक आया था और वे इस साल एक फरवरी को ही 95 वर्ष की उम्र पूरी कर 2 फरवरी 2008 को दुनिया को अलविदा कह गये।

करंजिया ब्लिट्ज के मालिक थे लेकिन वे द्वितीय विश्व युद्ध के समय स्वयं बर्मा व असम के क्षेत्रों में रिपोर्टिंग के लिए गये थे। उन्होंने ब्लिट्ज में प्रसिद्ध फिल्मकार ख्वाजा अहमद अब्बास का रोचक व नये स्टाइल का कॉलम शुरू किया तो दूसरी ओर ग्रामीण व कृषि विषयों पर लिखने वाले प्रसिद्ध पत्रकार पी० साईंनाथ जैसे पत्रकारों की प्रतिभा को तराशने का भी काम किया। 1945 में उनके द्वारा सुभाषचन्द्र बोस व इंडियन नेशनल आर्मी की प्रकाशित तस्वीरें काफी चर्चित रही थीं, करंजिया ने विंस्टन चर्चिल, फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति चार्ल्स डी गाउले, यासर अराफात, फिदेल कास्त्रो, एन खुश्चेव जैसे राजनयिकों के साक्षात्कार भी लिये थे।

करंजिया की एक खास पहचान यह भी रही कि वे गांधी-नेहरू परिवार में नेहरू से लेकर राजीव गांधी तक के सबसे चहेते पत्रकार बने रहे। लेकिन कांग्रेस को उन्होंने कभी पसन्द नहीं किया। वे हमेशा प्रहार करते रहे। करंजिया के व्यक्तित्व का यह पहलू भारतीय पत्रकारिता जगत में अबूझ पहेली ही बना रहा, ठीक वैसे ही, जैसे आखिरी दिनों में उनका भगवा पक्षधारी बन भाजपा के प्रति सॉफ्ट कॉर्नर अपना लेना।

करंजिया का जाना भारतीय पत्रकारिता जगत के लिए एक ऐसे संस्थान का पटाक्षेप है, जो अकेले एक मिसाल था।

डॉ० देवेश चन्द्र नहीं रहे

नई दिल्ली, पोत परिवहन विभाग की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य एवं हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार 73 वर्षीय डॉ० देवेशचन्द्र का गत 24 दिसम्बर को देहावसान हो गया। आप भारत सरकार के कई विभागों और मंत्रालयों में निदेशक (राजभाषा) के रूप में अपनी प्रशंसनीय सेवाएँ देते हुए 1992 में सेवामुक्त होकर स्वतंत्र लेखन में व्यस्त थे। आपने अनेक स्तरीय पुस्तकों का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया। वरिष्ठ पत्रकार श्री भानुप्रताप शुक्ल की कई पुस्तकों का भी सफल सम्पादन किया। भारत सरकार की राजभाषा (हिन्दी) नीति के आप प्रकाण्ड विद्वान थे। हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं और पत्रों में आपके लेख ससम्मान प्रकाशित होते रहे हैं।

प्रसिद्ध तमिल लेखक सुजाता का निधन

चेन्नई। प्रसिद्ध तमिल लेखक **सुजाता** का बुधवार 27 फरवरी की रात चेन्नई के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। वह 72 वर्ष के थे। पेशे से इंजीनियर सुजाता ने 'इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन' की डिजाइन बनाने में भी योगदान दिया था। साहित्य जगत में 'सुजाता' के नाम से लोकप्रिय इस तमिल लेखक का असली नाम एस० रंगराजन था। गुर्दे सम्बन्धी समस्या के कारण वह काफी दिनों से बीमार चल रहे थे। इंजीनियर सुजाता लम्बे समय तक सरकारी सेवा में रहे।

जयंती पर याद किया कांजीलाल दादा को

वाराणसी। ख्यात कार्टूनिस्ट कांजीलाल दादा की जयंती पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। प्रो० मंजुला चतुर्वेदी ने कहा कि कार्टून जिन्दगी को देखने का नजरिया देते हैं। कार्टून कम से कम रेखाओं से अधिक से अधिक प्रहार करने का साधन है। पं० धर्मशील चतुर्वेदी ने कहा कि कांजीलाल दादा की रेखाओं में जितनी लय और गति है उतनी कहीं और नहीं देखने को मिलती। जगत शर्मा ने कहा कि दादा सरल स्वभाव के थे। उनकी रेखाएँ भी कोमल और सरल हैं। लेकिन उनमें व्यवस्था पर प्रहार की अद्भुत ताकत थी। कार्टूनिस्ट विनय कुल ने उनको व्यंग्य चित्रों का भीष्म पितामह कहा।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का दिसम्बर अंक मिला और सम्पादकीय आलेख से आश्वस्त हुआ कि गोलोकवासी श्री मोदीजी के सपनों का अवसान नहीं होगा। श्रद्धेय मोदीजी द्वारा जगाई गई ज्ञान की मशाल निरन्तर प्रकाशमान बनी रहेगी। उनकी स्मृति के ब्याज से आपने जिस संकल्प, निष्ठा और श्रद्धा को अभिव्यक्ति दी है, वह आपके संस्कारों की परिचायक होने के साथ ही आपके बौद्धिक स्तर के मोदीजी से एकात्म्य का भी संकेत देती है। विश्वास है कि आपके सम्पादकीय लेखों में भी मोदीजी की बेबाकी देखने को मिलती रहेगी।

'भारतीय वाङ्मय' के जनवरी 08 अंक में कीर्तिशेष त्रिलोचनजी को दी गई श्रद्धांजलि स्तरीय होने के साथ-साथ भावनात्मक भी है।

आगामी विश्व पुस्तक मेले पर सम्पादकीय आलेख विचारोत्तेजक तो है ही, पुस्तकों से प्रेम करने का आवाहन भी करता है। परन्तु पाठक के दृष्टिकोण से पूर्णता के साथ नहीं विचार किया गया। पाठक, विशेष रूप से हिन्दी पाठक के समक्ष सबसे बड़ी समस्या पुस्तक प्रकाशित होने की सूचना प्राप्त न होना है। यदि प्रत्येक शहर में ऐसे केन्द्र स्थापित किए जा सकें जहाँ पुस्तक उपलब्ध कराई जा सके तो निश्चय ही प्रकाशकों को मात्र पुस्तकालयों को सप्लाई करने पर ही निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। इस दिशा में आप यदि पहल कर सकें तो उत्तम होगा।

—डॉ० प्रदीप जैन, मुजफ्फरनगर

'भारतीय वाङ्मय' का अंक 11, 12 मिला। अश्रुतर्पण, एक थे पुरुषोत्तमदास मोदी, साधना के अवधूत जैसे आलेखों में आँखें गीली हो गयीं। दिसम्बर की सम्पादकीय ज्योति जलती रहेगी अनूठी है। पूरे देश में आपकी यह पत्रिका सबसे अलग पूर्ण साहित्यिक है। 'भारतीय वाङ्मय' के सितम्बर अंक में यशस्वी कवि त्रिलोचन पर प्रकाशित लेख से दिल्ली सरकार द्वारा उपचार कराने का निर्णय कितना उपादेय रहा। निर्मलता से की गई सारस्वत साधना ही रंग लाती है। सत्य की थाती बन अमरता पाती है। इसकी पहचान बनायें रखें यही कामना है।

—डॉ० हरिप्रसाद दुबे, फैजाबाद

परम आदरणीय श्री पुरुषोत्तमदास मोदीजी के यशस्वी सम्पादन में प्रकाश्यमाण 'भारतीय वाङ्मय' का उत्तरदाय आपने सँभाल लिया है। पत्रिका का यथावत् रूप में प्रकाशित दिसम्बर-2007 अंक मिला। अंक को देख कर मुझे पूर्ण विश्वास हो रहा है कि 'भारतीय वाङ्मय' और विश्वविद्यालय प्रकाशन के गौरव को सुरक्षित रखते हुए आप इसकी श्रीवृद्धि में भी समर्थ होंगे।

—भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश', उन्नाव

'भारतीय वाङ्मय' का हर अंक पठनीय है। साहित्य-जगत के ज्ञान को बढ़ानेवाला होता है। त्रिलोचन शास्त्री, आस्ट्रिड लिंडग्रेन, वाराणसी की उपलब्धि आदि के सम्बन्ध में ज्ञानवर्द्धन हुआ।

—डॉ० स्वर्णकिरण, सोहसराय, बिहार

पुरुषोत्तमदास मोदी वास्तव में पुरुष समाज में उत्तम, उदात्त गुणों से सम्पन्न, साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुष्ठानों के पुरोधा एवं शुभैषी, साहित्यकारों के सहयोगी तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा की अमिट छाप छोड़ने वाले साहित्याकाश के अप्रतिम कुसुम थे—उनकी असामयिक मृत्यु से हिन्दी जगत् को अपार क्षति हुई है।

'भारतीय वाङ्मय' का दिसम्बर 2007 का अंक प्राप्त हुआ एतदर्थ अनेक धन्यवाद! पुस्तकों की उपादेयता, हिन्दी भाषा की महत्ता, मोदीजी पर संस्मरणात्मक आलेख, श्रद्धासुमन, सम्मान-पुरस्कार, राष्ट्रीय पुस्तक मेला, पाठकीय स्पंदन, स्मृतिशेष, समवेदना के पत्र आदि के अन्तर्गत सामग्री का प्रकाशन समसामयिक घटनाओं की सफल प्रस्तुति है। पत्रिका अपने साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्य की निर्मिति में सफल सिद्ध हुई है। जिसके उज्ज्वल भविष्य के लिए नववर्ष पर मेरी अनन्त शुभकामनाएँ।

—डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय, अलीगढ़

'भारतीय वाङ्मय' के दिसम्बर अंक में 'ज्योति जलती रहेगी' पढ़कर मान्य मोदीजी को याद करके मेरा दिल भर आया। उनकी सादगी और उच्च जीवन मूल्य तथा श्रेष्ठ साहित्यिक विचार सदा हमें लेखन में प्रेरणा देते रहेंगे।

—धर्मेन्द्र गुप्त, दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' का दिसम्बर अंक भी प्राप्त हुआ। धन्यवाद, आभार। स्मृतिशेष मोदीजी पर केन्द्रित अंक द्रावक के साथ-साथ उनकी अपूरणीय क्षति का संग्रहणीय दस्तावेज भी लगा। आपके सम्पादन में यह पत्रिका कुछ नई पड़ती तोड़े यही आशा है।

'लीक छोड़ तीनों चलें शायर सिंह सपूत'

—अनिरुद्ध नीरव, छत्तीसगढ़

'भारतीय वाङ्मय' के सभी अंक मुझे मिलते रहे हैं। इसमें साहित्य-सूचनाएँ काफी महत्त्वपूर्ण होती हैं। इससे साहित्य के विविध प्रसंग उजागर होते हैं और साहित्य-प्रियता को बढ़ावा मिलता है। आपके इस साधु प्रयास के प्रति हार्धिक बधाई और शुभकामनाएँ।

—डॉ० स्वदेश भारती, कोलकाता

'भारतीय वाङ्मय' दिसम्बर अंक मिला। सम्पादकीय पढ़ा। बहुत अच्छा लगा। विचारों की दृष्टि से भी और सुन्दर हिन्दी में उनकी अभिव्यक्ति के कारण भी। बधाई हो।

—शैलेन्द्र पांथरी, वाराणसी

सहस्राब्दि के प्रथम दिवस पर प्रारम्भ हुई आपकी विचारशीला पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' का दिसम्बर 07 अंक मेरे सामने है। साहित्यिक गतिविधियों के प्रति पूर्ण सजग सामग्री से ओत-प्रोत यह पत्रिका वस्तुत: श्लाघनीय है। आदरणीय श्री पुरुषोत्तमदास मोदीजी की अपूरणीय रिक्तता होने पर भी 'भारतीय वाङ्मय' की अखण्ड ज्योति सदा उद्दीप्त होती रहे, यह कामना है।

इस अंक में अनेक सम्मान-पुरस्कारों आदि की सूचना जहाँ एक ओर हृदय को आह्लादित कर गयी, वहीं दूसरी ओर अनेक श्रेष्ठ साहित्यकारों के महाप्रयाण के समाचारों से मन भीग कर द्रवित हो उठा। श्री मोदीजी, शैल भाई, अरुणा सीतेश, चिरंजीव दादा, रवीन्द्र कुमार जैन, प्रो० शुकदेव सिंह, केशवचन्द्र जी, राधारमण जी आदि इस नश्वर संसार से जाकर भी अपनी लेखनी के माध्यम से सदा साहित्यिक जगत में जीवन्त रहेंगे।

डॉ० नासिर के त्रिपदा छन्द का नव सृजन बहुत सन्तोषप्रद है और हाइकू का सामना करने में सक्षम भी। उनको मेरी बधाई। अन्य पुस्तकों का परिचय छापने के लिए आपको साधुवाद। भारतीय साहित्यिक परिदृश्य में सम्बद्ध विशिष्ट समाचारों से युक्त आपकी पत्रिका के लिए उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ।

— डॉ० शशि तिवारी, आगरा

'भारतीय वाङ्मय' निरन्तर मिल रहा है और आपके कुशल नेतृत्व तथा सम्पादन में आगे भी पढ़ने को मिलेगा परन्तु हम सबके शिखर-पुरुष और प्रेरणा के अजस्र स्रोत स्व० श्री पुरुषोत्तमदास मोदी से संवाद नहीं हो सकेगा। पत्रकारिता और प्रकाशन के क्षेत्र में उनके द्वारा स्थापित किये गये मानदण्ड ही हमारा मार्ग प्रशस्त करेंगे।

सागर से उनका सुदीर्घ सम्बन्ध रहा है। आदरणीय केदार 'साथी' साथी प्रकाशन से आदरणीय मोदीजी के विषय में बातें हुईं। आदरणीय प्रोफेसर भगीरथ मिश्र से भी उनके विषय में जानने-सुनने का अवसर मिला था। वर्तमान में प्रो० कान्तिकुमार जैन से उनके निकट सम्बन्ध रहे हैं। चाहता हूँ कि विश्वविद्यालय प्रकाशन और भारतीय वाङ्मय से आगे भी यह परिवारिक स्नेह सम्बन्ध बना रहे। **—डॉ० वीरेन्द्र मोहन,** सागर

'भारतीय वाङ्मय' का जनवरी, 08 अंक प्राप्त हुआ। 'बौद्धिकता पर भौतिकता हावी' शीर्षक से आपका विचार पढ़ा, प्रभावित हुआ। उक्त आलेख में आपने सही वक्त पर पुस्तकों को उपभोक्ता सामग्री के रूप में प्रस्तुत करने एवं उसे पाठकों तक पहुँचाने के साधनों की तलाश करने का प्रयत्न किया है।

हिन्दी पुस्तकों के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं उसकी पठनीयता में वृद्धि लाने के सन्दर्भ में मैं निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यानाकर्षण करना चाहता हूँ—

1. पुस्तकों के प्रचार-प्रसार हेतु समाचार पत्रों पर भरोसा करने की आवश्यकता नहीं है। समाचार पत्र व्यावसायिक हो चले हैं। ऐसी स्थिति में समर्थ प्रकाशकों का दायित्व बनता है कि वे हिन्दी पुस्तकों के प्रचारार्थ विवरणिका निकालें जिसमें नव प्रकाशित पुस्तकों पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ भी हों। ऐसी विवरणिकाओं का संप्रेषण हिन्दी भाषी एवं अहिन्दी भाषी क्षेत्र में व्यापक रूप से होना चाहिए। इस क्षेत्र में आपका प्रयास निश्चय ही सराहनीय एवं विश्वसनीय है 'भारतीय वाङ्मय' निकाल कर।

2. प्राथमिक कक्षाओं से लेकर विश्वविद्यालयों तक के केवल हिन्दी शिक्षक ही पुस्तकों को खरीदकर पढ़ने की आदत डाल लें तब भी प्रतिवर्ष लाखों-करोड़ों की पुस्तकें बिक जायेंगी। परन्तु देखा यह जाता है कि प्रतिमाह 30-35 हजार रुपये पाने वाले शिक्षक भी 10 रुपये की पुस्तक खरीदने में संकोच करते हैं।

3. ऐसा प्रचारित किया जा रहा है कि संचार एवं मनोरंजन के बढ़ते संसाधनों के चलते लोग पुस्तक पढ़ना छोड़ रहे हैं, अब पुस्तकों का काम केबल, टीवी एवं इंटरनेट आदि कर रहे हैं। पुस्तकें तो गाड़ी में बैठकर, स्टेशनों पर, होटलों में अथवा किसी की प्रतीक्षा की घड़ियों में भी पढ़ी जाती हैं पर टीवी अथवा इंटरनेट से क्या यह सम्भव है ?

4. हिन्दी आज विश्व भाषा बन चुकी है, परन्तु उसका इतिहास मात्र हिन्दी प्रदेशों के लेखकों का इतिहास बनकर रह गया है। सबको ज्ञात है कि अहिन्दी भाषी प्रान्तों में विपुल मात्रा में हिन्दी साहित्य लिखा जा रहा है। पर उन लेखकों को हिन्दी साहित्य के इतिहास में क्या सम्मिलित किया गया? हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर इतिहास लिखे जा रहे हैं, पर हिन्दीतर हिन्दी लेखकों का उसमें नाम तक नहीं है। इस पर हिन्दी के प्रकाशकों एवं शीर्षस्थ लेखकों को गहन चिंतन-मनन करने की आवश्यकता है। मेरा मानना है कि हिन्दीतर हिन्दी लेखकों को समेटने से हिन्दी पुस्तकों की बिक्री में वृद्धि तो होगी ही, हिन्दी का इतिहास भी महनीय होगा।

5. अधिकांश लोगों तक पुस्तकों की पहुँच न हो सकने का कारण मात्र डाक-व्यय में वृद्धि ही नहीं है, पुस्तकों के मूल्य में अनावश्यक वृद्धि भी है।

6. महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में पुस्तक खरीद के नाम पर जो अनुदान यूजीसी भेजती है उससे अनुपातत: हिन्दी की अपेक्षा अन्य विभागों में पुस्तकें अधिक मात्रा में खरीदी जाती हैं। ऐसी परिस्थिति में हिन्दी अध्यापकों को जागरूक होने की आवश्यकता है।

7. अंग्रेजी स्कूलों के सामने हमारी सरकार घुटने टेक चुकी है। सरकारी स्कूलों में पढ़ाई नदारद है। बाध्य होकर लोग अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों में भेज रहे हैं। अंग्रेजी स्कूलों में पुस्तक खरीदने एवं पढ़ने की संस्कृति है। वहाँ पुस्तकालय हैं, अध्ययन कक्ष हैं। बच्चों को पुस्तकालय से पुस्तक लेकर पढ़ना अनिवार्य है। हिन्दी माध्यम के सरकारी स्कूलों में हाईस्कूल तक पुस्तकालय नाम की कोई चीज नहीं है। पुस्तकालय एवं पुस्तक संस्कृति से वहाँ दूर-दूर तक न शिक्षकों का रिश्ता है न विद्यार्थी का ही। ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में हिन्दी पुस्तकों के पाठकों का कम होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यह स्थिति सबसे खरतनाक एवं चिंताजनक है। इस विषम परिस्थिति से उबरने के लिए सरकार द्वारा कठोर नीति बनाने एवं शिक्षकों को अपने नैतिक दायित्व पालन करने की आवश्यकता है। हिन्दी पुस्तकों की खरीददारी एवं पठनीयता में निरन्तर ह्रास का यह महत्त्वपूर्ण कारण है।

8. आपने ठीक प्रश्न उठाया है कि 'पुस्तकों को उपभोक्ता सामग्री के रूप में प्रस्तुत कर उसकी उपलब्धता कराने' की आवश्यकता है। पर जिस 'उपभोक्ता सामग्री' का आप समर्थन कर रहे हैं, हमारे तथाकथित प्रगतिवादी एवं जनवादी समीक्षक उसे रात-दिन बाजारवादी संस्कृति कहकर उसकी आलोचना कर रहे हैं। बाजारवाद, उपभोक्तावाद, पूँजीवाद आदि को समय की माँग समझ कर उसके अनुरूप अपने लिए विकास की सम्भावनाएँ तलाशना हम अभी तक नहीं सीख पाये हैं। और तो और, हम आधुनिक तकनीकी का सही प्रयोग कर उसके अनुरूप हिन्दी को विकसित करना भी नहीं चाहते। तब भला कैसे होगा प्रचार-प्रसार हिन्दी का एवं किस प्रकार उन्हें खरीदने के लिए लोगों का आकर्षण बढ़ेगा।

सारांशत: हिन्दी की पठनीयता को विकसित करने एवं उसके प्रचार-प्रसार में गुणात्मक वृद्धि हेतु व्यापक बहस-विमर्श की आवश्यकता है। हमें इस सन्दर्भ में आत्ममंथन करना होगा एवं हिन्दी को मात्र एक विषय नहीं बल्कि अपनी आस्मिता से जोड़कर देखना होगा। निश्चय ही इस कार्य में प्रकाशकों की अहम् भूमिका तो होगी ही, शीर्षस्थ साहित्यकारों के भी विचार इस सन्दर्भ में अपेक्षित हैं।

—डॉ० हरेराम पाठक, डिगबोई (असम)

श्री पुरुषोत्तमदास मोदी : स्मरण

—डॉ० रमेशकुमार त्रिपाठी

पूर्व प्रोफेसर-अध्यक्ष, म.गां.का. विद्यापीठ वाराणसी

पुस्तकें खरीदने के लिए मैं कभी-कभी विश्वविद्यालय प्रकाशन जाता था। वांछित पुस्तकों की उपलब्धि के बारे में प्राय: उन्हीं से पूछता और सामने पड़ी कुरसी पर बैठ जाता। धीरे-धीरे उनकी-मेरी बातचीत होने लगी। इस क्रम में मैंने जाना, वह न केवल प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता हैं, बल्कि विद्यानुरागी भी हैं। वह अखबार और किताबें खूब पढ़ते थे। विशेषत:, साहित्यानुरागी थे। प्रसाद से सम्बन्धित संस्मरणों वाली उनकी किताब मैंने बड़े चाव से पढ़ी। 'भारतीय वाङ्मय' से जुड़ा। नियमित इसे पढ़ने लगा। इससे और जानाकरी हुई उनके अध्ययन की विशदता, अभिरुचि की विविधता तथा बेबाक, साहसिक व पैनी दृष्टि वाले सम्पादकीयों के विषय में। यह मासिक पत्रिका पढ़ने के लिए विवश करती है, क्योंकि इसकी सामग्री रोचक तथा जानकारी पूर्ण होती है। इसे सरस व प्रभावी बनाने के लिए वह चुनिन्दा कवितायें भी छापते थे जो पठन एवं पुस्तक प्रेम विषयक होती थीं।

मोदी साहब से मिलकर मैं विस्मित होता था कि वृद्धावस्था में भी, पक्षाघातजन्य आंशिक विकलांगता के बावजूद, वह पढ़ने-लिखने का कितना काम करते हैं, अपनी प्रकाशन-संस्था की देखभाल करते हैं, महानगर की सांस्कृतिक गतिविधियों से भी जुड़े रहते हैं।

उनकी विशाल जीवन्त आँखें, मोहक मुस्कान, कर्ण-प्रिय आवाज, उत्साह, संकल्प, स्नेह से युक्त हृदय मुझे बराबर आकर्षित करता रहा।

2 अक्टूबर को गाँधी जयन्ती के अवसर पर मुमुक्षु भवन में होने वाले आयोजन में शामिल होने के लिए उन्होंने मुझे फोन किया। पर, मैं जा न सका। मुझे क्या पता था कि उनकी प्रिय आवाज मैं अन्तिम बार सुन रहा हूँ।

छ: महीनों के लम्बे प्रवास के उपरान्त जब घर लौटी तो पाया 'भारतीय वाङ्मय' के सभी अंक मेरे लिये सुरक्षित हैं। नवम्बर अंक जैसे ही सामने आया, मैं स्तब्ध, नि:स्पन्द, निष्प्राण सी। कुछ क्षणों के लिये लगा सब कुछ ठहर गया। परम पूज्य बाबूजी (श्री पुरुषोत्तमदास मोदीजी) पञ्चतत्त्व में लय होकर साकार से निराकार, नि:सीम-श्रद्धाञ्जली से भरा वाङ्मय, निष्प्रभ मैं पथरायी सी आँखों से देख रही थी, विश्वविद्यालय प्रकाशन की वह कुर्सी देख रही थी जिस पर अब बाबूजी नहीं थे, रीती सूनी सी वह कुर्सी मानों संवेदना का गीत लिख रही हो। बाबूजी से प्रकाशन भरा-भरा प्रफुल्लित सा लगता। मद्धम पर सधी आवाज—प्राय: ऐसी ऊँची गहन बात कहकर जब मुस्कुराते तो गंगा की गोद में बसे बनारस की साहित्यिक छवि उनके अधरों पर उतर आती। बाबूजी ने अनेक सुप्रसिद्ध साहित्यकारों से जो परिचय करवाया वह मेरे लिये तो असम्भव सा ही था। आचार्य बलदेव उपाध्याय के चरण स्पर्श का पुण्य लाभ तो बाबूजी की कृपा का ही प्रसाद है। शब्दातीत मेरे बाबूजी जिन्हें मैं महसूस करती हूँ, आसुओं में पिरोती हूँ और स्मृतियों का मुक्ताहार उस दिव्यात्मा को पहनाती हूँ। उदीयमान सूर्य की लाली से तरल दशाश्वमेध के गंगाहृदय को मैं अकिंचन और क्या श्रद्धाञ्जली चढ़ा सकती हूँ?

— रागिनी भूषण, जमशेदपुर

समवेदना के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' (मासिक) नियमित रूप से मिल रहा है। आपको हिन्दी-जगत् की सेवा के लिए अनेकशः धन्यवाद। श्रीयुत् पुरुषोत्तमदासजी मोदी के असामयिक देहावसान से हिन्दी को परम हितैषी विद्वान् की अपूरणीय क्षति हुई है। वे 'भारतीय वाङ्मय' के माध्यम से हिन्दी जगत के पूर्व पुरुषों की जन्म शताब्दियों, हिन्दी के क्षेत्र में घटित हो रही विशिष्ट घटनाओं, समारोहों के सम्बन्ध में जानकारियाँ देकर उत्तर प्रदेश से दूरस्थ क्षेत्रों के विद्वानों को जोड़े रखते थे। विधि का विधान अनुलंघ्य होता है। वे अपने यश से सदैव स्मरण किये जाते रहेंगे।

— प्रोफेसर डॉ० भँवरलाल जोशी, अजमेर

'भारतीय वाङ्मय' के नवम्बर 2007 के अंक से ज्ञात हुआ कि इस ज्ञानवर्धक पत्रिका के मूर्धन्य प्रधान सम्पादक पुरुषोत्तमदास मोदीजी नहीं रहे। सहसा इस समाचार पर विश्वास नहीं हुआ तथा गहरा आघात लगा। वैसे मैंने मोदीजी से मिलकर कभी बातचीत नहीं की थी किन्तु उन्हें देखा जरूर था। 'भारतीय वाङ्मय' में उनके लेखों से मैं उनके व्यक्तित्व का अवश्य दर्शन करता था। किसी ज्वलन्त विषय पर उनकी टिप्पणी मन को छू जाती थी। उन्होंने अपनी प्रतिभा से विश्वविद्यालय प्रकाशन जैसे संस्थान की स्थापना की और उसे बुलन्दियों तक पहुँचाया। मोदीजी के सम्पादकीय पढ़कर यह पता चलता है कि वे एक महान पत्रकार थे।**— डॉ० विनोद कुमार पाण्डेय**

गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

परम श्रद्धेय पुरुषोत्तमदासजी मोदी के निधन का समाचार 'भारतीय वाङ्मय' वर्ष 8 अंक 11 नवम्बर से जानकारी मिली। यहाँ के हिन्दी समाचार पत्रों से जानकारी न मिलना इस बात का दुखद संकेत है कि हम अपने पूर्व अग्रज, बड़े साहित्यकारों के प्रति क्या भावना रखते हैं। मोदीजी का मैंने कभी भी दर्शन लाभ नहीं किया। वर्षों पूर्व वाराणसी आने पर आज के सम्पादक श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर जी ने उनके दर्शन करने को कहा था। परन्तु मेरा दुर्भाग्य था कि मैं उनके दर्शन नहीं कर पाया। आपने अपने प्रकाशन को चार चाँद लगाए। हिन्दी की प्रतिष्ठा में उनकी सक्रिय भूमिका रही इस बात से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता। **—ऋषि भामचन्द्र कौशिक,** हैदराबाद

'भारतीय वाङ्मय' 8/11 अंक मिला। मान्य बन्धु पुरुषोत्तमदास मोदीजी के देहावसान के संवाद से दुःख हुआ। इनके नाम और कृतित्व से एक लम्बे समय से परिचित हूँ। पत्रिका के नये अंक से उन्हें और अधिक जानने का अवसर मिला। इधर 'भारतीय वाङ्मय' के सन्दर्भ में कभी-कभी पत्र-व्यवहार हुआ, तो मुझे आत्मीयता-जैसा लगा। वे मेरे समवयस्क ही थे—मैं उनसे लगभग एक साल पहले जन्मा था। किसी समवयस्क का इस तरह सहसा चला जाना एक शॉक-सा दे जाता है। आदमी कभी-कभी कितना विवश लगता है। कुछ समय पहले मैंने लिखा था—'हयात लायी है, हम आये हैं। / कज़ा ले नहीं गयी, हम रुके हैं।.....आओ, हम जिएँ। / कहीं ऐसा न लगे / कि ज़िन्दगी ग़लत आदमी को मिल गयी है।' मोदीजी को देख कर लगता है कि ज़िन्दगी एक सही आदमी को मिली थी। उन्होंने एक सही और सार्थक जीवन जिया। उनके प्रति मैं अपनी श्रद्धा व्यक्त करता हूँ। **— सिद्धनाथ कुमार,** राँची

'भारतीय वाङ्मय' का दिसम्बर, 07 देखकर एवं पढ़कर मैं हतप्रभ हूँ कि पुरुषोत्तमजी हमारे बीच नहीं रहे। अब भी मुझे यह खबर बिल्कुल अविश्वसनीय लगती है। यों भी महामानव एवं महापुरुष दिवंगत नहीं होते, विशेषकर मोदीजी के बारे में यही राय रखता हूँ मैं। इतनी अधिक आयु के बावजूद मेरे एक पत्र के सम्बन्ध में काफी विस्तार से लिखा था उन्डोंने। उनका वह पत्र किसी महान धरोहर से कम नहीं है मेरे लिए। देश में व्यवसायिक प्रकाशक बहुत हैं किन्तु मिशन भावना से काम करने वाले लोग कम ही दिखते हैं। भारतीय समाज, साहित्य, संस्कृति के प्रति वह कितना गहरा लगाव रखते थे, यह आपके संस्थान की पुस्तकों को देखकर सहज अनुमान लगाया जा सकता है।**—डॉ० तारिक असलम तस्नीम,** पटना

'भारतीय वाङ्मय' के नवम्बर एवं दिसम्बर अंक लगभग एक ही साथ मिले। यहाँ डाक की ऐसी ही हालत रहती है। 'भारतीय वाङ्मय' के अंकों से आदरणीय पुरुषोत्तमदास मोदीजी के स्वर्गीय होने का समाचार जानकर आघात लगा। उनसे साक्षात् मिलने का सौभाग्य तो मुझे प्राप्त नहीं हो पाया, किन्तु हर माह आते 'भारतीय वाङ्मय' में व्यक्त एवं चयनित उनके विचारों से साक्षात्कार निरन्तर होता ही था। उनके सम्पादकीय सुचिन्तित दृष्टि से युक्त और अनुभव सिद्ध होते थे। मात्र पुस्तकों से जुड़ी चिन्ता ही उनमें नहीं होती थी, राष्ट्र और समाज से जुड़ी तमाम चीजों को वे उनमें उठाते थे और बेबाक एवं सटीक टिप्पणी करते थे। सात-आठ सालों के भीतर ही 'भारतीय वाङ्मय' को बड़ी-बड़ी पत्रिकाओं से भी लोकप्रिय बना देना अपने आप में कोई छोटी बात नहीं है। तमाम प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में से भी कुछ रुचि के अनुकूल सामग्री पर दृष्टि डाल उन्हें किनारे रख दिया जाता है, वहीं 'भारतीय वाङ्मय' ऐसी पत्रिका है जिसके हाथ में आते ही आद्यन्त पठन की उत्सुकता और फिर अगले अंक की प्रतीक्षा शुरू हो जाती है।

स्व० मोदीजी क्या थे, कैसे थे और कैसे-कैसे लोगों से उनकी आत्मीयता थी, कितनी-कितनी दूर तक उनका नाम और सम्मान था—इसका अभिज्ञान अंकद्वय में प्रस्तुत विपुल सामग्री से होती है। स्व० मोदीजी द्वारा रचे गये प्रतिमानों की कसौटी पर खरा उतरना ही चुनौती है। 'भारतीय वाङ्मय' के दोनों अंक गवाह हैं कि आपने यह चुनौती दृढ़ संकल्प के साथ स्वीकार की है। **—डॉ० एच०के० शर्मा,** अरुणाचल प्रदेश

'भारतीय वाङ्मय' नवम्बर और दिसम्बर 07 के अंकों ने पुण्य श्लोक श्री पुरुषोत्तमदास मोदी के स्वर्गारोहण और श्रद्धांजलियों के समाचारों से अवगत कराया। हार्दिक वेदना हुई। हिन्दी-जगत उन्हें सदैव याद रखेगा। उनमें अच्छे साहित्यकार, प्रकाशक और सुदृढ़ मित्र के यशस्वी गुण थे। उन्होंने जो दीपशिखा प्रज्ज्वलित की है वह 'भारतीय वाङ्मय' के रूप में आप द्वारा निरन्तर आलोकित रहेगी।

हंस जिस सरोवर पर भी जाते हैं उस सरोवर की शोभा बढ़ाते हैं और यदि किसी सरोवर से अन्यत्र चले जाते हैं तो सरोवर श्रीहीन हो जाता है, ठीक उसी प्रकार मोदीजी के चले जाने से हिन्दी का सरोवर निश्चय ही श्रीहीन हुआ है।

—डॉ० इन्द्र सेंगर, दिल्ली

मोदीजी के निधन के बाद कई हलकों में यह चर्चा थी कि पता नहीं अब 'भारतीय वाङ्मय' का क्या हो लेकिन आपने दिसम्बर अंक में 'ज्योति जलती रहेगी' सम्पादकीय लिख कर हिन्दी जगत को आश्वस्त किया है। आपसे ऐसे आश्वासन की आशा थी। मोदीजी केवल प्रकाशक ही नहीं थे, वे प्रज्ञा-पुरुष भी थे।

—डॉ० श्यामसुन्दर घोष, गोड्डा (झारखण्ड)

'भारतीय वाङ्मय' से आज ही ज्ञात हुआ कि हमारे स्नेहिल, मुस्कान भरे चेहरे वाले, पुरुषों में उत्तम श्री पुरुषोत्तम मोदी अगम की राह चले गये, हार्दिक दुख हुआ। मेरा कई साल पहले काशी विद्यापीठ में हुए 'भारती परिषद' के अधिवेशन में, मात्र एक बार साक्षात्कार हुआ था। उसकी छाप आज भी मानस-पटल पर चस्पा है।

— जीवितराम सेतपाल, मुम्बई

पुस्तक परिचय

आधुनिक हिन्दी-साहित्य : विविध आयाम

[आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह] (साहित्य समीक्षा)

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

प्रथम संस्करण : 2007

पृष्ठ : 252

सारगर्भित एवं संतुलित मूल्यांकन-दृष्टि का साक्ष्य

— प्रो० कृष्णचन्द्र लाल

यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा कि आचार्य रामचन्द्र तिवारी की आलोचना-दृष्टि का निर्माण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के आलोचना-साहित्य और हिन्दी की समूची साहित्य-परम्परा के गम्भीर एवं विशद अध्ययन से हुआ है। यही वजह है कि उनकी आलोचना में आचार्य शुक्ल जैसी तत्त्वामिनिवेशिकी दृष्टि और गम्भीरता बराबर बनी रहती है और रचना को व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझने-समझाने का प्रयत्न भी दिखायी पड़ता है। समकालीन हिन्दी आलोचना में जिस तरह की उठा-पटक, विचारधारा की मारकाट और रचना में अन्त:प्रवेश के बगैर आलोचना की चमत्कृति देखने को मिलती है, आचार्य तिवारी की आलोचना उससे मुक्त है और उनके आलोचना-कर्म का उद्देश्य 'रचना' की महत्ता, उपयोगिता और उसके वैशिष्ट्य के साथ-साथ 'रचना-सम्बन्धी' अन्यान्य प्रश्नों को तार्किक ढंग से जानने-समझने और अपने निष्कर्षों को पाठक तक निर्भ्रांत ढंग से पहुँचाने का है। उनके इस गम्भीर आलोचना-कर्म में उनके अध्यात्मक-व्यक्तित्व ने भी बहुत बड़ा योग दिया है।

'आधुनिक हिन्दी साहित्य : विविध आयाम' उनका सद्य: प्रकाशित आलोचना-ग्रन्थ है। इसके बारे में आचार्य तिवारी ने लिखा है—''प्रस्तुत कृति हमारे समय-समय पर लिखे गये आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। इसमें कुल 38 निबन्ध संगृहीत हैं। निबन्ध किसी सन्दर्भ विशेष से जुड़े नहीं है। मोटे तौर पर इसमें 'परम्परा', 'इतिहास', 'पत्रकारिता', 'राष्ट्रीयता', 'तुलसीदास और निराला के राम की वैशिष्ट्यगत एकता', 'रस-सिद्धान्त और आधुनिक काव्य', 'आलोचना के प्रतिमान', 'राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी का कला-चिन्तन', 'हिन्दी कविता के पचास वर्ष' आदि विविध प्रकार के निबन्ध संगृहीत हैं।'' इस उल्लेख से आसानी से समझा जा सकता है कि आचार्य रामचन्द्र तिवारी ने अनेक ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों, सन्दर्भों और चिन्ताओं को केन्द्र में रखकर अपने आलोचनात्मक विवेक और साहित्य-चिन्तक का परिचय दिया है जिन पर साहित्यकार और मनीषी बराबर चिन्तन-मनन करते रहते हैं। पुस्तक के प्रारम्भिक दो निबन्ध—*परम्परा और साहित्य : हिन्दी साहित्य के सन्दर्भ में, परम्परा और इतिहास—विद्यानिवास मिश्र की दृष्टि में* विशेष रूप से हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं। इन निबन्धों से तिवारीजी की सारगर्भित एवं संतुलित मूल्यांकन-दृष्टि को आसानी से समझा जा सकता है। तिवारीजी की विशेषता यह है कि वे किसी समस्या पर एकतरफा राय नहीं प्रकट करते हैं बल्कि पथ-विपथ को उनके तर्कों के साथ पहले आमने-सामने कर देते हैं, उसके बाद अपने सुचिन्तित मत को व्यक्त करते हैं, इसलिए उनके इस दावे में दम है कि आलोच्य पुस्तक के निबन्ध 'सारगर्भित एवं सुचिन्तित हैं।'

परम्परा और इतिहास का विचार करते हुए उन्होंने दोनों की प्रकृति और प्रयोग की दृष्टि को पहले रेखांकित किया, उनसे सम्बन्धित वैचारिक उहापोह को उपस्थित किया, उसके बाद लिखा—''इस सारे उहा-पोह के भीतर से परम्परा के सम्बन्ध में दो पथ उभर कर सामने आते हैं। एक तो यह कि 'परम्पराबोध' 'इतिहासबोध' नहीं है। वह इतिहास की सीमाओं का अतिक्रमण करता है। वह देशकाल बद्ध न होकर सतत् प्रवाहमान है। दूसरा यह कि 'परम्पराबोध' एक तरह का इतिहास-बोध ही है। वह साहित्य के माध्यम से व्यक्त वर्ग-विशेष की सांस्कृतिक अभिरुचि ही है। उसे शाश्वत नहीं माना जा सकता।'' इस रेखांकन के बाद तिवारीजी ने दोनों दृष्टियों की सोदाहरण मीमांसा की है, तद्नन्दर यह स्थापित किया है कि परम्परा की शाश्वतता और दार्शनिक चिन्तन के क्रम में 'सत्य' की 'नित्यता' और 'अखण्डता' साहित्य के क्षेत्र में स्वीकार्य नहीं हो सकती। वे लिखते हैं—''साहित्य के इतिहास को मानव-चेतना को विकसित करने वाले सभी तत्त्वों के विकास के सन्दर्भ में ही देखा जा सकता है। मानवसमाज और संस्कृति विकासशील है। उससे प्रेरित और प्रभावित साहित्य भी परिवर्तनशील है।'' ऐसी स्थिति में वे मानते हैं कि ''साहित्य के विश्लेषण-क्रम में हमें न केवल इतिहास की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करना होगा वरन् साहित्य की ऐतिहासिकता को भी महत्त्व देना होगा।'' उनका स्पष्ट मत है कि ''साहित्य-चेतना और उसके विधायक एवं प्रेरक सामाजिक उपादानों के जटिल सम्बन्धों की सही पहचान ही साहित्य की परम्परा का बोध है।..... इतिहास-निरपेक्ष नित्य एवं शाश्वत चेतना की परिकल्पना चाहे जितनी उदात्त और मोहक हो, व्यावहारिक स्तर पर उसकी प्रयोजनीयता संदिग्ध है।''

पं० विद्यानिवास मिश्र के 'परम्परा और इतिहास' सम्बन्धी दृष्टिकोण की विस्तृत समीक्षा करते हुए आचार्य तिवारी ने उनके 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद' सम्बन्धी विचार की गम्भीर आलोचना की है। मिश्रजी को 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद' इसलिए स्वीकार्य नहीं है क्योंकि इसमें 'सहज' अधिकार का अस्वीकार है। उनका कहना है कि मार्क्सवादी विचारक 'परम्परावाद' को 'जनवाद' के नाम पर ऐतिहासिक भौतिकवाद की चेरी बनाकर परम्परा की धरोहरी बन जाते हैं। तिवारीजी यह स्वीकार करते हैं कि ऐतिहासिक भौतिकवाद इतिहास की व्याख्या भौतिकवादी दृष्टि से करता है लेकिन वे यह मानते हैं कि केवल इतना कह देने से काम नहीं चलेगा बल्कि उस विचारधारा के खोखलेपन को उजागर करना होगा। इसी के साथ वे यह प्रश्न भी करते हैं—''विचार, राजनीति, कला, संस्कृति, धर्म आदि को समाज की आर्थिक संरचना प्रभावित करती है या नहीं?'' और वे स्पष्ट करते हैं कि 'इतिहास सर्वग्रासी दृष्टि है।' इसे नकारा नहीं जा सकता है। तिवारीजी ने 'इतिहास और परम्परा' से सम्बन्धित मिश्रजी के विचारों की नवीनता और प्रखरता का स्वागत किया है, उनके चिन्तन की मौलिकता की भी प्रशंसा की है किन्तु यह भी लिखा है कि ''इतिहास को उन्होंने जिस ढंग से खारिज किया है उस पर फिर से विचार करने की आवश्यकता है। आज का मनुष्य इतिहास को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास कर सकता है। इतिहास के अनुकूल अपने को ढालने की चेष्टा कर सकता है किन्तु इतिहास को नकार नहीं सकता है। देशकाल के अतिक्रमण की बात अवधारणा के स्तर पर जितनी प्रीतिकर है, व्यवहार के स्तर पर उतनी ही दुस्साध्य है।''

उपर्युक्त दोनों निबन्धों के सन्दर्भ से यह भलीभाँति जाना जा सकता है कि तिवारीजी विद्वानों की स्थापनाओं से जब टकराते हैं तब उनका परीक्षण वे व्यावहारिक धरातल पर करके उनकी समीचीनता और असमीचीनता का निर्णय देते हैं। वे कोरे चिन्तन के पक्षधर नहीं हैं। जो चिन्तन जीवन-सत्य से प्रभावित नहीं होता, वह उनके लिए प्रीतिकर नहीं हो सकता। यह जीवनधर्मी दृष्टि तिवारीजी के विचारों को तार्किक आधार भी देती है और नया प्रकाश भी। पुस्तक के अन्य निबन्धों के सन्दर्भ में भी इस तथ्य को रेखांकित किया जा सकता है।

तिवारीजी जिस भी विषय को अपने विचार के केन्द्र में लाते हैं, उस पर काफी विचार-मंथन करके विश्वास-योग्य निष्कर्ष निकालते हैं। इससे उनकी आलोचना में विश्वसनीयता और आत्मीयता आ जाती है और आलोचना में पाठक को सहमत करने की क्षमता पैदा हो जाती है। उनकी आलोचना की इन विशेषताओं को समझने के लिए

'भारतीय लोक : बहुवचन के पक्ष में', 'हिन्दी कविता के पचास वर्ष', 'आलोचना के प्रतिमान', 'रस-सिद्धान्त और आधुनिक काव्य', 'आलोचना के विरोधी प्रतिमानों के बीच सामंजस्य की सम्भावना' जैसे निबन्ध विशेष रूप से पठनीय हैं। इन निबन्धों में तिवारीजी ने अपनी सामंजस्यवादी दृष्टि का परिचय दिया है। उनका मानना है कि जो भी मूल्य या प्रतिमान जिन रचनाकारों पर विकसित हुए हैं, वे एकदम निरर्थक या अप्रासंगिक नहीं हैं किन्तु नयी रचनाशीलता के मूल्यांकन के लिए नये प्रतिमानों की भी आवश्यकता है। वे लिखते हैं—''आलोचना के प्राचीन प्रतिमान कालजयी कृतियों में निहित सौन्दर्य-विधयाक तत्त्वों के आधार पर प्रतिष्ठित होने के कारण आधुनिक सौन्दर्य चिन्तन के सन्दर्भ में भी पूर्णत: अप्रासंगिक नहीं हुए हैं। आवश्यकता विवेकपूर्वक उनमें निहित उपयोगी तत्त्वों के अनुसंधान की है।'' कहना न होगा कि 'विवेकपूर्वक उपयोगी तत्त्वों के अनुसंधान' की यह दृष्टि ही तिवारीजी की आलोचना को अधिक मूल्यवान और सार्थक बनाती है, साथ ही उनकी सामंजस्य की चेतना भी उनकी दृष्टि को और पुख्ता कर देती है। आलोचना के विरोधी प्रतिमानों के बीच भी वे सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता पर बल देते हैं। इसके लिए वे आधार भी स्पष्ट करते हैं—''वस्तुवादी एवं रूपवादी आलोचनादृष्टियों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि हम 'रचना' की पूर्ण स्वयत्तता के स्थान पर उसकी 'सापेक्ष-स्वायत्तता' स्वीकारें।'' दरअसल तिवारीजी एकांगी दृष्टि के कायल नहीं हैं, वे जीवन और रचना को पूर्णता में, कहना चाहिए कि उनके पूरे परिप्रेक्ष्य के साथ समझना-जानना चाहते हैं, इसलिए वे यह नहीं मानते कि कुछ को छोड़कर कुछ पर विचार किया जाय। इसके लिए ही वे सामंजस्यवादी दृष्टि अपनाते हैं किन्तु वे आगाह करते हैं कि उनकी इस दृष्टि को 'समझौतावादी दृष्टि' न माना जाय, बिल्क यह दृष्टि पूर्ण एवं समग्र दृष्टि की खोज है—''समीक्षा के क्षेत्र में वस्तुवाद और रूपवाद या रचना की पूर्ण स्वायत्त स्थिति और समाज सापेक्ष्य स्थिति के बीच सामंजस्य की बात कहना किसी प्रकार की समझौतावादी दृष्टि का परिचायक नहीं है। सामंजस्य की खोज, पूर्ण एवं समग्र दृष्टि की खोज है।'' उनका मानना है कि यह पूर्णता और समग्रता वस्तु और रूप को अलग-अलग करके देखने से नहीं प्राप्त होगी क्योंकि दोनों में तत्त्वत: अभेद है। इसे अभेद दृष्टि से ही जाना-समझा जा सकता है।

आलोच्य पुस्तक में संकलित सभी निबन्धों पर विस्तार से विचार करना यहाँ सम्भव नहीं है। इसलिए साररूप में यही कहना उपयुक्त है कि ऊपर जिन निबन्धों के परिप्रेक्ष्य में तिवारीजी की आलोचना-दृष्टि की विशेषताओं को रेखांकित किया गया है. वह उनके अन्य निबन्धों में भी विद्यमान है। इस पुस्तक के सभी निबन्ध महत्त्वपूर्ण और विचार-चिन्तन की दृष्टि से उपयोगी हैं। इनमें तिवारी जी की जीवन-दृष्टि, इतिहास-दृष्टि और आलोचना-दृष्टि एक साथ सक्रिय है। कहना चाहिए कि प्रस्तुत पुस्तक तिवारीजी की स्वस्थ साहित्य-दृष्टि का परिचय भी देती है और उनकी व्यावहारिक समीक्षा की गुणवत्ता से साक्षात्कार भी कराती है।

सजिल्द : रु० 300.00 (ISBN : 978-81-7124-598-7)
अजिल्द : रु० 200.00 (ISBN : 978-81-7124-599-4)
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

आधुनिक भारत के युग प्रवर्तक संत

[रामकृष्ण परमहंस से स्वामी रामानन्द तक]

लक्ष्मी सक्सेना

प्रथम संस्करण : 2007

पृष्ठ : 216

योग, साधना, तप, संयम इन भावों को जिन महान संतों ने अपने माध्यम से चरितार्थ ही नहीं किया; बल्कि दर्शन को एक नयी दिशा भी दी उन संन्यासियों में अग्रणी रामकृष्ण परमहंस देव थे। उनके पश्चात् यह शृंखला स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, महर्षि रमण, श्री अरविन्द, स्वामी रामानन्द के माध्यम से निरन्तर भारतीय संस्कृति को सम्मानित करती रही है, साथ ही भारतीय दर्शन को दिव्य अनुभूतिपरक दर्शन का बाना पहनाकर संसार में अग्रणी स्थान प्रदान करती रही है।

आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो पुन: हमारा देश विपत्ति के भँवर में फँसा इन्हीं योगियों की ओर देख रहा है। इनकी जीवन दृष्टि, विचार ही मृतप्राय हो रही भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवन प्रदान कर सकते हैं। हम भूल चुके हैं हमारे देश की मिट्टी में, जलवायु में अभी भी योग और साधना की शक्ति है। जिसके प्रति जागरूक होकर व्यक्ति अपनी चेतना को जागृत कर सकता है। भ्रमपूर्ण आसक्तियों पर, मन पर, शरीर पर अंकुश लगाकर जीवन के शाश्वत आनन्द की ओर अग्रसर हो सकता है। यह पुस्तक उन सभी दुर्लभ विचारों को प्रस्तुत करने की चेष्टा करती है जो व्यक्ति को दिशा प्रदान कर सकते हैं। इन योगियों की विशिष्टता यही है कि योग साधना एवं संन्यास का रास्ता अपनाकर भी इन्होंने निरन्तर मानव जाति के बीच रहकर बड़ी सरलता से, व्यक्ति की आत्म चेतना को जगाने का प्रयास किया है।

सजिल्द : रु० 250.00 (ISBN : 978-81-87760-13-9)
अजिल्द : रु० 150.00 (ISBN : 978-81-87760-12-2)
प्रकाशक : लोकायत प्रकाशन, वाराणसी

सा रे ग म

[सरगम गीतों का रचना-संग्रह]

डॉ० आर. वी. कविमण्डन

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 168

हमारा भारतीय शास्त्रीय संगीत 'राग-प्रधान' है। गाने अथवा बजाने में जो भी विस्तार या सृजन किया जाता है, उसका केन्द्र-बिन्दु राग ही होता है।

संगीत के प्रत्येक विद्यार्थी के लिए राग का स्वरूप, उसकी बारीकियाँ, उसका स्वभाव आदि भली-भाँति जान लेना अनिवार्य रूप से आवश्यक होता है। संगीत के प्रारम्भिक विद्यार्थियों को स्वल्प परिश्रम से राग का स्वरूप संक्षिप्त रूप में बोध कराने के उद्देश्य से विद्वानों ने 'आरोह', 'अवरोह' तथा 'पकड़' का आविष्कार किया होगा। परन्तु मात्र इतने से राग का परिचय पा लेना असम्भव है। राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों का 'अल्पत्व', 'बहुत्व', उनका 'वजन' उनका 'बर्ताव' आदि का ज्ञान केवल आरोह, अवरोह, पकड़ आदि रट लेने मात्र से कदापि सम्भव नहीं है, परन्तु उनमें स्वरों का बर्ताव, राग का 'चलन' भिन्न होने से वे अलग राग बन जाते हैं। इन सूक्ष्म तत्त्वों का ज्ञान होना संगीत के विद्यार्थियों के लिए परम आवश्यक है। थोड़े से परिश्रम से राग का समग्र स्वरूप जान लेने के उद्देश्य से 'सरगम-गीत' से अच्छा और कोई उपाय नहीं है। पुराने जमाने के उस्ताद अपने शागिर्दों को सर्वप्रथम राग का 'सरगम-गीत' भली-भाँति रटवाकर उसका खूब अभ्यास करवाते थे, जिसका आजकल नितान्त अभाव है। इस अभाव के कारण पुराने जमाने के अनेक विलक्षण 'सरगम-गीत' विलुप्त हो गए हैं। यदि वे 'सरगम-गीत' आज उपलब्ध होते तो हमारे आज के संगीत-विद्यार्थियों का बड़ा उपकार होता। यही चिन्तन करते हुए संगीतज्ञ डॉ० आर०वी०कविमण्डन को यह प्रेरणा मिली कि क्यों न फिर से 'सरगम-गीतों' की रचना की जाय ताकि विद्यार्थियों को आसानी से 'राग-ज्ञान' हो सके। इसी चिन्तन का परिणाम यह पुस्तक है।

इन सरगम गीतों की रचना एक दिन में नहीं हुई है। लगभग सात वर्षों की लम्बी अवधि में इतनी रचनाएँ बन सकीं। इन रचनाओं को भातखण्डे स्वर-लिपि पद्धति में लिपिबद्ध किया गया है। इन सरगम गीतों के अतिरिक्त दैनिक अभ्यास हेतु प्रारम्भ में ही चुने हुए 31 अलंकार भी दिये गये हैं।

अजिल्द : रु० 160.00 (ISBN : 978-81-7124-616-8)
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अब तो बात फैल गई

[यादों, विवादों और संवादों की संस्मरणात्मक प्रस्तुति]

डॉ० कान्तिकुमार जैन

प्रथम संस्करण : 2007

पृष्ठ : 264

वे बतकही के संस्मरणकार हैं

एक संस्मरणकार के रूप में **कान्तिकुमार जैन** ने साहित्य में अपने लिए खास स्थान बना लिया है। संस्मरणों की यह धारा यदि विद्यापुरम्, मकरौनिया से न फूटती तो वे एक भाषाविद्, समीक्षक, सफल प्राध्यापक, बढ़िया और खाँटी इन्सान के रूप में तो जाने जाते, लेकिन एक साहित्यकार के रूप में उन्हें इस तरह कोई न जानता। उन्होंने जब ये संस्मरण लिखने शुरू किये तो दो-चार लिखकर रह नहीं गये, उन्होंने इस धारा में बाढ़-सी ला दी। आज उनके संस्मरणों की खासी चर्चा है और पत्र-पत्रिकाओं में बेहद माँग है। असल में ये संस्मरण बलाय टालने के लिए नहीं लिखे गये हैं, इनमें जीवन बोलता है। वह जीवन जो साहित्यकारों, विचारकों और अध्यापकों ने एक इंसान के रूप में जिया है। कान्ति बाबू ने हिन्दी साहित्य में इस विधा को प्रौढ़ि दी, नया आयाम दिया और उसे शिखर तक पहुँचाया। उन्होंने ये संस्मरण डूब कर लिखे, जमकर लिखे और घाघरा के पाट की तरह विस्तार से लिखे। इनमें बतकही का रस ही नहीं विचार का, अध्ययन का, अनुभव का, प्रज्ञा का पुष्ट आधार भी है। हिन्दी में अब तक ऐसे संस्मरण थे नहीं। इन्होंने संस्मरणों के लिए उन्हीं व्यक्तियों को चुना, जो इनके हृदय को या तो गहरायी से छू सके, या आघात पहुँचा सके या इनके लिए यादगार बन सके, जिन्होंने पीढ़ियाँ बनायीं, स्वयं प्रेरक थे या प्रेरणा के स्रोत थे। उन्होंने प्रातः स्मरणीयों, वरणीयों पर ही संस्मरण नहीं लिखे, गर्हणीयों पर भी संस्मरण लिखे। उन्होने यह खोलकर रख दिया कि शिखर के नीचे तलहटी भी होती है, गर्त भी होते हैं और दीपक तले अँधेरा भी होता है। सबसे बड़ी बात व्यक्ति के कार्य-कलापों के साथ उसका जीवन कैसा था, कैसा जिया उसने अपना जीवन, क्या प्रभाव छोड़ा—लोगों की 'मास' को, समूह को वह कैसा लगा अर्थात् व्यक्ति ही नहीं कान्तिकुमार जैन के संस्मरणों में उनका परिवेश भी जीवंत हो उठा है। वे परिवेश के भी संस्मरणकार हैं। दीन-दुनिया से क्या, पर वे दीन दुनिया की भी खबर लेने वाले हैं। उन्होंने अपने संस्मरणों में खाँटी इंसान को देखने का प्रयास किया है, उस पर किसी आदर्श का मुलम्मा नहीं चढ़ाया है। ये संस्मरण सिर्फ शाकाहारी नहीं हैं नॉनवेज भी हैं। इनमें हर जगह को उघाड़ा गया है यदि जरूरत पड़ी, परहेज नहीं, न प्याला से, न हाला से और न वाला से। शर्त यही है संस्मरणेय के जीवन में यह सब होना चाहिए। खुद तो जैन साहब जैन हैं पर वे रजनीशी जैन नहीं हैं—वे अपने लक्ष्य पर दृष्टि रखे हुए संस्मरणेय के ऊबड़-खाबड़ जीवन को भी बखूबी एक तरतीब से शब्द देने वाले हैं। **— डॉ० रामशंकर द्विवेदी**

प्रसिद्ध समीक्षक एवं अनुवादक, उरई

हाल के वर्षों में जिस अकेले लेखक ने संस्मरण के लालकिला और ताजमहल को एक साथ फतेह किया है उसका नाम कांतिकुमार जैन है, 'अब तो बात फैल गई' उनकी चौथी संस्मरणात्मक पुस्तक है। अपने पुराने अंदाज में कांतिजी ने इस बार भी खूब गोलाबारी की है, लेकिन आँख मूँदकर नहीं। उन्होंने 'अब तो बात फैल गई' में फिर से संस्मरण का विस्फोट किया है, जिससे घायल तो अनेक होंगे लेकिन हताहत कोई भी नहीं। ऐसा लगता है कि परसाई जी के व्यंग्य ने कांतिजी के संस्मरण में पुनर्जन्म लिया है। अच्छी बात यह है कि कांतिजी इसी जन्म में तमाम लोभ-लाभ और माया-मोह से ऊपर ही नहीं उठ गए हैं विदेह भी हो गए हैं। **— भारत भारद्वाज**

सजिल्द : रु० 250.00 (ISBN : 978-81-7124-586-4)

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य

[कवियों, लेखकों, साहित्यकारों तथा राजनीतिज्ञों के मनोरंजक प्रसंगों का अपूर्व संग्रह]

डॉ० भवानीलाल भारतीय

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 104

साहित्य शास्त्रियों ने नवरसों में हास्य का प्रमुख स्थान माना है। भक्ति रस में आपाद मस्तक रंगे सूरदास और गोस्वामी तुलसीदास जैसे भक्त कवियों ने भी यथा प्रसंग स्वकाव्य में हास्य और व्यंग्य के छींटे बिखेरे हैं। भारतेन्दुकालीन साहित्यकारों का गद्य-पद्य, यत्र-तत्र हास्य तथा व्यंग्य के तत्त्वों से सुरभित है। प्रस्तुत ग्रन्थ में जहाँ हिन्दी तथा कतिपय भारतीय भाषाओं के लेखक-साहित्यकारों के हास्य प्रसंग संग्रहीत हैं, वहीं अंग्रेजी साहित्य के हास्य कणों को भी स्थान मिला है। राजनीति का क्षेत्र भले ही कंटकाकीर्ण तथा विषम प्रतीत होता हो किन्तु प्रगल्भ राजनीति कर्मी अपने वक्तव्यों तथा लेखन से यदा-कदा, यत्र-तत्र हास्य की फुहारें छोड़ते दिखाई देते हैं। इन रोचक प्रसंगों को पढ़ना आरम्भ कर आप अन्त तक विस्मय विमुग्ध रहेंगे।

सजिल्द : रु० 100.00 (ISBN : 978-81-89498-25-2)

अजिल्द : रु० 50.00 (ISBN : 978-81-89498-26-9)

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, चौक, वाराणसी

प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास

[प्राचीन इतिहास]

डॉ० (सुश्री) शरद सिंह

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 360

डॉ० (सुश्री) शरद सिंह द्वारा लिखित 'प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास' उपयोगी पुस्तक है। इसके प्रथम खण्ड में सामाजिक दशा का दिग्दर्शन कराया गया है, जिसके अन्तर्गत तत्कालीन वर्ण-व्यवस्था, जाति-प्रथा के साथ-साथ परिवार की संरचना का भी वर्णन है। विविध संस्कार और उनकी सामाजिक उपयोगिता के अतिरिक्त लेखिका ने मनुष्य के कर्त्तव्यों का भी बोध कराया है। आहार-विहार के साथ ही जीवन में कला की सार्थकता तथा उसके स्वरूप पर भी प्रकाश डाला गया है। पुस्तक में भारतीय समाज के दोषों यथा—जाति-प्रथा, ऊँच-नीच की भावना और अस्पृश्यता आदि का भी वर्णन करना लेखिका नहीं भूली हैं।

पुस्तक का दूसरा खण्ड आर्थिक जीवन से सम्बन्धित है। कृषि, भारत में जीवन-यापन का प्रमुख साधन रहा है जिससे सम्बन्धित क्षेत्र (खेत), उनका स्वामित्व, कृषि-कार्य तथा स्पादों का सटीक वर्णन पुस्तक में प्राप्त होता है। उद्योग-धन्धों की उपादेयता तथा उनके प्रकार, श्रेणी और नियमों, विनिमय के साधन, वाणिज्य, वणिक और पण्य पर भी भली-भाँति प्रकाश डाला गया है। पुस्तक में भारत और दक्षिणी पूर्वी एशिया तथा पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों का भी रोचक विवरण दिया गया है।

डॉ० शरद सिंह ने दो परिशिष्टों में उपभोक्ता संरक्षण तथा वैदिक जल संरक्षण चेतना का वर्णन करके पुस्तक को और अधिक सार्थक तथा सामयिक बना दिया है। मेरा विश्वास है कि समग्र रूप में पुस्तक छात्रों और अध्यापकों तथा सामान्य सुधी पाठकों के लिये रुचिकर और हितकर होगी। इस कृति के लिए डॉ० सिंह साधुवाद की पात्र हैं।

—प्रो० (डॉ०) अँगने लाल

प्रोफेसर, प्रा०भा० इतिहास और पुरातत्व (सेवानिवृत्त)

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

पूर्व कुलपति, डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

सजिल्द : रु० 280.00 (ISBN : 978-81-7124-592-5)

अजिल्द : रु० 180.00 (ISBN : 978-81-7124-593-2)

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

संत रज्जब

[सन्त साहित्य]

डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय

द्वितीय संशोधित तथा
परिवर्धित संस्करण : 2007

पृष्ठ : 212

रज्जब भक्ति आन्दोलन के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। दुर्भाग्य से भक्ति आन्दोलन के सन्दर्भ में हम जिन कवियों की चर्चा करते हैं उनमें रज्जब छूट जाते हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में सर्वाधिक मुस्लिम कवि भक्तिकाल में हुए। रज्जब, रहीम और रसखान के बाद के हैं। जायसी जैसे सूफी कवि के भी बाद के। ये न रामभक्त कवि हैं न कृष्णभक्त। ये राम-रहीम और केशव-करीम की एकता के गायक हैं। निर्गुण संत हैं। दादूदयाल के प्रमुख शिष्यों में से एक।

कबीर के बोध को जन-जन तक पहुँचाने में दादूपंथी संतों की बड़ी भूमिका है। संख्या की दृष्टि से दादू के जीवन में ही जितनी बड़ी संख्या में शिष्य-प्रशिष्य दादू के बने, सम्भवत: उतने शिष्य किसी अन्य संत के नहीं। दादूपंथी संतों में एक बहुत बड़ी संख्या पढ़े-लिखे संतों की है। जगजीवनदास जैसे शास्त्रार्थी, सुन्दरदास जैसे प्रकाण्ड शास्त्र पण्डित और साधु निश्चलदास जैसे दार्शनिक दादूपंथी ही थे। संत साहित्य के संरक्षण और संवर्धन की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य दादूपंथियों ने किया। इन संतों ने अपने गुरु की वाणियों को संरक्षित तो किया ही, पूर्ववर्ती तमाम संतों की वाणियों का संरक्षण भी किया। ऐसे संतों में रज्जब का नाम महत्त्वपूर्ण है। रज्जब ने संग्रह, सम्पादन की नयी तकनीक विकसित की। सम्पूर्ण संत साहित्य को रागों और अंगों में विभाजित किया। विभिन्न अंगों में सम्बन्धित विषय की साखियाँ चुन-चुनकर रखी गयीं। यह बहुत बड़ा काम था। रज्जब ने यह काम तब किया जब अपने ही लिखे के संरक्षण की बात बहुत मुश्किल थी। रज्जब के संकलन में एक, दो, दस नहीं 137 कवि हैं। एक ओर इस संग्रह में कबीर, रैदास जैसे पूर्वी बोली के संत हैं तो दूसरी ओर दादू, स्वयं रज्जब, वषना, गरीबदास, षेमदास, पीपा जैसे राजस्थानी बोलियों के संत हैं। नानक, अंगद, अमरदास पंजाबी भाषा-भाषी हैं तो ज्ञानदेव और नामदेव जैसे मराठी मूल के कवि भी इस संग्रह में हैं। अवधी और ब्रजभाषा में लिखने वाले संतों की बहुत बड़ी संख्या इस संग्रह में है। संस्कृत के महान आचार्यों यथा शंकराचार्य, भर्तृहरि, व्यास और रामानन्द को भी इस संग्रह में स्थान मिला है। इस संग्रह के कवि विभिन्न धर्म एवं सम्प्रदायों के हैं।

ग्रन्थों के ग्रन्थन की एक सर्वथा नूतन पद्धति 'अंग' को अंगीकृत कर रज्जब ने संकलन-सम्पादन के क्षेत्र में मौलिक कार्य किया है। यह पद्धति अध्याय, सर्ग, उच्छ्वास, उल्लास, अंक, तरंग, परिच्छेद, उद्योत, विमर्श से भिन्न है। सर्वथा पृथक और नूतन। अंगों के साथ रागों का निबंधन इस ग्रन्थ को और अधिक सूक्ष्म बनाता है।

संत साहित्य के अध्ययन-मनन के क्षेत्र में यह पुस्तक कुछ नये आयाम जोड़ेगी और हिन्दी साहित्य के सुधी पाठकों को पसन्द आयेगी।

सजिल्द : रु० 180.00 (ISBN : 978-81-7124-605-2)
अजिल्द : रु० 120.00 (ISBN : 978-81-7124-604-5)
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

ज्ञान-गंगा

[अध्यात्म]

स्व० नरोत्तमदास खत्री

प्रथम संस्करण : 2007

पृष्ठ : 188

यह ग्रन्थ रंचमात्र धार्मिक एवं आध्यात्मिक रुचि रखने वाले पाठकों के लिए निर्विवाद रूप से परम उपयोगी तथा प्रयोजनीय है। अध्यात्म से सम्बन्धित कोई ऐसा महत्त्वपूर्ण विषय नहीं है जिसका समावेश इसमें नहीं किया गया हो। प्राय: इतने ही विषय हैं जिन्हें लेकर किसी मुमुक्षु के मन में जिज्ञासा हो सकती है और इन सभी का यथासंभव संक्षिप्त, प्रामाणिक, सरल एवं सर्वग्राह्य समाधान प्रस्तुत करना ही इस ग्रन्थ का प्रयोजन है।

सजिल्द : रु० 150.00 (ISBN : 978-81-7124-600-7)
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail: vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com

स्वर से समाधि

[अध्यात्म एवं योग]

स्वामी कृष्णानन्दजी 'महाराज'

प्रथम संस्करण : 2007

पृष्ठ : 180

इस परम उपयोगी पुस्तक के रचयिता हैं स्वामी कृष्णानन्दजी 'महाराज'। अपनी युवावस्था में ही शांति की खोज में इन्होंने राजयोग, हठयोग, तंत्र-साधना आदि का गहन अभ्यास किया। अंततोगत्वा इन्होंने शरण ली कबीरपंथी स्वामी आत्मादास की। उनका शिष्यत्व ग्रहण किया और स्वर की साधना में परिपक्वता प्राप्त की।

कबीर 'जप' की नहीं 'अजपा' की बात करते हैं। 'जप' मन से होता है और 'अजपा' श्वास से। बिना जपे जो जाप हो वह अजपा। कबीर जैसे सद्गुरु शिष्य का जाप छीन लेते हैं और उसे अजपा दे देते हैं। 'अजपा' के लिए श्वास को देखना होता है। जब आप आसन पर बैठ जाते हैं, चित्त स्थिर हो जाता है, तब ध्यान नासिका के अग्रभाग पर लगाना होता है। श्वास बाहर जाता है फिर अंदर आता है। श्वास के बाहर जाने और अन्दर आने के समय जो शब्द या ध्वनि होती है वही 'स्वर' या 'सार' शब्द है। सद्गुरु कबीर कहते हैं कि इसी 'स्वर' या 'सार' शब्द को जो पकड़ लेता है उसे मुक्ति तत्काल मिल जाती है। यह सार शब्द उन असंख्य नामों से भिन्न है जिनका सामान्यत: जप किया जाता है। यह तो गुरु कृपा से ही सुलभ होता है। 'श्वास' को इस प्रकार देख लेने से शिष्य का उद्धार हो जाता है और उसे सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। श्वास को देख लेने के बाद अर्थात् स्वर दर्शन हो जाने के बाद शिष्य को परम शांति की प्राप्ति होती है, अभूतपूर्व सुख-चैन मिलता है। अब उसे ऋद्धियों-सिद्धियों की आवश्यकता ही अनुभूत नहीं होती। उसके लिए ये सब उपेक्ष्य हो जाती हैं।

उत्तम शिष्य के चार लक्षणों का उल्लेख स्वामी कृष्णानन्दजी ने किया है। उसे शांत चित्तवाला होना चाहिए, मन, वचन और कार्य से शुद्ध होना चाहिए (अर्थात् तीनों में सामंजस्य रहना चाहिए), सदाचारी होना चाहिए और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित तथा उसका आज्ञाकारी होना चाहिए।

उन्होंने श्वास सम्बन्धी हुए वैज्ञानिक अध्ययन तथा उसके जीवन व अन्य क्रियाकलापों पर होने वाले प्रभावों का भी अंकन किया है तथा शंकर, याज्ञवल्क्य, अत्रि, कश्यप, परशुराम आदि महान ऋषि-मुनियों के स्वर-साधन सम्बन्धी अनुभवों का भी वर्णन किया है। **—डॉ० बदरीनाथ कपूर**

अजिल्द : रु० 100.00 (ISBN : 978-81-7124-597-0)
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

पिंगल कृत छन्द:सूत्रम्

[वैदिक गणितीय अनुप्रयोगों सहित] (हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद सहित)

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी
डॉ० श्यामलाल सिंह

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 340

वैदिक छन्द-शास्त्र की परम्परा वेदों के प्रकट काल से आरम्भ होती है। आचार्य पिंगल से पूर्ववर्ती छन्द-शास्त्र के आचार्यों के दो दर्जन से अधिक नाम तो मिलते हैं किन्तु आचार्य पिंगल का 'छन्द:सूत्रम्' ही छन्द-शास्त्र की प्राचीनतम उपलब्ध पुस्तक है। जिसका लम्बे समय से पाठ्य-पुस्तक के रूप में प्रयोग हो रहा है।

आधुनिकतम खोजों के अनुसार इनके माता-पिता वर्तमान पेशावर जिले में शालातुर ग्राम के निवासी थे। आचार्य पिंगल के नाम से प्रसिद्ध *पिंगल नाग* का समय 2850 बी०सी० या इससे पूर्व बताया जाता है।

दसवीं शताब्दी के गणित एवं संस्कृत के आचार्य हलायुध भट्ट की 'मृतसंजीवनी' छन्द:सूत्रम् की सबसे लोकप्रिय एवं प्रामाणिक टीका है जिसका प्रयोग भारतीय उपमहाद्वीप में लगभग 1050 वर्षों से हो रहा है। छन्द:सूत्रम् की कतिपय अन्य टीकाएँ भी हैं, किन्तु मृतसंजीवनी अथवा किसी अन्य टीका का हिन्दी अथवा अंग्रेजी रूपान्तरण नहीं हुआ है। वर्तमान पुस्तक में मृतसंजीवनी को आधार बनाते हुए सभी सूत्रों का शब्दार्थ देने के साथ हिन्दी व अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है तथा आवश्यकतानुसार उनकी विवेचना की गई है।

आचार्य पिंगल ने वैदिक गणित का अभिनव प्रयोग अपने छन्द:सूत्रम् में किया है। इसके आठवें अध्याय में प्रत्ययों के अन्तर्गत छ: प्रकार के गणितीय प्रयोग दिए गए हैं। दो प्रकार की वैदिक द्वि-आधारी संख्याएँ, संचय श्रेढी, वर्णिक मेरु, मात्रिक मेरु एवं अन्य सम्बन्धित वैदिक गणित की विधाएँ विशेष आकर्षक इसलिए भी हैं कि गणितशास्त्र के आधुनिक इतिहास पर इनका दूरगामी प्रभाव पड़ेगा तथा गणित एवं कम्प्यूटर विज्ञान के अध्येताओं के लिए नूतन सामग्री भी इसमें है।

वैदिक एवं लौकिक छन्द-शास्त्र तथा गणित के प्रेमियों, छात्रों, शिक्षकों एवं संगीतकारों के लिए उपयोगी वर्तमान पुस्तक का लाभ सभी वर्ग एवं आयु के अनुशीलनप्रिय व्यक्तियों को मिलेगा। विचारों के इतिहास में छन्द:सूत्रम् एक अद्‌भुत रचना है जिसका प्रभाव अन्य सांस्कृतिक प्रक्षेत्रों पर पड़ना अवश्यम्भावी है। अस्तु, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के अध्येताओं एवं शोधार्थियों के लिए भी यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

सजिल्द : रु० 300.00 (ISBN : 978-81-7124-634-2)
अजिल्द : रु० 200.00 (ISBN : 978-81-7124-635-9)
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रारम्भिक सांख्यिकीय विधियाँ

[शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी]

डॉ० प्रवीण चन्द्र श्रीवास्तव

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 284

वर्तमान में शिक्षा का परिदृश्य अत्यन्त परिवर्तित हो चुका है। 'शिक्षक-केन्द्रित व्यवस्था' के स्थान पर 'छात्र-केन्द्रित व्यवस्था' तथा 'शिक्षण' के स्थान पर 'अधिगम' को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा है।

परम्परागत पाठ्य पुस्तकें छात्रों में अधिगम जनित कराने में सर्वथा असमर्थ हैं। इन परिस्थितियों में ऐसी पुस्तकों की नितान्त आवश्यकता है जो छात्रों को अभिप्रेरित करते हुए उनमें व्यवहारगत परिवर्तन ला सकें।

प्रस्तुत पुस्तक में उपर्युक्त बातों की गहन आवश्यकता महसूस करते हुए लेखक ने प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में ही अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को निर्धारित कर दिया है तथा विषय वस्तु को छोटे-छोटे अंशों में एक-दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करते हुए प्रस्तुत किया है। प्रत्येक अंश में छात्र को सक्रिय अनुक्रिया करने के लिए बाध्य किया गया है तथा समवर्ती मूल्यांकन का प्रयोग करते हुए स्वमूल्यांकन की विधा को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। उक्त विशिष्टताओं के कारण प्रस्तुत पुस्तक औपचारिक शिक्षा से जुड़े छात्रों के साथ-साथ निरौपचारिक शिक्षा से जुड़े छात्रों हेतु भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक में प्रमुख सांख्यिकीय विधियों को 14 अध्यायों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक का आरम्भ एक अति आधारभूत प्रश्न 'सांख्यिकी क्या है?' से करते हुए केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप, विचलनशीलता के माप, सामान्य वितरण वक्र, सह-सम्बन्ध विश्लेषण, प्रायोगिक परिकल्पनाओं के परीक्षण, प्रसरण-विश्लेषण, काई-वर्ग परीक्षण जैसी महत्त्वपूर्ण सांख्यिकीय विधियों पर सारगर्भित चर्चा की गई है।

सजिल्द : रु० 280.00 (ISBN : 978-81-7124-632-8)
अजिल्द : रु० 180.00 (ISBN : 978-81-7124-633-5)
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

ज्योतिष शास्त्र एवं अन्तरिक्ष विज्ञान

[ज्योतिष]

डॉ० दिनेश कुमार अग्रवाल

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 148

किसी भी व्यक्ति के जन्म के समय, जो ग्रह और नक्षत्र आकाश में जिस स्थिति और स्थान पर विद्यमान होते हैं, उनके ही प्रभाव के आधार पर गणना करके, (जन्मकुण्डली) बनाई जाती है। इस जन्मकुण्डली के आधार पर, उस व्यक्ति के बारे में जीवन भर उसके साथ होने वाली अच्छी-बुरी घटनाओं की भविष्यवाणी की जाती हैं। परन्तु प्राय: देखा गया है कि जो भविष्यवाणियाँ जन्मपत्री के आधार पर की जाती हैं, उनमें से अधिकतर गलत निकलती हैं। जिसकी वज़ह से इस विद्या पर से विश्वास उठता जा रहा है और लोग ज्योतिष-शास्त्र से विमुख होते जा रहे हैं।

ज्योतिष-शास्त्र का अर्थ है—ज्योति (प्रकाश) से सम्बन्धित अर्थात् आकाश में चमकने वाले ग्रह, नक्षत्र, तारों आदि की जानकारी। ज्योतिषशास्त्र की व्युत्पत्ति ''ज्योतिषां सूर्यादि ग्रहाणां बोधकं शास्त्राम्'' की गई है, जिसका अर्थ है कि सूर्य आदि ग्रह और काल की जानकारी कराने वाले शास्त्र को 'ज्योतिष-शास्त्र' कहा जाता है। यह ज्योतिष-विद्या पूर्णतया अन्तरिक्ष एवं नक्षत्र विज्ञान (एस्ट्रोलॉजी) से सम्बन्धित है। हमारी भारतीय संस्कृति 'वेदों' पर आधारित है। भारतीय संस्कृति की आत्मा को समझने के लिए वेदों का अध्ययन करना आवश्यक है। परन्तु साथ में यह भी कहा गया है कि ज्योतिष-शास्त्र वेदों के नेत्र हैं। जो भी भारतीय संस्कृति में उपलब्ध हुआ है वह प्राचीन ऋषि-मुनियों की पराशक्तियों का ही परिणाम है।

प्रस्तुत पुस्तक में ज्योतिष एवं अन्तरिक्ष के अन्योन्याश्रित सम्बन्ध पर वैज्ञानिक दृष्टि से किन्तु मूलभूत सिद्धान्तों को पूरी तरह ध्यान में रखते हुए अत्यन्त ही कुशलता एवं रोचक तरीके से प्रकाश डाला गया है जो न केवल ज्योतिष पर विश्वास करने वालों के विश्वास को और दृढ़ करेगा बल्कि ज्योतिष पर विश्वास न करने वालों को भी ज्योतिष की ओर आकृष्ट करेगा। यह पुस्तक ज्योतिष के नव-अध्येताओं एवं ज्योतिष के जानकार दोनों के लिए समान रूप से अत्यन्त उपयोगी है।

अजिल्द : रु० 140.00 (ISBN : 978-81-7124-636-6)
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

कुछ पुस्तकें चखने मात्र की होती हैं, दूसरी निगल जाने योग्य और कुछ ही ऐसी होती हैं जिन्हें चबाया और पचाया जा सके। —**बेकन**

18वाँ विश्व पुस्तक मेला 2008

पुस्तकें प्राप्त

बदलते नज़र नज़ारा बदले : आचार्य शरदकुमार साधक, जय जगत सेवा संस्थान, बी० 38/13-30, नवोदित नगर एक्सटेंशन, वाराणसी-221010, मूल्य : रु० 150.00

गो आधारित समग्र विकास कार्य में संलग्न लेखक की यह अनुभूति प्रधान कृति है। स्वदेशी जागरण मंच के प्रेरक मनीषी के०एन० गोविन्दाचार्य का अभिमत है—''मैं इसे पाठ्य पुस्तक के नाते देखता हूँ। इस पुस्तक में कार्यकताओं के लिए गाँव, देश, दुनिया की ज़रूरी जानकारियों के साथ दिशा-निर्देश भी पाता हूँ कि वे सरकारमुक्त, बाजारमुक्त, विकेन्द्रित, स्वायत्त समाज के लिए नज़रिया क्या रखें, क्या-क्या काम करें, काम करते समय विश्व-दृष्टि, जीवन-दृष्टि, विधि-निषेध क्या हो—इसे भी जीवन्त एवं समग्र ढंग से उकेरा गया है।'' पुस्तक में मानवता की बातें तो हैं ही, परस्पर पोषण करने वाली समाज-रचना के लिए चुनौती और चेतावनी भी है।

रंग-बेरंग (आत्मकथा) : डॉ० सुधेश, गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, राष्ट्रभाषा हिन्दी भवन, एलिसब्रिज, अहमदाबाद-380006, मूल्य : रु० 200.00

साहित्य की जितनी विधाएँ हैं उनमें आत्मकथा सर्वाधिक बोधवर्द्धक विधा है। आत्मकथाएँ समय की सिकता पर अंकित महापुरुषों के पदचिह्न हैं, जिनका अनुसरण करके कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को उच्चतम बना सकता है।

'रंग-बेरंग' एक ऐसे प्रोफेसर की आत्मकथा है, जिसने एक साधारण परिवार में, साधारण से गाँव में जन्म लेकर बढ़ते-बढ़ते यूनिवर्सिटी प्रोफेसर के उच्चतम पद पर पहुँचकर अपने बूते पर देश-विदेश की यात्राएँ कीं और वहाँ के विश्वविद्यालयों में व्याख्यान देकर वहाँ पर, हिन्दी भाषा-साहित्य और भारतीय संस्कृति की कीर्तिपताका फहराई और जिसने साहित्य के क्षेत्र में कवि और समीक्षक के रूप में भी कीर्तिमान स्थापित किए।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 9 फरवरी-मार्च 2008 अंक : 2-3

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003

RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax: (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)